कृषि विवि कैंपस नववर्ष के आगमन को लेकर सजकर तैयार

प्रतिनिधि, पूसा

नववर्ष 2025 के आगमन को लेकर डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय कैंपस सजधज कर पर्यटक स्थल के रूप में तैयार है. कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय स्वयं अधिकारियों को विवि परिसर के सभी पिकनिक स्थल पर मुस्तैदी के साथ ड्यूटी पर मौजूद रहने का निर्देश दिया है. बोटेनिकल गार्डन, तितली पार्क, जैविक उद्यान, संविधान पार्क, हाइटेक हॉर्टिकल्चर, शुगर केन स्थित संग्रहालय सहित गोराई घाट पर बने रिवर फ्रंट जश्नकारियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहेगा. भीड़भाड़ वाली जगहों पर स्थानीय थाना के सहयोग से अतिरिक्त पुलिस बल की समुचित व्यवस्था करा दी गयी है. विवि

नये साल का जश्न मनाने के लिए तैयार पिकनिक स्पॉट.

प्रशासन से मिली जानकारी के अनुसार मौसम अनुकूल होने के कारण इस बार विवि परिसर में विगत वर्षों के भांति ज्यादा भीड़ होने की संभावना व्यक्त की जा रही है. संपदा पदाधिकारी डा सीके झा ने बताया कि पिकनिक के दौरान असामाजिक तत्वों पर सीसीटीवी कैमरा के सहारे निगरानी बढ़ा दी गयी है. थानाध्यक्ष राहुल कुमार ने बताया कि पुलिस पदाधिकारी नववर्ष के आगमन पर परिसर में आये हुए जश्नकारियों पर विशेष निगरानी रखेंगे.

प्रभात खबर
Wednesday, January 1, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67743e8f3e5809d48e02f812

पछुआ हवा के कारण ठंड बढ़ने की प्रबल संभावना

समस्तीपुर. उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ दिखेगा. मौसम का मिजाज भी शुष्क रहेगा. इसके सबके बीच ठंड में थोड़ी वृद्धि दर्ज की जा सकती है. ऐसा पछुआ हवा चलने की वजह से होगा. वह भी खासकर तराई वाले इलाकों में. यह आकलन है मौसम विभाग का. डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित मौसम विभाग से जारी अगले तीन दिनों के लिए पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में 6 से 8 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से आमतौर पर पुरवा हवा चलने की संभावना है. इस दौरान अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच बना रह सकता है. मौसम विभाग के अनुसार, उत्तर-पश्चिम बिहार के पूर्वी एवं पश्चिमी चंपारण के अलावा उत्तर बिहार के कुछ जिलों में ठंड में इजाफा हो सकता है.

प्रभात खबर
Wednesday, January 1, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/...774

भास्कर 1/1/25 पेज 13

नए साल का स्वागत • सरस्वती गार्डेन व जैव विविधता पार्क को भी अच्छे से सजाया-संवारा गया

पिकनिक के लिए विवि के कई पार्क व रिवर फ्रंट सजधज कर तैयार, खरीदारी के लिए लगेंगे स्टॉल

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा द्वारा नव वर्ष पर घूमने और पिकनिक मनाने वाले लोगों के लिए विवि के मुख्य परिसर स्थित सरस्वती गार्डेन, बूढ़ी गंडक नदी के गोराई घाट स्थित रिवर फ्रंट, जैव विविधता पार्क, बायोडायवर्सिटी पार्क आदि जगहों को खूब अच्छे से सजाया-संवारा गया है। विवि प्रशासन द्वारा तमाम गार्डेन और पार्क को मनोरम बनाने के लिए पेड़-पौधों में रंग रोगन का कार्य कराने के साथ-साथ विभिन्न गार्डेन में तमाम तरह के खूबसूरत फूलों के पौधे भी लगाएं गए हैं। इधर रिवर फ्रंट का रुख करें तो यहां पर नदी में सैर करने के लिए निजी बोट की व्यवस्था की गई है। यहां पहुंचने वाले लोग रिवर फ्रंट के किनारे संचालित ओपन रेस्टोरेंट में बैठकर लजीज व्यंजनों का आनंद भी ले सकते हैं। बता दें कि राजेंद्र कृषि विवि से केंद्रीय कृषि विवि पूसा में परिणत होने के बाद से विवि का परिसर खासकर समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, दरभंगा आदि जिलों के लोगों के लिए एक बेहतरीन पिकनिक स्पॉट बनकर उभरा है। गत के कई वर्षों पर गौर करें तो नए साल के आगमन पर यहां जश्न मनाने के लिए करीब 50 हजार से ज्यादा लोगों की भीड़ हरेक साल जुटती है। विवि कर्मियों की मानें तो लोगों की ये भीड़ पुसा विवि को केंद्रीय विवि का दर्जा मिलने के बाद से ही बढ़ी है।

सुरक्षा के विशेष प्रबंध : विवि का परिसर में कई जिलों से आते हैं लोग

विवि परिसर में अवस्थित सरस्वती गार्डेन।

विवि में भीड़ नियंत्रण के लिए पुलिस की तैनाती

केंद्रीय विवि बनने के बाद से विवि परिसर में साज सज्जा के क्षेत्र में भी काफी सारे बदलाव हुए हैं तथा इन्ही कारणों से यह परिसर पर्यटकों के लिए एक उत्कृष्ट आकर्षण का केंद्र बन गया है। नए साल पर जुटने वाली लोगों की भारी भीड़ को देखते हुए विवि प्रशासन ने विवि परिसर में तमाम तरह की तैयारियां की है। विवि प्रशासन ने परिसर की साफ-सफाई कराने के साथ-साथ सड़कों पर जगह जगह टेम्परारी स्पीड ब्रेकर, पीने के लिए पानी, चलंत शौचालय, गाड़ियों के लिए पार्किंग, सैकडों डस्टबिन, बेहतरीन लाइटिंग आदि की व्यवस्था की है। विवि के सूचना पदाधिकारी डॉ. कुमार राजवर्धन ने बताया कि 1 जनवरी को जुटने वाली लोगों की भारी भीड़ को ध्यान में रखकर विवि के सुरक्षा प्रशाखा और पूसा पुलिस भी सुरक्षा में रहेगी।

शांति व सौहार्द वातावरण में मनाएं नए साल का जश्न

पूसा थानाध्यक्ष राहुल कुमार ने बताया कि लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर 1 जनवरी के दिन सड़कों पर जगह-जगह पुलिस की तैनाती की जाएगी। पुलिस के अधिकारी खासकर ट्रिपल लोड और लहरियाकट बाइकर्स पर ध्यान रखेंगे। उन्होंने बताया कि नए साल का जश्न खासकर युवाओं को शांति और सौहार्द पूर्वक मनाना चाहिए। खुशी के जश्न के आर में युवा पीढ़ी न तो किसी तरह का हुड़दंग करें और न ही किसी तरह का अफवाह फैलाएं। ऐसा करने वालों पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। नए साल के पहले दिन विवि परिसर में कई जगहों पर स्टॉल लगाकर विवि द्वारा बनाएं गए विभिन्न तरह के उत्पादों की जानकारी विशेषज्ञ लोगों को देंगे। इतना ही नही लोग स्टॉल से उत्पादों की खरीदारी भी कर सकते हैं। स्टॉल पर मौजूद कृषि विशेषज्ञ सभी आगंतुकों के समक्ष अपने उत्पादों का प्रदर्शन कर उसकी खासियत बताई जाएगी।

भास्कर 1/1/25 पेज 13

न्यूनतम तापमान आठ से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान

उत्तर बिहार के जिलों में 1 से 5 जनवरी तक साफ रहेगा मौसम

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 1 से 5 जनवरी तक आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग के वैज्ञानिक के अनुसार उत्तर पश्चिम बिहार जैसे-पूर्वी एवं पश्चिमी चम्पारण एवं तराई के कुछ जिलों में न्यूनतम तापमान 6-8 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में ठंड बढ़ने की सम्भावना है। सुबह में मध्यम कुहासा छा सकता है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 6-8 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यत पछिया हवा चलने की संभावना है। इस बीच सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है। नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो 50 से 60 दिनों की अवस्था में है। उसमे 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ायें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। इससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधे को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुंचाती है।। उपचार हेतु फसल में फोरेट 10 जी० या कार्बोफ्यूरान 3 जी का 7-8 दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने पांच जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ व मौसम शुष्क रहेगा। पछुआ हवा चलने से ठंड बढ़ेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 20 से 22 व न्यूनतम आठ से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

Dainik Jagran 01-01-2024

मंदिर और धार्मिक स्थलों से होगी दिन की शुरुआत, पार्कों में पिकनिक की भी तैयारी

नये साल के स्वागत के लिए लोग तैयार, होटलों में विशेष व्यवस्था

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में सज-धजकर तैयार बायोवर्सिटी पार्क। यहां बड़ी संख्या में लोग जुटेंगे। • हिन्दुस्तान

समस्तीपुर, नगर संवाददाता। गुजरे साल को अलविदा कर युवा नववर्ष का झूमकर स्वागत करेंगे। इसको लेकर होटल, पिकनिक स्पॉट, पर्यटन स्थल आदि को सजाया गया है। युवाओं ने पिकनिक मनाने की तैयारी पूरी कर ली है। मंगलवार देर रात से ही नववर्ष की तैयारी हो चुकी थी। होटलों व रेस्टोरेंटों में विशेष तैयारी की गई। यहां गीत-संगीत व नृत्य के कार्यक्रम का आयोजन होना है।

ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए गुब्बारों, रंग-बिरंगे झालरों, एलईटी लाइटों व गुलदस्तों से सतरंगी सजावट की गई है। एक से बढ़ कर एक लजीज व्यंजन परोसने की तैयारी है। पार्टी करने के लिए हॉल व कमरे बुक किए गए है। जहां नए साल का जश्न मनाएंगे। मंगलवार को बाजार में युवाओं की भीड़ अन्य दिनों की अपेक्षा ज्यादा दिखी। प्लान के मुताबिक वह आवश्यक सामग्री की खरीदारी करते दिखे। उनके द्वारा केक के भी ऑर्डर दिए जा रहे थे। बाजार में मटन, चिकेन, मछली, खोवा, पनीर, मशरूम की एडवांस बुकिंग कर रखी गई है। कारोबारियों ने उक्त चीजों को स्टोर कर लिया है। किसी को नान-वेज व्यंजन का स्वाद लेना है, तो किसी को शाकाहारी का स्वाद चखना है। नए साल के उमंग पर युवा वर्ग ने डीजे पर डांस करने की तैयारी की है।

दूध व पनीर का आर्डर दे रखा गया है। चिकेन, मटन, अंडा व मछली की खरीदारी खूब होगी। मालपुआ, खीर, मिष्ठान भोजन तैयार करने की भी तैयारी है। कुछ युवाओं ने भीड़ से बचने के लिए अपने घर पर ही परिवार के साथ नव वर्ष की खुशी बांटने का निर्णय लिया है। देर शाम तक सर्वाधिक भीड़ केक की दुकानों पर देखने को मिली।

केक की बढ़ी डिमांड: शहर की विभिन्न दुकानों में 200 रुपए से लेकर 1500 रुपए तक के केक बनाकर बेचने के लिए रखे गए हैं। कोई गुलाब तो कोई जूही का और कोई दुकानदार दोनों फूलों को मिक्स कर बुके तैयार किए हैं। नए साल पर गुलाब, लिली, ट्यूलिप आदि फूलों की डिमांड ज्यादा रहती है। बुके 150 से 200 रुपये में मौजूद हैं।

इस बार गुलाब के फूल की डिमांड ज्यादा है। न्यू ईयर को सेलिब्रेट करने और बच्चों को धमाचौकड़ी करने के खास इंतजाम कर रखा गया है। जिला प्रशासन की ओर से सभी चौक चौराहा पर निगरानी के लिए पुलिसकर्मियों को लगाया गया है।

02 रुपये तक मिल रहा बाजार में गुलदस्ता

- नये साल मटन-चिकेन का बड़ा स्टॉक
- दूध-दही की डिमांड को लेकर बड़ी तैयारी

सुबह 4 बजे थानेश्वर मंदिर का पट खोलने की तैयारी

समस्तीपुर। बाबा थानेश्वरनाथ मंदिर में चौथे पहर की पूजा के बाद मंदिर का पट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया जाएगा। मंदिर के पुजारी संजय पंडा ने बताया कि सुबह 4 बजे से भक्त बाबा पर जलाभिषेक कर सकते हैं। भीड़ को देखते हुए सारी व्यवस्था पूरी कर ली गई है। परिसर में लगे सभी सीसीटीवी कैमरे से व्यवस्था की निगरानी की जाएगी। परिसर में सत्यनारायण भगवान की पूजा भी नए साल पर लोग करते है इसकी भी व्यवस्था की गई है। ताकि श्रद्धालुओं को कोई परेशानी ना हो।

पिकनिक के लिए पूसा विवि हुआ तैयार

पूसा। नये वर्ष के आगमन का उत्साह चरम पर है। पिकनिक मनाने को लेकर लोगों ने तैयारियां पूरी कर ली है। दूसरी ओर आंगतुकों को लेकर डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि प्रशासन ने भी तैयारी पूरी कर ली है। विवि का जैव विविधता पार्क, रीवर फंट समेत विवि परिसर में आंगतुको के आगमन को लेकर प्रशासनिक तैयारियां पूरी कर ली गई है। इस कड़ी में हजारों की भीड़ के आगमन को देखते हुए विवि प्रशासन जगह-जगह बैरिकेडिंग करेगा। जिससे आवासीय परिसर एवं मुख्यालय में आने-जाने वाले लोगो को समस्या नहीं हो सके। एक जनवरी को किसी भी प्रकार के वाहन बैरिकेडिंग के अंदर प्रवेश वर्जित रहेगा।

Dainik Jagran 01-01-2024

आय सृजन का साधन बना मशरूम उत्पादन व्यवसाय : डॉ अनिल

किंग ओएस्टर, हीरेशियम एवं सिटाके मशरूम का स्पॉन उपलब्ध

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक।

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के प्रांगण में उत्पादन एवं प्रसंस्करण विषय पर प्रशिक्षकों का 15 दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हो गया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण देश में मशरूम व्यवसाय आय सृजन का साधन बन गया है। खासकर बिहार राज्य के सभी जिलों के ग्रामीण क्षेत्र में बसर करने वाली महिला किसान के लिए मशरूम उत्पादन व्यवसाय वरदान साबित हो रहा है। यह स्वरोजगार का बेहतर विकल्प होने के साथ साथ कुपोषण मिटाने में भी सहयोगी हो रहा है। कुशल जीवन यापन के लिए धन के साथ उत्तम स्वास्थ्य की भी जरूरत होती है। उड़ीसा के प्रशिक्षकों के साथ विवि का संबंध स्थापित हो चुका है। इसे गति देने की आवश्यकता है। जिससे बिहार के तरह ही मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में उड़ीसा भी देश स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर सके। मशरूम का विभिन्न व्यंजनों को जन जन की थाली तक पहुंचाना मास्टर ट्रेनर की ही जिम्मेवारी है। स्वागत भाषण करते हुए मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम ने कहा कि मशरूम उत्पादन की दौर में अब औषधीय मशरूम का बोलबाला हो चुका है। इसी करी में सर्दी के मौसम में भी उत्पादक किंग ओएस्टर, सिटाके, हीरेशियम एवं इनोकी मशरूम का उत्पादन बृहत पैमाने पर संभव है। इसके लिए विवि स्तर पर स्पॉन मिलना शुरू हो गया है। वास्तव में यह प्रभेद एंटीऑक्सीडेंट है। स्वाद की बात करें तो बिल्कुल ही बटन मशरूम के तरह है। डा ज्योत्सना ने कहा कि उड़ीसा के प्रशिक्षकों ने उत्पादन के साथ ही उत्पाद बनाने की दिशा में बेहतर ज्ञानवर्धन किया है। महाराष्ट्र स्थित गोंदिया निवासी स्नातकोत्तर कृषि प्लांट फिजियोलॉजी की छात्रा चौधरी विशाखा रामकृष्ण ने कहा कि शिक्षण के साथ प्रशिक्षण का अनुभव बहुत बढ़िया रहा है।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम गृहणियों के लिए बहुत मददगार है। प्रतिभागी आय अर्जित कर सकती है, जो उनके परिवार को चलाने में बहुत मददगार होगा। इस प्रशिक्षण में अचार, समोसा, लड्डू, बड़ी, पापर, भुजिया आदि बनाना सिखा है। एसएलएस उड़ीसा ट्रस्ट के सहायक परियोजना अधिकारी सह टीम लीडर यदुनाथ हंसदा ने भी प्रशिक्षुओं का हौसला बढ़ाया। साथ ही विवि को उड़ीसा में बेहतर उत्पादन करने का भरोसा दिया। महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू की उड़ीसा स्थित अपनी गांव पहाड़पुर से आए प्रशिक्षकों ने केंद्रीय कृषि विश्वद्यालय पूसा बिहार से मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में मास्टर ट्रेनर बन परचम लहराने का संकल्प लिया। प्रशिक्षकों को निदेशक अनुसंधान डा सिंह ने प्रमाण पत्र सहित अन्य उपकरण देकर सम्मानित किया। संचालन मशरूम विभाग के प्रभारी डॉ आरपी प्रसाद ने की। वहीं धन्यवाद ज्ञापन डा आरपीके राय ने की। मौके पर सुकांति हंसदा, पानो मरांडी, सुभाष, मुकेश, मुन्नी, निशा आदि मौजूद थे।

Rashtriya sahara 01-01-2024

भाकपा-माले प्रखंड सचिव द्वारा प्रेस विज्ञप्ति जारी करने के बाद राजकीय शोक के 5वें दिन डॉ. राजेन्द्र केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में झुकाया गया राष्ट्रीय ध्वज

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। देश की सभी सरकारी एजेंसियों पर भाजपा और आरएसएस का रंग चढ चुका है। फिर शिक्षण संस्थान इससे कैसे बचा रहे। इसका उदाहरण दिखा जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में जहां देश के पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा 7दिवसीय शोक घोषित किए जाने के बावजूद विश्वविद्यालय परिसर में लहराता तिरंगा 5 दिनों तक स्तंभ के शीर्ष पर फहराता रहो। भाकपा-माले के पूसा प्रखंड सचिव अमित कुमार के द्वारा सोमवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी करने के बाद राजकीय शोक के 5वें दिन शाम ढले डॉ. राजेन्द्र केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पूर्व प्रधानमंत्री और प्रख्यात अर्थशास्त्री

विवि परिसर में दिन में लहराता झंडा/रात में झुका झंडा।

मनमोहन सिंह जी के सम्मान में राष्ट्रीय ध्वज को आधा झुका दिया गया। प्रेस विज्ञप्ति जारी करने के पूर्व तिरंगा आम दिनों की तरह ऊंचा फहरा रहा था। मंगलवार को उक्त जानकारी देते हुए माले के प्रखंड सचिव अमित कुमार ने बताया कि उन्हें पहले से पता था कि विश्वविद्यालय प्रशासन उक्त मामले को सामने लाने के बाद कुछ न कुछ चालाकियां अवश्य करेगा। प्रेस विज्ञप्ति जारी करने के बाद देर शाम को झंडा को झुका देने के बाद वाला फोटो जारी कर मामले को झुठलाने की कोशिश की गई। माले नेता ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सूचना पदाधिकारी डॉ. कुमार राज्यवर्धन द्वारा देर शाम झुके हुए झंडे की तस्वीर जारी कर कहा गया कि कतिपय लोगों द्वारा यह अफवाह फैलाई गई है कि विश्वविद्यालय का झंडा शोक की अवधि में नहीं झुकाया गया है। लेकिन यह बिल्कुल सच नहीं है। विश्वविद्यालय का झंडा आधा झुका हुआ है और झंडा नियमावली का पूरा पालन किया जा रहा है। माले के प्रखंड सचिव ने कहा कि हमारे पास पर्याप्त सबूत मौजूद है।

Rashtriya Sahara 01-01-2024

जारी रहेगा ठंड का दौर गिरेगा तापमान

समस्तीपुर। मध्यम कुहासे में लिपटी ठिठुराती सुबह के साथ नये साल की शुरूआत के बाद बाकी दिनों में भी ठंड का प्रकोप जारी रहेगा। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से मौसम परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 05 जनवरी 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। उत्तर पश्चिम बिहार जैसे-पूर्वी एवं पश्चिमी चम्पारण एवं तराई के कुछ जिलों में न्यूनतम तापमान 6-8 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में ठण्ड बढ़ने की सम्भावना है। सुबह में मध्यम कुहासा छा सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 6-8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara
01-01-2024

गुलदाउदी की खेती से हो सकती है अच्छी आय : डॉ रौशनी

प्रतिनिधि, पूसा

गुलदाउदी की खेती को बढ़ावा देने के लिए डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक विभिन्न फार्म व किसानों के खेत तक दस्तक दे रहे हैं. इसकी खेती महत्वपूर्ण व्यवसायिक अवसर है. देश के विभिन्न हिस्सों में बहुत मांग है. इसकी खेती से किसानों को अच्छी आय हो सकती है. यह सजावटी फूल अपने सुंदरता और औषधीय गुणों के लिए उगाया जाता है. डा रौशनी का कहना है कि कुशल खेती प्रौद्योगिकी को अपनाना आवश्यक है. गुलदाउदी ठंडे मौसम की फसल है. अच्छी जल निकासी व उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है. उन्होंने बताया कि कटिंग से प्रवर्धन सबसे आम विधि है जो समान पौधे पैदा करता है.

विभाजन स्थापित पौधों के लिए उपयुक्त है. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में गुलदाऊदी के 151 प्रभेद हैं. इसमें गमले में लगने वाले प्रभेद विधान विश्नप्रिया, विधान मानसी, उच्फ 126 हैं. पौधों को प्रत्यारोपित करने के एक महीने बाद ऊपर की शाखा को छंट दें ताकि शाकीय विकास अच्छे से हो सके. गुलदाउदी की कटाई के बाद की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण चरण है. जिसमें फूलों की गुणवत्ता और ताजगी को बनाये रखने के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है. डा रौशनी ने बताया कि कटाई आमतौर पर फूलों के पूरी तरह से खिलने, चरम रंग और आकार पर होता है.

विश्वविद्यालय परिसर में लगे फूल.

प्रभात खबर
Thursday, January 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677596f4f2c4834f32f470cd

स्वागत. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थित परिसर में नववर्ष पर लोगों में दिखा उत्साह व उमंग

नववर्ष के आगमन पर लिया नशामुक्ति का संकल्प

पिकनिक स्पॉट पर खाना तैयार करते लोग .

पिकनिक स्पॉट पर खाना तैयार करते लोग .

पिकनिक मनाने पहुंचे लोग .

हरपुर बोचहा के प्रेम विहार मनरेगा पार्क में जश्न मनाते लोग .

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थित परिसर में नववर्ष पर युवा-युवतियां, छोटे बच्चे-बच्चियां, महिलाएं, नव दंपतियों से पूरा ग्राउंड भरा रहा. पुराने बोटेनिकल गार्डन में लोगों का हुजूम देखने को मिला. जहां पर लोगों ने सरस्वती प्लाजा, संविधान पार्क, पुस्तकालय, जलमीनार आदि जगहों पर सेल्फी लेकर नव वर्ष 2025 की पहली तारीख को यादगार बनाने में जुटे थे. रिवरफ्रंट तो निश्चित रूप इस बार नववर्ष आगमन की तैयारी में चार चांद लगाने की ओर अग्रसर था. लेकिन लोगों का हुजूम विवि परिसर में ही दर्जनों पिकनिक स्थलों में उलझकर शाम तक डीजे पर थिरकते रह गये. खासकर नववर्ष का आगमन में मौसम का मिजाज बदला बदला सा देर शाम तक रहा. वहीं, देर संध्या तक सूरज की लुकाछिपी के बीच संपूर्ण परिसर में मटन मछली की धमक इस बार के जश्न के दौरान देखने को कमोबेश मिला.

बढ़ते हुए ठंड के कारण लोगों ने दुबके-दुबके मफलर, स्वेटर, चादर लपेटे भीड़ बढ़ने की आस के साथ घर की तरफ मुखातिब हो गये. हरपुर निवासी दीपक कुमार ने बताया कि मौसम विपरीत होने के कारण नये साल के पहले दिन भीड़ कम दिखी. वहीं, पूसा उत्तरी भाजपा मंडल अध्यक्ष रंजीत शर्मा ने कहा कि पूसा शिक्षा एवं अनुसंधान की धरती है. यह ऐतिहासिक स्थल है. यहां बहुत दूर-दूर से सैलानी घूमने आते हैं. भाजपा नेत्री मधुमाला ने कहा कि नया शाल से जीवन में बदलाव लाने की जरूरत है. अपने को साध कर नये सिरे से जीवन शुरू करने की जरूरत है.

पटोरी जोरपुरा निवासी बिमलेश कुमार चौधरी ने बताया कि पूसा का पिकनिक स्थल अंग्रेजी हुकूमत काल से ही रहा है. पहले खाने-पीने पर अत्यधिक जोर रहता था. वहीं, आज के डिजिटल युग में सेल्फी में सिमट गया है. मुजफ्फरपुर के रेपुरा निवासी शशिरंजन कुमार ने बताया कि नववर्ष पर बच्चों को पूसा कृषि जगत का धरोहर है. सिंघियाघाट और मुजफ्फरपुर से आये हुए जश्नकारियों ने मटन का स्वाद चखने में मशगूल रहे. लोगों में रूबी खातून, मो. अफसर, गुलशन आरा, कौसर, मुस्कान, चांदनी, इंतखाब, रोहन, ओवेश, लिजा, शमी, मो. मिराज, मो. अंजार, मो. नौशाद, मो. फिरोज, मो. शबीर, मो. दानिश आदि डीजे के धुन पर थिरकने से भी पीछे नहीं रहे.

नया साल के प्रथम दिन विद्यापतिधाम उगना महादेव पर जलाभषेक को उमड़े श्रद्धालु

उगना महादेव को जलाभिषेक के बाद प्रेम विहार में मना जश्न

विद्यापतिनगर. नये साल के आगमन के साथ प्रखंड क्षेत्र आस्था के सैलाब में डूब गया. बुधवार की अहले सुबह से ही विभिन्न देवालय में श्रद्धालुओं की भीड़ देखी गयी. इस दौरान विद्यापतिधाम उगना मंदिर श्रद्धालुओं के आस्था का केंद्र रहा. हजारों श्रद्धालुओं ने गंगाजल से भोलेनाथ का जलाभषेक कर नये वर्ष में सुख शांति व संवृद्धि की कामना की. वहीं, पिकनिक स्पॉट के रूप में चर्चित हरपुर बोचहा का प्रेम विहार मनरेगा पार्क नया साल के जश्न से सराबोर रहा. कंपकंपाती ठंड की परवाह किये बगैर युवाओं की कौन कहे बच्चे व बुजुर्ग भी इस पार्क में अपने आप को जाने से रोक नहीं पाये. ज्यों ज्यों दिन चढ़ता गयी लोगों की धड़कने जवां होती गयी. बच्चे जहां जुले का आनंद ले रहे थे. वहीं, युवा संगीत की सुर लहरियों में थिरकते हुए नये साल के जश्न मनाने में मशरूफ थे. इस आकर्षण से बुजुर्ग भी अपने को नही रोक पाये. जगह जगह बने सेल्फी पॉइन्ट पर युवक एवं युवतियां रील्स बनाने में तल्लीन दिखे. और तो और दुकानदारों द्वारा परोसे गये विभिन्न प्रकार के अल्पाहार के आकर्षण से भिड़ बच नहीं सकी. इससे न सिर्फ छोटे दुकानदारों को आर्थिक उपार्जन हुआ बल्कि वे सभी नये साल के जश्न के साक्षी बने. पार्क की मनोरम छटा व राण रोगन बरबस पर्यटकों को अपनी ओर खींचती रही. फलस्वरूप इस पार्क में लोगों की भीड़ बनी रही. ढलते सूरज के साथ ही जश्न की भीड़ छंटती चली गयी. एक दूसरे को हैप्पी न्यू ईयर कह कर लोगों ने नाव वर्ष के आगमन की खुशी का इजहार किया.

नववर्ष • जिले में विभिन्न जगहों पर नववर्ष को लेकर की गई थी तैयारी, पिकनिक मनाने वालों में दिखा उत्साह

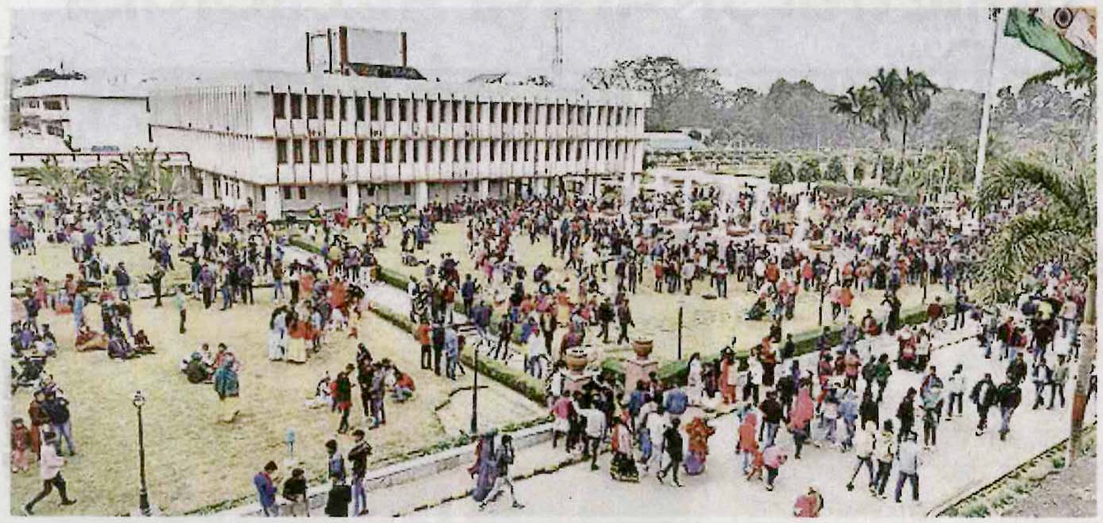

विवि के सरस्वती गार्डन में जुटी लोगों की भीड़।

नववर्ष को लेकर शहर के पार्क में खेलते बच्चे।

पार्कों में मना पिकनिक, डीजे की धुन पर झूमे युवा

भास्कर न्यूज | पूसा

नववर्ष के आगमन पर जहां पूरे क्षेत्र में हर्ष और उल्लास का माहौल देखने को मिला। वहीं इस दौरान लोगों ने खूब मस्ती भी की। पूसा विवि में नए साल पर पिकनिक मनाने पहुंचे खासकर युवाओं का जोश व उत्साह तो देखते ही बन रहा था। दिन चढ़ने के साथ ही कृषि विवि पूसा के जैव विविधता पार्क, सरस्वती गार्डेन, रिवर फ्रंट, बायोडायवर्सिटी पार्क आदि स्थलों पर लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। दोपहर बाद तो पूसा-समस्तीपुर व पूसा-ताजपुर के अलावे पूसा मुजफ्फरपुर पथ पर लोगों की आवाजाही इतनी बढ़ गई की लोगों को अपने-अपने वाहनों को काफी पीछे के ही चौक चौराहों पर छोड़कर विवि परिसर व विभिन्न पिकनिक प्लेसो तक पैदल ही पहुंचना पड़ा। दिन के दो बजे के बाद विवि परिसर और नदी किनारे बनाएं गए रिवर फ्रंट पर खासकर पिकनिक मनाने वाले लोगों की भारी भीड़ उमड़ती देखी गई। ऐसा लगता था मानों सभी सड़कों का रूख गार्डेन की ओर ही हो गया था। काफी संख्या में लोग अपने-अपने परिवार व दोस्तों के साथ सभी पिकनिक स्पॉट पर पहुंचे तथा अपने-अपने अंदाज में नववर्ष को जश्न के रूप में मनाया। जैव विविधता पार्क में एक तरफ कुछ लोग बैठकर घर से लाएं गए व्यंजनों को खाकर उसका आनंद ले रहे थे। वहीं दूसरी तरफ बायोडायवर्सिटी पार्क स्थित सड़क किनारे कुछ युवाओं की टोली आर्केस्ट्रा के ट्राली पर बज रहे मदमस्त संगीत पर थिरक रहे थे। इधर कृषि विवि पूसा ने भी नववर्ष पर पिकनिक मनाने पूसा पहुंचने वाले लोगों को आकर्षित करने के लिए विवि परिसर को पूरी तरह से सजाया-संवारा था। इसके अलावे शरारती तत्वों पर नकेल कसने के लिए विवि प्रशासन के कई अधिकारियों के अलावे पूसा थानाध्यक्ष राहुल कुमार, एएसआई कुमार सुंधाशु, श्रेया कुमारी आदि पुलिस पदाधिकारी दल-बल के साथ विवि परिसर में अलग-अलग जगहों पर भ्रमण करते दिखे। पुलिस ने सड़कों पर लहरिया कट बाइक चलाने वाले कई युवकों पर भी शिकंजा कसा। हालांकि बाद में सभी को छोड़ दिया गया। स्थानीय लोगों की मानें तो केंद्रीय कृषि विवि बनने के बाद से पूसा में नववर्ष का जश्न मनाने वाले लोगों की भीड़ साल दर साल बढ़ती ही जा रही है। शाम तक पूसा विवि के अलावे पूसा बाजार, हरपुर चौक, पोस्टऑफिस चौक, हॉस्पिटल चौक, गढ़िया व बिरौली चौक आदि जगहों से जुड़े सड़कों पर जाम की स्थिति बनी हुई थी।

भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चना के लिए मंदिरों में जुटी श्रद्धालुओं की भीड़

विद्यापतिधाम : उगना महादेव मंदिर में सुबह से देर शाम तक लगा रहा भक्तों का तांता

भास्कर न्यूज | विद्यापतिनगर

प्रखंड मुख्यालय स्थित विद्यापतिधाम उगना-महादेव मंदिर में सर्द हवाओं के बीच पूरे उत्साह के साथ नए साल का जश्न भोलेनाथ पर जलाभिषेक के साथ शुरू हुआ। कड़ाके की ठंड के बावजूद श्रद्धालुओं का उत्साह चरम पर था। अहले सुबह से ही श्रद्धालुओं का जत्था मंदिर पहुंचने लगा था, यह सिलसिला दोपहर बाद तक जारी रहा। वहीं दूसरी ओर नए साल के जश्न को लेकर लोग एक-दूसरे से मिलकर व फेसबुक व व्हाटसएप के जरिए नए साल की शुभकामना देने का दौर दिनभर चलता रहा। खास बात यह रही कि प्रखण्ड वासियों ने नए साल की शुरूआत धार्मिक स्थलों एवं मंदिरों में भगवान के दर्शन व पूजा-पाठ के साथ शुरू की। लोग अपने परिवार के साथ विद्यापतिधाम आकर भगवान के दर्शन कर नववर्ष का इस्तकबाल किया। मंदिर में नव वर्ष के पहले दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु भोलेनाथ के दर्शन और आशीर्वाद लेने पहुंचे थे। सुबह 4 बजे से ही श्रद्धालुओं की लंबी लाइन लगी रही, ज्यादा भीड़ की वजह से श्रद्धालुओं को कुछ समय रोककर प्रवेश दिया गया। वहीं मंदिर परिसर में भी दिन भर मेला लगा रहा। मंदिर की पार्किंग और सड़कें वाहनों से पटी रही। इससे स्टेशन रोड में वाहन रेंगते नजर आए। वहीं स्थानीय लोगों का दोपहिया वाहनों से भी कहीं आना-जाना दूभर हो रहा था। हालांकि मंदिर के प्रवेश द्वार पर वाहनों को कुछ देर रोक-रोककर मंदिर में प्रवेश दिया गया। बावजूद इसके दिनभर विद्यापतिनगर की ब्लॉक रोड से स्टेशन रोड तक कई जगह लोग जाम में फंसे नजर आए।

मंदिर परिसर में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़।

भास्कर 2/1/25 पेज 14

मौसम • अधिकतम तापमान 15.2 डिग्री व न्यूनतम तापमान 9.5 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया

पहाड़ों पर बर्फबारी और पछिया हवा ने बढ़ाई कनकनी, अगले दो दिनों में और गिरेगा पारा

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

दिन में 19.8 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चली

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के अधीनस्थ जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र (मौसम विभाग पूसा) द्वारा जारी किए मौसम पूर्वानुमान के अनुसार बुधवार यानी 1 जनवरी 2025 का अधिकतम तापमान 15.2 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 9.5 डिग्री सेल्सियस रेकार्ड किया गया। दिन भर 19.8 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चली। मौसम विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार ने बताया कि मौसम की वर्तमान स्थिति फिलहाल अगले एक दो दिनों तक युही बरकरार रहेगी। कनकनी के और बढ़ने की संभावना हैं। उन्होंने बताया की पहाड़ों में हो रही बर्फबारी तथा पछिया हवाओं के चलने के कारण लोगों को कनकनी का ज्यादा एहसास होगा। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि कल या परसों के बाद से एक बार फिर से धूप निकलने के आसार हैं।उन्होंने बताया की लो लेवल क्लाउड के कारण मौसम में यह परिवर्तन हुआ है। फसलों पर इस मौसम का क्या प्रभाव पड़ेगा यह पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि फिलहाल यह मौसम सभी फसलों के लिए अच्छा ही है। इस तरह के मौसम की स्थिति अगर ज्यादा दिनों तक ऐसी ही बनी रहती है तो आलू में झुलसा रोग लगने की संभावना बढ़ेगी। उन्होंने बताया कि खासकर उत्तर पश्चिम बिहार के जिलों में अभी कुछ दिनों तक सुबह में घना कुहासा छाया रहेगा। विलंब से बोयी गयी गेहूं की फसल जो 21 से 25 दिनों की हो गयी हो 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूं की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूं की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टेयर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टेयर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।

खेतों में लगी प्याज की फसल।

50 - 60 दिनों की मक्के की फसल में उर्वरक डालकर मिट्टी चढ़ाएं, इसके बाद सिंचाई करें

नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो 50 से 60 दिनों की अवस्था में है। उसमे 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ायें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। इससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधे को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुंचाती है। उपचार के लिए फसल में फोरेट 10 जी. या कार्बोफ्यूरान 3 जी. का 7-8 दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथिन 250-300 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। वर्तमान मौसम में गाजर, मटर, टमाटर, धनियां, लहसून एवं अन्य रबी फसलों में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वातावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर 2.5 ग्राम डाई इथेन एम० 45 फफूंदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर 2-3 छिड़काव 10 दिनों के अन्तराल पर करें।

कृषि विवि के पार्क में लोगों ने नए साल का मनाया जश्न

पूसा, निज संवाददाता । हार कपाने वाली ठंड के बाबजूद पूसा का डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि बुधवार को पिकनिक स्पॉट में तब्दील रहा। क्या महिला क्या पुरुष, क्या युवा और क्या बच्चे, सब पर नव वर्ष का जुनून सर चढ़कर बोल रहा था। हाथों में मोबाइल लिए सभी कृषि विवि की ओर जा रही थी। मानो सभी सड़कों की सीमा कृषि विवि पर ही खत्म हो रही हो। वाहनों का काफिला और लोगों की भीड़ पूसा बाजार के बोस कंपनी चौक से पोस्ट ऑफिस तक और पोस्ट ऑफिस चौक से केंद्रीय विद्यालय के निकट स्थित पेट्रोल पंप तक जमा था। प्रशासनिक व्यवस्था के बाबजूद लोग घंटों जाम में फंसे रहे। यह नजारा विवि की प्रायः सड़कों पर एक सी थी। इस दौरान कृषि विवि मुख्यालय परिसर में सबसे अधिक भीड़ दिख रही थी। पिकनिक मनाने व कृषि विवि के मनमोहक छंटा को अपने कैमरे में कैद करने वाले अपने परिवार व मित्रो के साथ मशगूल थे। बेरिकेटिंग एरिया को छोड़ कर परिसर के चप्पे चप्पे पर लोग पहले दिन को यादगार बनाने में जुटे थे। कुछ परिवार साथ लाए गए व्यंजनों का आनंद ले रहे थे। तो कुछ खेलने में। यह नजारा विवि के जैव विविधता पार्क में भी दिखा।

बाबा का जलाभिषेक कर की दिन की शुरुआत

कल्याणपुर। क्षेत्र के विभिन्न जगह के लोगों ने नया साल के अवसर पर बुधवार को विभिन्न मंदिरों में पूजा अर्चना किया। वही क्षेत्र के तिलकेश्वर नाथ महादेव स्थान जटमलपूर, बरहेता, ध्रुवगामा, कल्याणपुर, अंजना, लदौरा, वासुदेवपुर, जितवारिया, भागीरथपुर और मधुरापुर आदि जगह के शिव मंदिर में जलाभिषेक किया। युवाओं की टोली ने खेत खलिहान, नदी किनारे एवं चौर में पिकनिक मनाने में लगे हुए थे। वही मूसेपुर और बरहेता ब्रह्मस्थान के परिसर में अष्टयाम महायज्ञ के उपरांत श्री राम विवाह सहित अन्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सरायरंजन प्रखंड क्षेत्र में नववर्ष को लेकर मंगलवार की रात की रात 12 बजे से हीं मोबाइल पर एक दूसरे को बधाई व शुभकामनाएं दी। बुधवार की सुबह होते हीं बच्चों ने अपने माता-पिता को पैर छुकर आशिर्वाद भी लिया। इसके बाद क्षेत्र के लोगों ने विभिन्न मंदिरों में जाकर पूजा अर्चना भी किया।

बुधवार को कृषि विवि के सरस्वती गार्डन में जुटी भीड़।

Hindustan 02-01-2025

कड़ाके की ठंड के साथ साल के पहले दिन की शुरुआत हुई, पछिया से लोग बेहाल

दिन का तापमान सामान्य से 6 डिग्री तक लुढ़का, कंपकपी बढ़ी

मौसम

पूसा, निज संवाददाता । कड़ाके की ठंड के साथ साल के पहले दिन की शुरुआत हुई। इस दौरान लोग दिन भर ठंड से बेहाल रहे। सुबह से ही चल रही पछुआ हवा कनकनी को लगातार बढ़ाती रही। जो दिन चढ़ने के साथ ही और बढ़ता गया। मौसम विभाग के अनुसार इस दौरान दिन का तापमान गिरकर 15.2 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। जो सामान्य से 6.1 डिग्री कम बताया गया। इस दौरान औसतन करीब 20 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चलती रही। जो ठिठुरन को लगातार बढ़ाती रही।

इस दौरान दिन भर लोग धूप की उम्मीद में टकटकी लगाए रहे। पर लोगों को निराशा हाथ लगी। मौसम विभाग के अनुसार यह स्थिति आगे भी जारी रहने की उम्मीद है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ ए सत्तार ने बताया अगले एक दो दिन यह स्थिति रह सकती है। हालांकि कुछ स्थानों पर धूप हो सकती है। बावजूद लोग ठिठुरन से परेशान रह सकते है। उन्होंने बताया कि निचले स्तर के बादल के कारण ठंड का प्रभाव और बढ़ गया है।

उन्होंने बताया कि धूप निकलने पर तापमान में सुधार हो सकती है। बहरहाल दिन भर ठंड से बेहाल लोग गर्म कपड़ों, बिजली उपकरणों और अलाव से लोग चिपके रहे। तेज हवा से बढी बर्फिली ठिठुरन से बाजार में सन्नाटा छायी रही। सड़कों पर एक्का-दुक्का लोग नजर आये। एक तो साल की शुरूआत वहीं बढ़ी ठंड के कारण अधिकत्तर दुकाने बंद रही। बैंक एवं सरकारी कार्यालयों में भी लोगों की संख्या नगन्य रही। स्कूलों में भी बच्चे नदारद दिखे।

- घरों में अलाव के पास चिपके रहे लोग
- ठंड के कारण बाजारों में पसरा रहा सन्नाटा

हालांकि सभी बैंकों में कर्मियों की उपस्थिति सामान्य देखा गया। अनुमंडल परिसर एवं प्रखंड परिसर में जल रहे अलाव के समक्ष लोग अपनी ठंड को कम करने की कोशिश में दिखे। प्रशासन की ओर से अलाव की कोई व्यवस्था कहीं दिखाई नहीं दिया। बाजार में ठंड की कपड़ा बेचने वाले सभी दुकानें लगभग खुली रही, लेकिन ग्राहक नहीं के बराबर था।

कल्याणपुर में नए साल के दिन ठंड में हुई बढ़ोतरी के कारण सारा दिन लोग परेशान रहे। सुबह से लेकर दिनभर आसमान में बादल छाया रहा।

पछिया हवा चलने के कारण लोगों को ठंड के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। ठंड के करण लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। छोटे-छोटे बच्चे और बड़े-बुजुर्ग अलाव का सहारा लेकर दिनभर अपने घर पर रहे।

बुधवार की रात को जंक्शन पर ठंड से ठिठुरते यात्री।

सार्वजनिक स्थलों पर जलाया जाएगा अलाव : डीएम

ठंड का कहर नये साल की शुरूआत के साथ ही लोगों को एहसास करा दिया। सुबह से आसमान में जहां बादल छाये रहे वहीं पछिया हवा से लोग कांपते रहे। इससे जनजीवन पूरी तरह प्रभावित हुआ। हालांकि नव वर्ष के जश्न को लेकर लोगों की भीड़ रही लेकिन दोपहर होते होते सभी लोग अपने अपने अपने घर में दुबक गये। शाम में जिन्हें जरूरी काम था वे ही घर से बाहर निकल सके। जो बाहर निकले भी वे अपने को पूरी तरह गर्म कपड़ों में समेटे हुए थे। कई जगह ठंड के असर को गम करने के लिए लोगों ने अलाव का भी सहारा लिया। इधर, ठंड में वृद्धि से गेहूं उत्पाइक किसानों में खुशी की लही देखी गयी। चौक चौराहा पर अलाव की प्रशासनिक स्तर पर व्यवस्था नहीं किए जाने से लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा। बस स्टैंड, अस्पताल, प्रखंड कार्यलय में लोग ठंड से ठिठुरते रहे। डीएम रोशन कुशवाहा ने कहा कि जलावन खरीदने का आदेश दिया गया है। जल्द ही सार्वजनिक स्थल पर अलाव जलाया जाएगा।

Hindustan 02-01-2024

नये साल के स्वागत में डीआरपीसीएयू में जुटी भीड़ जैव विविधता पार्क में युवाओं ने जम कर की मस्ती

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय परिसर में नव वर्ष के अवसर पर स्थानीय जिला सहित कई जिलों के लोगों ने बदलें मौसम में पिकनिक मनाने पूसा पहुंचे जहां लोगों ने जैव विविधता पार्क, चिल्ड्रन गार्डन एवं सरस्वती गार्डन में पिकनिक मनाया। वहीं ठंड में छोटे छोटे बच्चों ने भी आनंद लिया छात्रों ने भ्रमण करते हुए विश्वविद्यालय के विभिन्न स्थलों पर लगे पौधों को देखते हुए जानकारी लिया, परिवार के संग आए महिला पुरुषों ने इस

विश्वविद्यालय परिसर में जुटी भीड़।

विवि के विषय में एक दूसरे से जानकारी लेते नजर आयें। इस दौरान कोचिंग संस्थान में अध्यनरत छात्रा नैना, शालनी, प्रिया अपने सहपाठियों के साथ कई तरह के खेलों का आंनद ली, वहीं क्षेत्र से पहुंचे लोगों ने बुढ़ी गंडक नदी के तट पर रिवर फ्रंट का भ्रमण किया। समस्तीपुर ,मुजफ्फरपुर ,वैशाली , दरभंगा सहित क्षेत्रीय लोगों की भीड़ जुटी थी।

Rashtriya Sahara 02-01-2025

मिलेट्स का उत्पादन व रकबा विकसित करने की जरूरत

कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक व प्रतिभागी.

पूसा .पोषक अनाजों के लिए बाजार एवं मूल्य श्रृंखला विकाश विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ. पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र डॉ. राप्रकेंकृविवि पूसा द्वारा किसानों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया.

इसमें सकरा के 35 किसान प्रतिभाग कर रहे हैं. एक महीने के अंदर इस विषय पर दूसरी ट्रेनिंग कराई जा रही है. जिससे अधिक से अधिक किसान लाभान्वित हो सकें. प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन, बतौर मुख्य अतिथि निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने किया. डॉ. राय ने कहा कि किसान अपने प्राथमिक मिल्लेट्स उत्पादों में विभिन्न स्तरों पर मूल्य संवर्धन कर एवं इन उत्पादों का सही बाजार में विपणन कर नकदी मुनाफा कमा सकते हैं. पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र की प्रधान अन्वेषिका डॉ. श्वेता मिश्रा ने अनुसंधान को ट्रेनिंग की गतिविधियों की जानकारी दी.

प्रभात खबर
Friday, January 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6776e12ce7a52c4d08c8ab39

कृषि • पोषक अनाजों के लिए बाजार व मूल्य श्रृंखला विकास विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

दैनिक भास्कर - 3/01/24

मिलेट्स उत्पादों में विभिन्न स्तरों पर मूल्य संवर्धन की जरूरत, मिलेगी अच्छी कीमत

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा द्वारा किसानों के लिए पोषक अनाजों के लिए बाजार एवं मूल्य श्रृंखला विकास के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे विवि के निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने किया। इस अवसर पर मौजूद किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि एक महीने के अंदर इस विषय पर दूसरी ट्रेनिंग विवि द्वारा कराई जा रही है जिससे अधिक से अधिक किसान लाभान्वित हो सकें। उन्होंने कहा कि किसान अपने प्राथमिक मिलेट्स उत्पादों में विभिन्न स्तरों पर मूल्य संवर्धन कर एवं इन उत्पादों का सही से बाजार में विपणन कर नकदी मुनाफा कमा सकते हैं। पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र की प्रधान अन्वेषिका डॉ. श्वेता मिश्रा ने निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह को ट्रेनिंग के तमाम गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने किसानों को बताया की वे कैसे मूल्य संवर्धन श्रृंखला को व्यावहारिक बनाकर एवं निर्मित उत्पादों का उचित बाजारीकरण कर उसे व्यावसायिक रूप देते हुए अपनी माली हालत में सुधार कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम की रूप रेखा को डॉ. ऋतंभरा सिंह ने तैयार किया है जो पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र में सह-अन्वेषिका के रूप में अपनी सेवाएं दे रही है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को पोषक अनाज के आर्थिक महत्व से रूबरू कराने के साथ-साथ पोषक अनाज की खेती को बढ़ावा देने तथा इसके उत्पादन के विस्तार के लिए प्रोत्साहित करना है।

प्रशिक्षणार्थियों के साथ मुख्य अतिथि।

बिक्री के लिए अच्छा बाजार मिलने पर बढ़ता है उत्साह

डॉ. ऋतंभरा ने कहा कि प्रायः ऐसा देखा जाता है कि किसी भी फसल एवं उसके उत्पाद की बिक्री के लिए बाजार न मिलने पर किसान उत्पादन में रुचि नहीं लेते हैं। मूल्य एवं आपूर्ति श्रृंखला के लिए उत्पाद की अधिक मात्रा में उपलब्धता अहम भूमिका रखती है। वर्तमान में बिहार में पोषक अनाजों का उत्पादन बहुत ही कम है लिहाजा पोषक अनाजों का बाजार भी सीमित है। उन्होंने कहा कि विवि का पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र लगातार पोषक अनाज पर जागरूकता पैदा करने एवं इसके व्यावसायिक संभावनाओं की तालाश की दिशा में कार्य कर रहा है। मंच संचालन डॉ. ऋतंभरा सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले के कुल 35 किसान भाग ले रहे हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा पांच जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान कुछ जिलों में कहीं-कहीं बूंदाबांदी हो सकती है। सुबह में हल्का कुहासा एवं धुंध छा सकता है। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
03 जनवरी	27.0	9.2
04 जनवरी	26.0	9.0
दरभंगा		
03 जनवरी	27.0	9.2
04 जनवरी	27.0	9.0
पटना		
03 जनवरी	28	11
04 जनवरी	28	10

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 03-01-2025

मिल्लेट्स उत्पादों के मूल्य संवर्धन से बढ़ायी जा सकती है आय : निदेशक

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र कि ओर से मुजफ्फरपुर जिला के सकड़ा प्रखंड के किसानों के लिए पोषक अनाजों के बाजार एवं मूल्य श्रृंखला विकास विषय से जुड़े तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक, अनुसंधान डॉ. ए. के. सिंह ने किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा कि किसान प्राथमिक मिल्लेट्स उत्पादों को विभिन्न स्तरों पर मूल्य संवर्धन कर बजार में विपणन कर अपनी आय को बढ़ा सकते है। उपस्थित पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र की प्रधान अन्वेषिका डॉ. श्वेता मिश्रा ने प्रशिक्षण के उद्देश्यों से अवगत कराया। कहा कि कृषक उत्पादों का व्यावसायिक रूप देकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकते है। क्रार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. ऋतंम्भरा ने कहा कि बिहार में पोषक अनाजों का उत्पादन बहुत ही कम है।

प्रशिक्षुओं के साथ निदेशक अनुसंधान व अन्य।

Rashtriya Sahara 03-01-2025

तालाब में ऑक्सीजन लेवल स्थायी रखने की जरूरत : डॉ श्रीवास्तव

प्रतिनिधि, पूसा

संबोधित करते डीन डॉ पीपी श्रीवास्तव .

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए मत्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि बेहतर मछली उत्पादन के लिए तालाबों के ऑक्सीजन लेवल को स्थायी रखने की जरूरत होती है. तालाबों का ऑक्सीजन लेवल गिरने पर मछलियों पर दुष्प्रभाव पड़ना स्वाभाविक हो जाता है. इस से निबटने के लिए तालाबों में तत्क्षण पानी में हलचल पैदा कर देने पर मछली पानी के अंदर प्रवेश कर जाती है. आक्सीजन लेवल गिरने की स्थिति में मछलियां पानी भरे तालाब में पानी की सतह से अपने मुंह को ऊपर की दिशा में निकाल कर सुरक्षित स्थान की तलाश में देखती रहती है. मत्स्यपालन में सम्पूर्ण लागत के 50 प्रतिशत तालाब में मछलियों के आहार पर ही खर्च किया जाता है. मछलियों को खाना खिलाने के लिए तालाब में समय और जगह एक ही रखने पर बेहतर उत्पादन संभव हो पाता है. मछली पालन को व्यवसायीकरण करने के लिए वैज्ञानिकी विधि अपनाते हुए तालाबों का ससमय प्रबंधन करने पर मछलियों की सुरक्षा संभव हो पाता है. बिहार में मोतीपालन व्यवसाय की अपार संभावनाएं हैं. रंगीन मछलियों के व्यवसाय से किसान अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं. डीएसडब्लू डा रमण त्रिवेदी ने कहा कि मानव को विभिन्न रोगों के निवारण के लिए मछली खाना जरूरी है. बीते दो दशकों में मछली पालन से ज्यादा किसान जुड़े हैं. स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने किया. संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक डा विनीता सतपथी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा फूलचंद ने किया. मौके पर जिला मत्स्य पदाधिकारी मो. नियाजुद्दीन, सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे.

औषधीय गुणों से भरपूर है हीरेशियम मशरूम

हीरेशियम प्रजाति का मशरूम

पूसा .हीरेशियम मशरूम औषधीय गुणों से भरपूर है. इसमें बीटागम, ग्लूकॉन, साइकेन, हरेशिमान तत्व पाये जाते हैं. डा. दयाराम के मुताबिक यह दिमाग की नसों के लिए फायदेमंद है. इसका सेवन करने से इंसान के सोचने की शक्ति बढ़ती है. विटामिन-डी भरपूर मात्रा में मिलती है. यह हड्डियों को मजबूत बनाता है. इसकी खेती कर किसान आजीविका का साधन बना रहे हैं. डा दयाराम ने कहा कि उत्तरी भारत के लोग ज्यादातर इस मशरूम के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए रुचि दिखा रहे हैं. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च से सेवानिवृति मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम का कहना है कि ग्रामीण महिलाएं और बेरोजगार युवा मशरूम कि इस प्रजाति की खेती करके घर बैठे अच्छी आजीविका कमा सकते हैं. मशरूम की इस प्रजाति की खेती कम लागत से होती है. सर्दी के मौसम में भी उत्पादक किंग ओएस्टर, सिटाके, हीरेशियम एवं इनोकी मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं. इसके लिए विवि स्तर पर स्पॉन मिलना शुरू हो गया है.

प्रभात खबर
Saturday, January 4, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677834862050be6aca2ecc7b

मशरूम प्राचीन मिस्र, चीन और रोम तक फैला हुआ है, जहां इसे औषधीय गुणों और विलासिता से जोड़ा जाता था

ऑयस्टर, शिटाके और रीशी जैसे विभिन्न प्रकारों में उगाया जा रहा भविष्य का सुपरफूड

मशरूम उत्पादन : उभरते हुए उद्योग के रूप में हो रहा स्थापित

संवाददाता, मुजफ्फरपुर

मशरूम पोषण से भरपूर फफूंद (फंगस) है, जो खाद्य पदार्थों के रूप में उपयोग के साथ-साथ औषधीय गुणों के लिए भी महत्वपूर्ण है. यह न केवल हमारे शरीर के लिए लाभकारी है, बल्कि एक लाभकारी कृषि उत्पाद भी बन चुका है. मशरूम का उत्पादन भारत में एक उभरते हुए उद्योग के रूप में स्थापित हो रहा है. इसे भविष्य का सुपरफूड माना जा रहा है. यह बटन मशरूम, ऑयस्टर मशरूम, शिटाके और रीशी जैसे विभिन्न प्रकारों में उगाया जाता है, जिनमें पोषण तत्वों की भरमार होती है. इसके अलावा, मशरूम का इतिहास भी अत्यधिक दिलचस्प है, जो प्राचीन मिस्र, चीन और रोम तक फैला हुआ है, जहां इसे औषधीय गुणों और विलासिता से जोड़ा जाता था.

आज के समय में मशरूम न केवल हमारे आहार का हिस्सा है, बल्कि इसका व्यावसायिक उत्पादन और कृषि में योगदान भी बहुत बढ़ चुका है. हालांकि, मशरूम उत्पादन में कुछ प्रमुख समस्याएं भी आती हैं, जैसे गुणवत्ता युक्त बीज की कमी, पर्यावरणीय कारकों का सही प्रबंधन, कीटों और रोगों का नियंत्रण, और बाजार में विपणन संबंधी चुनौतियां. इन समस्याओं को हल करने के लिए उन्नत तकनीकों और प्रशिक्षण की आवश्यकता है.

मशरूम का इतिहास हजारों साल पुराना है और यह प्राचीन सभ्यताओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था. मिस्रवासियों के लिए यह "देवताओं का भोजन" था, जिसे केवल शाही परिवार के लोग ही खा सकते थे. वहीं, चीन में इसे "अमरता का खाद्य पदार्थ" कहा जाता था, और विशेष रूप से शिटाके और रीशी मशरूम का उपयोग स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए किया जाता था. मशरूम का महत्व केवल खाद्य और औषधीय क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि राजनीति और सत्ता के खेल में भी था. रोम के सम्राट क्लॉडियस के लिए मशरूम एक विशेष भोजन था, लेकिन इतिहास में मशरूम का उपयोग शासकों के जहर देने के लिए भी किया गया. आज भी, मशरूम के औषधीय गुणों पर गहन शोध किया जा रहा है, जिसमें इसके कैंसर-रोधी, एंटीबायोटिक और इम्यून बूस्टर गुणों की पहचान हो रही है. मशरूम का भविष्य उज्जवल है, और इसके पोषण, औषधीय लाभों और उन्नत खेती के रूप में यह आनेवाले समय में और अधिक महत्वपूर्ण साबित होगा. इसके उपयोग से न केवल स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि होगी, जो कृषि क्षेत्र के लिए एक नई आशा की किरण बन सकता है.

उत्पादन में आने वाली समस्याएं और समाधान

प्रोफेसर (डॉ.) एसके सिंह

मशरूम उत्पादन एक लाभकारी कृषि व्यवसाय है, लेकिन इसके सफल संचालन में कई चुनौतियां आती हैं. प्रोफेसर (डॉ.) एसके सिंह, विभागाध्यक्ष, पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद सेंट्रल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, पूसा के अनुसार, इन समस्याओं का समाधान सही तकनीक और प्रबंधन से संभव है. सबसे प्रमुख समस्या गुणवत्ता युक्त स्पॉन की कमी है. इसके समाधान के लिए प्रमाणित स्पॉन विक्रेताओं से बीज खरीदने की सलाह दी जाती है. साथ ही, किसानों को स्पॉन उत्पादन की प्रक्रिया पर प्रशिक्षण लेना चाहिए. पर्यावरणीय परिस्थितियां भी महत्वपूर्ण हैं, जैसे तापमान (18-25C) और आर्द्रता (85-95%) का सही प्रबंधन आवश्यक है, इसके लिए एक नियंत्रित मशरूम हाउस बनाना चाहिए. रोग और कीट भी बड़ी समस्या बन सकते हैं. संक्रमण को रोकने के लिए फसल चक्र अपनाना, सफाई और जैविक नियंत्रण विधियों का पालन करना जरूरी है. इसके अतिरिक्त, कच्चे माल की अनुपलब्धता भी एक चुनौती है, जिसे स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों से हल किया जा सकता है. बाजार और विपणन में समस्याएं आती हैं, लेकिन यदि किसान प्रसंस्कृत मशरूम उत्पादों का निर्माण करें और ऑनलाइन विपणन प्लेटफॉर्म का उपयोग करें, तो बिक्री बढ़ सकती है. अंततः, आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए सरकार की योजनाओं और ऋण का लाभ उठाना चाहिए. सही जानकारी और प्रशिक्षण के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान कर, मशरूम उत्पादन को लाभकारी बनाया जा सकता है.

100 वर्ग फुट की जगह में एक चक्र में 100-150 किलोग्राम मशरूम हो सकता है.

मशरूम की देखभाल के लिए, इन बातों का ध्यान रखना चाहिए

- मशरूम को साफ करने के लिए, ब्रश का इस्तेमाल करें. मशरूम ब्रश खरीदने के अलावा, हार्डवेयर स्टोर से मिलने वाले पेंट ब्रश भी काम आ सकते है.
- मशरूम को ठंडे तापमान पर रखें. इन्हें 2-3 डिग्री सेल्सियस तापमान पर स्टोर करना सही होता है.
- मशरूम को फ्रेश रखने के लिए इन्हें एयर-टाइट कंटेनर में रखें. कंटेनर में चारों तरफ और मशरूम के ऊपर टिशू पेपर रखें.
- मशरूम को काले होने से बचाने के लिए, इन्हें रेफ्रिजरेटर में रखें.
- मशरूम की खेती के लिए भूसे को उपचारित करना जरूरी है. भूसे में किसी तरह के बैक्टीरिया या सूक्ष्मजीव नहीं होने चाहिए.
- मशरूम की खेती का चक्र करीब 25-30 दिनों का होता है. यानी, एक महीने में आप फसल काट सकते हैं.

किसानों को हिंदी में दी जाने वाली जानकारी को मिली मान्यता

संवाददाता, मुजफ्फरपुर

बिहार के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों तक हिन्दी में जानकारी पहुंचाने को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति मिल रही है. राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एनएएएस) ने " कृषि मंजूषा " को इस वर्ष 2.92 अंक प्रदान किए गए हैं, जो हिंदी भाषा में कृषि शोध पत्रिका की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है. यह पहली बार है जब किसी गैर-अंग्रेजी पत्रिका को एनएएएस द्वारा मान्यता मिली है, जो हिंदी भाषा में कृषि शोध लेखन के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है. कृषि मंजूषा को 2025 की सूची में 2944 पत्रिकाओं में से क्रम संख्या 2093 पर स्थान मिला है. पत्रिका के प्रधान संपादक और बिहार कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ. अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पत्रिका, जो 2018 में स्थापित हुई थी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि विज्ञान, बागवानी, और पशुपालन जैसे विषयों पर हिंदी में शोध प्रकाशित करती है. इसके सरल भाषा और उच्च गुणवत्ता के कारण, यह शोधकर्ताओं और कृषि वैज्ञानिकों के बीच लोकप्रिय हो चुकी है. पत्रिका के प्रधान संपादक और बिहार कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक शोध, डॉ. अनिल कुमार सिंह ने इस मान्यता को हिंदीभाषी कृषि वैज्ञानिकों के लिए गर्व का विषय बताया. " कृषि मंजूषा" को पहली बार गैर-अंग्रेजी शोध पत्रिका के रूप में यह मान्यता मिली है, जो हिंदी में कृषि शोध को एक नई पहचान प्रदान करती है.

भारतीय कृषि शोध के लिए गर्व का विषय

यह उपलब्धि केवल "कृषि मंजूषा" के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषा और भारतीय कृषि शोध के लिए भी गर्व का विषय है. यह सफलता हिंदी के शोध परिदृश्य को वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है. " कृषि मंजूषा की इस सफलता से हिंदी भाषा में वैज्ञानिक शोध को नई पहचान मिली है. और यह अन्य शोध पत्रिकाओं को अपनी भाषा और संस्कृति को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करेगी.

डॉ. डी.आर. सिंह, कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय

पछिया हवा से अगले दो दिनों तक ठंड का प्रकोप जारी रहेगा

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 04 से 09 जनवरी 2025 तक के लिये मौसम

पूर्वानुमान जारी किया गया है. इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में कहीं-कहीं हल्के बादल आ सकते हैं. हालांकि, मौसम शुष्क रहने का अनुमान है. वातावरण में अधिक नमी तथा पछिया हवा चलने के कारण पिछले दो दिनों से ठंड की स्थिति बनी हुई है. अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने के कारण ठंड का प्रकोप जारी रहने की संभावना है. अधिक नमी तथा सामान्य से कम तापमान के प्रभाव से उत्तर बिहार के अधिकांश स्थानों में सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते हैं. अधिकतम तापमान 17 से 19 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 7 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 6 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने की संभावना है. उसके बाद के पूर्वानुमानित अवधि में पूरबा हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है. शुक्रवार का अधिकतम तापमान 20.7 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 7.0 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

प्रभात खबर
Saturday, January 4, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677834862050be6aca2ecc54

भास्कर 5/1/25 पेज 13

मौसम पूर्वानुमान • उत्तर बिहार के जिलों के 4 से 9 जनवरी तक कहीं-कहीं हल्के बादल छाए रहेंगे

अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने के कारण ठंड का प्रकोप जारी रहने की है संभावना, अभी नहीं मिलेगी राहत

सिटीरिपोर्टर|समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में 4 से 9 जनवरी तक कहीं कहीं हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। वातावरण में अधिक नमी तथा पछिया हवा चलने के कारण पिछले दो दिनों से ठंड की स्थिति बनी हुई है। अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने के कारण ठंड का प्रकोप जारी रहने की सम्भावना है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग के वैज्ञानिक के अनुसार अधिक नमी तथा सामान्य से कम तापमान के प्रभाव से उत्तर बिहार के अधिकांश स्थानों में सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते हैं। इस बीच अधिकतम तापमान 17 से 19 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 7 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 6 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने की संभावना है।

आलू के खेतों में काम करते मजदूर।

किसानों के लिए वैज्ञानिक ने समसामयिक सुझाव दिए

आलू, मटर, टमाटर, धनियां, लहसून एवं अन्य रबी फसलों में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वातावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग के लक्षण दिखने पर 2.5 ग्राम डाई-इथेन एम. 45 फफूंदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर 2-3 छिड़काव 10 दिनों के अन्तराल पर करें।

मक्का की फसल में तना भेदक कीट की निगरानी करें : वैज्ञानिक

नवम्बर माह के शुरू में बोई गई रबी मक्का की फसल जो 55 से 60 दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना भेदक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुंच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। इससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सूख जाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुंचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट 10 जी. या कार्बोफ्यूरान 3 जी. का 7-8 दाना प्रति गाभा प्रति पीचा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250-300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

भास्कर 5/1/25 पेज 16

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के संचार केंद्र में दिया गया प्रशिक्षण, जानकारी दी

मछलियों से बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए तालाब के ऑक्सीजन लेवल को रखना होता स्थाई : डॉ. श्रीवास्तव

भास्कर न्यूज़|पूसा

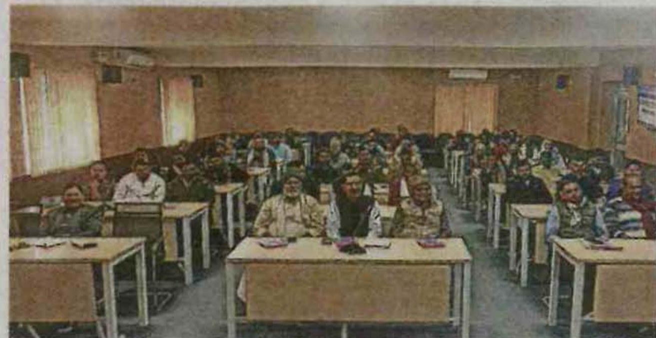

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. पीपी श्रीवास्तव और कार्यक्रम में मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र भवन सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन के विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन मात्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि बेहतर मछली उत्पादन के लिए तालाबों के ऑक्सीजन लेवल को स्थायी रखने की जरूरत होती है। अगर तालाबों का ऑक्सीजन लेवल गिरने लगता हैं तो मछलियों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ना भी शुरू हो जाता है। मत्स्यपालकों को ऐसी स्थिति जब भी दिखे वे तत्क्षण तालाब के पानी में हलचल पैदा कर दें जिससे मछलियां पानी में भ्रमणशील हो जाएं। उन्होंने कहा कि आक्सीजन लेवल गिरने की स्थिति में मछलियां पानी भरे तालाब में पानी की सतह से ऊपर अपने मुंह को निकाल कर सुरक्षित स्थान की तलाश करती रहती है। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन के सम्पूर्ण लागत का करीब 50 प्रतिशत खर्च अकेले मछलियों के आहार पर किया जाता है। उन्होंने कहा कि मछलियों को खाना खिलाने के लिए तालाब में एक समय और एक जगह पर भोजन डालने से मछलियों का बेहतर उत्पादन संभव हो पाता है। उन्होंने कहा कि मछली पालन को व्यवसायिक रूप देने के लिए मत्स्यपालकों को वैज्ञानिक विधि अपनाने के साथ-साथ तालाबों का समय समय पर प्रबंधन करते रहने की जरूरत हैं। मछलियों को खाने में खल्ली के साथ-साथ ब्रांड डस्ट मिलाकर खिलाने से मछलियों को पौष्टिक आहार मिलता रहता है। उन्होंने कहा कि धान के खेत में भी बेहतर ढंग से मछली उत्पादन कर मछलियों के साथ-साथ किसान धान का उत्पादन भी प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा की बिहार में मोती उत्पादन के क्षेत्र में भी व्यवसाय की अपार संभावनाएं है। मत्स्यपालक किसान रंगीन मछलियों का व्यवसाय कर अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते है। डीएसडब्लू डा. रमण त्रिवेदी ने कहा कि विभिन्न रोगों से निवारण के लिए मनुष्य को मछलियों का सेवन करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बीते दो दशकों में मछली पालन के व्यवसाय से काफी किसान जुड़े है।स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय एवं संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक डा. विनीता सतपथी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा. फूलचंद ने किया। मौके पर जिला मत्स्य पदाधिकारी मो. नियाजुद्दीन, सुरेश कुमार आदि मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर 5/1/25 पेज 16

खेती-किसानी • सामान्य फसलों की तुलना में व्यावसायिक फसल प्याज से मिल पाएगा अधिक लाभ

जनवरी में प्याज की खेती से किसान प्राप्त कर सकते बेहतर उत्पादन : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज|पूसा

प्याज और लहसुन दोनों फसल मुख्य रूप से एक व्यवसायिक फसल है। इसकी खेती कर किसान न सिर्फ बेहतर उत्पादन बल्कि अच्छा से अच्छा मुनाफा भी कमा सकते हैं। नए साल का जनवरी महीना खेतों में प्याज लगाने के लिए काफी उपयुक्त है। बिहार के किसान इस महीने प्याज की खेती को वैज्ञानिक ढंग से करते हुए कम लागत में बेहतर उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि बिहार के किसान अपने-अपने क्षेत्र के अनुकूल प्याज के उन्नत किस्मों को खेतों में लगाकर प्याज के सामान्य उत्पादन को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे तो जनवरी महीने में किसान टमाटर, प्याज, मिर्च, भिंडी आदि कई तरह के फसलों को खेतों में आसानी से लगा सकते हैं। लेकिन मुख्य रूप से व्यवसायिक फसल किसानों को अच्छा रेट दिलाने में काफी कारगर होती है। ऐसे किसान जिन्होंने प्याज को लगाने के लिए पूर्व में नर्सरी लगाई थी वे अविलंब प्याज को नर्सरी से उखाड़कर खेतों में रोपाई कर दे। इसके अलावे वैसे किसान जिन्होंने पूर्व में प्याज की नर्सरी नही लगाई थी वे भी क्षेत्र के अन्य रजिस्टर्ड नर्सीरियों तथा स्थानीय केवीके से बिचड़ों की खरीदारी कर खेतों में प्याज को लगा दे। उन्होंने कहा कि जनवरी माह में लगाएं जाने वाले प्याज, टमाटर और मिर्च के फसलों को खासकर पाले से बचाना अत्यंत जरूरी होता है। उन्होंने कहा कि प्याज की खेती करने वाले किसानों को प्रत्येक 10 दिन पर खेतों में हल्की सिंचाई करते रहने की जरूरत पड़ती है। प्याज की रोपाई 17 जनवरी तक आसानी से की जा सकती है।

प्याज और लहसुन दोनों मुख्य रूप से व्यावसायिक फसल हैं

खेतों में लगाई गई प्याज की फसल।

प्याज लगाने के लिए किसान खेतों को ऐसे करें तैयार

प्याज लगाने से पूर्व किसान अपने खेत के एक हेक्टेयर एरिया में 20 से 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस और 60 किलोग्राम पोटाश डालकर खेतों की जुताई अच्छे से कराएं। अगर खेतो में गंधक और जिंक की कमी दिखाई दे रही हो तो किसान इन दोनों का प्रयोग भी खेतों में कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि खेत तैयार कर लेने के बाद किसान सिंचाई के साधन के अनुसार प्लॉट में छोटी-छोटी क्यारियां बनाएं तथा उन्ही क्यारियों में 10 से 20 सेंटीमीटर की दूरी पर प्याज की रोपाई करें। किसान इस बात पर जरूर ध्यान दे की वे प्याज की रोपाई सांयकाल में ही करें तथा रोपाई के तुरंत बाद उसमें सिंचाई कर दें। उन्होंने कहा कि परंपरागत रूप से की जाने वाली फसलों की खेती की तुलना में प्याज की खेती से किसान अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात व आंध्र प्रदेश जैसे कई राज्यों के किसान प्याज की खेती कर अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर से बेहतर बना रहे है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान अगर हम प्याज के बाजार मूल्य पर गौर किया जाएं तो यह बेहतर है।

प्याज की प्रजाति एग्री फाउंड लाइट रेड बेहतर

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि प्याज की अच्छी पैदावार देने वाली प्रजातियों में एग्री फाउंड लाइट रेड, अर्का कल्याण, अर्का प्रगति आदि शामिल है। प्याज के औसत उत्पादन पर गौर किया जाएं तो प्याज का उत्पादन लगभग 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से होता है। उन्होंने बताया कि एक हेक्टेयर प्याज की रोपाई करने के लिए किसानों को 8 से 10 किलो प्याज के बीज की नर्सरी लगानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि प्याज की फसल को तैयार होने में करीब 140 से 145 दिन का समय लगता है। इसकी खेती में सिंचाई की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। तैयार फसल की खुदाई से 15 दिन पूर्व किसानों को प्याज की फसल में सिंचाई बंद कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा की किसान अपने खेतों में प्याज लगाने से पूर्व खेत के मिट्टी की जांच जरूर कराएं तथा जरूरत के आधार पर ही खेतों में उर्वरक डालकर उसकी जुताई कराएं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा नौ जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में कहीं-कहीं हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों तक पछुआ हवा चलने के कारण ठंड जारी रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
04 जनवरी	21.0	8.2
05 जनवरी	21.0	9.0
दरभंगा		
04 जनवरी	22.0	9.2
05 जनवरी	23.0	9.2
पटना		
04 जनवरी	26	13
05 जनवरी	26	13

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 04-01-2025

जिले में तेजी से बढ़ने लगी ठंड, न्यूनतम तापमान 7 .0 डिग्री तक पहुंचा

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : नव वर्ष के आगमन के साथ ही जिले में ठंड तेजी से बढ़ने लगी है। पिछले कुछ दिनों से तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है। इससे जनजीवन प्रभावित है। शुक्रवार को जिले का अधिकतम तापमान 20.7 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 7.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। गुरुवार को अधिकतम तापमान 18.4 डिग्री और न्यूनतम 8.3 डिग्री दर्ज किया गया था।

इधर, बाजार में दुकानों पर गर्म कपड़ों की खरीदारी करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अलाव जलाकर खुद को गर्म रखने की कोशिश कर रहे हैं। गुरुवार को पछिया हवा ने ठंड बढ़ा दी। 10.2 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चली। हालांकि, दिन के 12 बजे के बाद हल्की धूप निकलने से कुछ समय के लिए राहत जरूर मिली। सुबह के समय ठंडी हवाओं के कारण स्कूल जाने वाले बच्चों और दफ्तर जाने वाले कर्मचारियों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ठंड के कारण खासकर बुजुर्गों और बच्चों में सर्दी-जुकाम और बुखार जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। सदर अस्पताल के अधीक्षक डा एस के चौधरी ने गर्म कपड़े पहनने, गर्म पेय पदार्थों का सेवन करने और बाहर निकलते समय पूरी तरह ढंककर निकलने की सलाह दी है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम वैज्ञानिक डा ए सत्तार ने कहा कि शुक्रवार को ऐसा ही मौसम रहेगा। इसके बाद फिर ठीक हो जाएगा। स्थानीय लोगों से सावधानी बरतने और आवश्यकतानुसार ही घर से बाहर निकलने की सलाह दी है।

कंबल की खरीदारी करते लोग कंबल की खरीदारी करते लोग • जागरण

उत्तर बिहार में नौ जनवरी तक आसमान में बादल छाए रहेंगे

समस्तीपुर : डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम वैज्ञानिक डा ए सत्तार ने कहा कि समस्तीपुर और आसपास के क्षेत्रों में ठंड का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम तापमान 18 .2 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 8 .2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया है। मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार 04 से 09 जनवरी तक उत्तर बिहार के कई जिलों में हल्के बादल छाए रह सकते हैं, लेकिन मौसम शुष्क रहने की संभावना है। अधिकतम तापमान 17-19 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 7-10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने से ठंड का असर जारी रहेगा। उन्होंने किसानों के लिए कहा कि आलू, मटर, टमाटर और अन्य रबी फसलें में झुलसा रोग की रोकथाम के लिए 2 .5 ग्राम डाई-इथेन एम-45 दवा का 1 लीटर पानी में घोल बनाकर 2-3 छिड़काव 10 दिनों के अंतराल पर करें। मक्का की फसल में 50 किलो नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग करें और तना बेधक कीट से बचाव के लिए फोरेट 10 जी या कार्बोफ्यूरान 3 जी का उपयोग करें। अधिक प्रकोप होने पर डेल्टामिथ्रिन का छिड़काव करें। गेहूं में खर-पतवार की रोकथाम के लिए सल्फोसल्फयुरॉन और मेटसल्फयुरॉन दवाओं का उपयोग करें। वहीं पशुपालकों से कहा कि ठंड के कारण दूध उत्पादन में कमी को रोकने के लिए पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ नियमित रूप से 50-100 ग्राम खनिज मिश्रण और 50 ग्राम नमक खिलाएं। पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुखी घास का बिछावन करें।

Dainik Jagran 04-01-2025

मछली पालन को ऑक्सीजन लेवल रखें स्थायी

पूसा में शुक्रवार को मछली प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल मछली पालक व अन्य।

पूसा, निज संवाददाता। मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि बेहतर मछली उत्पादन के लिए तालाबों के ऑक्सीजन लेवल को स्थायी रखने की जरूरत होती है। तालाबों का ऑक्सीजन लेवल गिरने पर मछलियों पर दुष्प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इस से निबटने के लिए तालाबों में तत्क्षण पानी में हलचल पैदा करना चाहिए।

इससे मछली पानी में प्रवेश कर जाती है। वे शुक्रवार को डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण में शामिल प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। धान के खेत में भी बेहतर ढंग से मछली उत्पादन कर मछली के साथ धान का उत्पादन ले सकते है।रंगीन मछलियों के व्यवसाय में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास करने की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए डीएसडब्लू डॉ. रमण त्रिवेदी ने कहा कि मानव को विभिन्न रोगों के निवारण के लिए मछली खाना जरूरी है। बीते दो दशकों में मछली पालन से ज्यादा किसान जुड़े है। स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय ने व संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक डॉ. विनीता सत्पथी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा फूलचंद ने किया। मौके पर जिला मत्स्य पदाधिकारी मो. नियाजुदीन, सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे।

Hindustan 04-01-2025

हाड कंपाती ठंड का दौर रहेगा जारी

समस्तीपुर। वातावरण में अधिक नमी तथा पछिया हवा चलने के कारण पिछले दो दिनों से ठण्ड की स्थिति बनी हुई है। अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने के कारण ठण्ड का प्रकोप जारी रहने की सम्भावना है। अधिक नमी तथा सामान्य से कम तापमान के प्रभाव से उत्तर बिहार के अधिकांश स्थानों में सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते है। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से मौसम परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 09 जनवरी, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में कहीं कहीं हल्के बादल आ सकते है। हलाकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 17 से 19 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 7 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 6 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिनों तक पछिया हवा चलने की संभावना है। उसके बाद के पूर्वानुमानित अवधि में पुरवा हवा चलने की सम्भावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara04-01-2025

भास्कर 5/1/25 पेज 16

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

बींस व राजमा पर सफेद सड़न रोग का प्रकोप : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

सावधानी जरूरी : ज्याद सिंचाई भी फसलों के लिए हानिकारक

वर्तमान में किसानों के खेतों में बींस और राजमा के छोटे छोटे पौधे लहलहा रहे हैं। इस समय बींस और राजमा की फसल में सफेद सड़न रोग के लगने खतरा बना रहता है जो बींस और राजमा यानी दोनों ही फसल के लिए काफी घातक और विनाशकारी है। बिहार के किसान वैज्ञानिक तकनीक से इस बीमारी का प्रबंधन कर बींस और राजमा की खेती से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि सफेद सड़न रोग (स्केलेरोटिनिया स्क्लेरोटोरियम) नामक एक कवक के कारण होने वाली बीमारी है। यह बीमारी बींस और राजमा के पौधे को उपरी हिस्से से संक्रमित करती है। इस रोग का रोग कारक बींस और राजमा के अलावे कई अन्य फसलें जैसे ब्रैसिका, गाजर, धनिया, खीरा, खरबूज, प्याज, कुसुम, सूरजमुखी, टमाटर आदि को भी संक्रमित कर देता है।

सफेद सड़न रोग से संक्रमित बींस की फसल।

सफेद सड़न रोग के लक्षण

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग से संक्रमित पौधों के पत्तियों का रंग भूरा होने के साथ नरम हो जाता है तथा इससे सड़ा हुआ गंध निकलने लगता है। इस बीमारी का संक्रमण सबसे पहले पत्तियों, फूल और फलों पर लगता है तथा बाद में इन जगहों पर एक सफेद रंग का रूई जैसा संरचना (कॉटनी मोल्ड) बन जाता है। उन्होंने बताया कि इस बीमारी के संक्रमण से मिट्टी की सतह के पास पौधों के तने गल जाते है। तनों पर भी काली सरसो के दाने जैसी (ब्लैक, सीड-लाइक रेस्टिंग बॉडीज) संरचना बन जाती है जिसे 'स्क्लेरोटिया' कहा जाता है। तने के अंदर मोल्ड विकसित होने लगते है। उन्होंने बताया कि इस रोग का ज्यादातर संक्रमण फूल आने के दौरान तथा बाद में फलियों पर लगता है। इस रोग का फैलाव वायुजनित (एयरबोर्न) बीजाणु द्वारा होता है। इस रोग के बीजाणु हवा द्वारा कई किलोमीटर तक फैल सकते है। इस रोग का फैलाव घने पौधे की वजह से लंबे समय तक उच्च आर्द्रता, ठंडा, गीला मौसम आदि की वजह से ज्यादा होता है।

सफेद सड़न रोग को किसान ऐसे करें प्रबंधित

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग के प्रबंधन के लिए यह आवश्यक है की किसान इन फसलों में ज्यादा सिंचाई न करें खासकर दोपहर में तो बिल्कुल भी न करें। इन फसलों में फूल आने के समय किसान एक कवकनाशी साफ या कार्बेन्डाजिम दोनों में से कोई भी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर फसलों पर छिड़काव करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा नौ जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में कहीं-कहीं हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों तक पछुआ हवा चलने के कारण ठंड जारी रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
05 जनवरी	19.5	9.0
06 जनवरी	20.0	9.0
दरभंगा		
05 जनवरी	20.0	9.0
06 जनवरी	20.0	9.2
पटना		
05 जनवरी	21	12
06 जनवरी	21	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 07-01-2025

कैंपस अलर्ट

नवीन प्रथाओं को सीखने में सक्षम बनाने की जरूरत

भ्रमण के दौरान मौजूद किसान .

पूसा. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बेहतर मत्स्यपालन विषय पर जारी प्रशिक्षण के तीसरे दिन शेखपुरा और भोजपुर के 60 मछलीपालकों और मत्स्य विस्तार अधिकारियों के लिए समस्तीपुर जिले में एकीकृत तालाब आधारित कृषि प्रणाली के बारे में जानकारी देने के लिए एक प्रदर्शन यात्रा की गई. उन्हें वैज्ञानिक मत्स्यपालन के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई. खासकर उत्पादकता बढ़ाने के लिए मछलियों की कई बार स्टॉकिंग और कई बार कटाई करने की जरूरत है. प्रदर्शन सह क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशालय, आरपीसीएयू, पूसा द्वारा किया गया था. प्रसार शिक्षा उप निदेशक डा विनीता सतपथी ने बताया कि इस यात्रा ने किसानों को सफल मछलीपालकों के साथ बातचीत करने के साथ-साथ कुछ नवीन प्रथाओं को सीखने में सक्षम बनाने की भी जरूरत है. यात्रा देखो-जांचो-अपनाओ के सिद्धांत के साथ की गई थी.

प्रभात खबर
Monday, January 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677ac358f687106332d1f7

दैनिक भास्कर 6/01/25 P-14

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

किसान औषधीय फसल के रूप में करें सहजन की खेती, होगी अच्छी आमदनी

एक बार खेतों में लगा देने के बाद साल दर साल ले सकते हैं पैदावार

भास्कर न्यूज | पूसा

सहजनएक औषधीय फसल है। बिहार के किसान एक एकड़ खेत में सहजन के पौधे कोलगाकर उसकी फसल से महज 10 महीने बाद से ही लाखों रुपए की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। सहजन के फसल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसे एक बार खेतों में लगा देने के बाद साल दर साल इससे पैदावार ली जा सकती है। अब तो बिहार सरकार भी सहजन की खेती को बढ़ावा देने के लिए सहजन की खेती शुरू करने वाले किसानों को लागत में 50 फीसदी का सब्सिडी मुहैया करा रही है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड एवं वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि सहजन एवं मीठी नीम यानी (करी पत्ता) के महत्व को उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत के लोग बेहतर तरीके से समझते है। हालांकि अब सहजन और करी पत्ते के गुणकारी महत्व को लगभग सभी लोग आसानी से समझने लगे है। उन्होंने कहा कि हमारे बीच जब पौष्टिक सब्जियों की चर्चा होती है तो सबसे पहला नाम सहजन का ही आता है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर पाए जाने वाले किसी भी पौधे में सहजन के बराबर औषधीय एवं पौष्टिक गुण नहीं पाया जाता है। सहजन को बिहार में सालो भर आसानी से उगाया जा सकता है। इसके पौधे में किसानों को किसी विशेष तरह की देखभाल करने की आवश्यकता नही पड़ती है।

सलाह : वैज्ञानिक तकनीक से खेती काफी लाभदायक

नर्सरी में लगा सहजन का छोटा छोटा पौधा।

सहजन के इन किस्मों को लगाएं

बिहार के किसान सहजन के किस्म पीकेएम 1, पीकेएम 2, कोयंबटूर 1, कोयंबटूर 2 आदि किस्मों को लगाकर अच्छा पैदावार और मुनाफा कमा सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया की सहजन के किस्म पीकेएम 1 के फली का स्वाद बेहतर होता है। इससे कई सालों तक किसानों को लगातार फली मिलता रहता है। उन्होंने बताया कि सहजन के पौधे को रोपते समय 500 ग्राम सड़ी गोबर की खाद और 250 ग्राम नीम की खल्ली देकर पौधा लगाएं।

वैज्ञानिकों ने साल में दो बार फलने वाला वार्षिक प्रभेद तैयार किया

उन्होंने बताया कि सामान्यतः कुछ सहजन की प्रजातियों में फल सालभर में एक ही बार आता है। इसके फल का उपयोग प्रायः लोग साल में एक बार जाड़े के दिनों में सब्जी के रूप में करते है। हालांकि सहजन की कुछ प्रजातियां ऐसी भी है जिनमें साल में दो बार फल लगते है। दक्षिण भारत के लोग तो सहजन के फूल, फल, पत्ती, छाल आदि सभी चीजों का उपयोग अपने विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को बनाने में सालों भर करते रहते हैं। उन्होंने बताया कि हाल के दिनों में कृषि वैज्ञानिकों ने सहजन का साल में दो बार फलने वाला वार्षिक प्रभेद तैयार किया है जो न सिर्फ ज्यादा उत्पादन देता है बल्कि इसमें काफी अधिक मात्रा में प्रोटीन, लवण, लोहा, विटामिन-बी, विटामिन-सी आदि भरपूर मात्रा में भी पाया जाता है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के मौसम विभाग द्वारा नौ जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में कही-कहीं हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों तक पछुआ हवा चलने के कारण ठंड जारी रहने का अनुमान है।

Dainik Jagran 06-01-2025

कृषि ज्ञान वाहन से अवगत हुए मत्स्यपालक किसान

ज्ञान वाहन से लाभान्वित होते किसान.

प्रतिनिधि, पूसा

निदेशालय प्रसार शिक्षा डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय की ओर से मत्स्य पालक किसानों के लिए प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम आयोजन किया गया. इसमें शेखपुरा एवं भोजपुर जिला से आये 60 किसानों को मत्स्य हैचरी परिसर मतलुपुर मुजफ्फरपुर में भ्रमण करवा कर उन्हें आधुनिक तरीके से मत्स्यपालन के बारे में किसानों को बताया गया. किसानों को एक्सटेंसिव फार्मिंग, नर्सरी तालाब का प्रबंधन, मिश्रित मत्स्यपालन जैसी चीजों के बारे में बताया गया. कृषि ज्ञान वाहन के माध्यम से किसानों को चतुर्थ कृषि रोड मैप के विभिन्न आयामों की जानकारी दी गई. मत्स्यपालन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक किया गया. प्रक्षेत्र में पहुंच कर डॉ विनिता सतपथी ने इस वाहन के मुख्य उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि विभिन्न जिले के सभी प्रखंडों में प्रगतिशील किसानों द्वार पर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र से जुड़ी व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने के लिए की गई है. कृषि ज्ञान वाहन द्वारा बागवानी एवं अन्य फसलों की कीट व्याधि के साथ-साथ पशु एवं पक्षी के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान किसानों के ज्ञान संवर्धन के लिए तकनीकी फिल्म का प्रदर्शन किया जाना है.

प्रभात खबर
Tuesday, January 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677c26a2c82d5f39230cab14

वैज्ञानिकी विधि से व्यवसायिक मछलीपालन करने पर जोर

तालाब का अवलोकन करते प्रतिभागी.

पूसा. मुजफ्फरपुर जिला अंतर्गत मुतलुपुर समेकित मत्स्यपालन इकाई में 60 मत्स्य कृषकों के लिए एक प्रदर्शन भ्रमण का आयोजन किया गया. 20 तालाबों से युक्त एक मनमोहक प्राकृतिक दृश्य जहां 87 एकड़ भूमि पर भारतीय मेजर कार्प (रोही, मृगल, कतला) के साथ-साथ बाग, सब्जी और मेड़रोपण का व्यावसायिक मछलीपालन किया जा रहा है. किसानों को ब्रूडर स्टॉक, वैज्ञानिक फीडिंग प्रथाओं, वातन, बहु स्टॉकिंग और हप्पा संस्कृति आदि के बारे में जानकारी दी गई. लाइव हार्वेस्टिंग की गई जहां किसानों ने न केवल सीखा बल्कि गहरी संतुष्टि भी व्यक्त की. बत्तख पालन इकाई का प्रबंधन अच्छी तरह से किया गया था. विभिन्न प्रबंधन प्रथाओं नील हरित और लाल शैवाल की सफाई, तालाब की सफाई आदि सिखाया गया. हैचरी प्रबंधक ने कहा कि वार्षिक टर्नओवर लगभग 3 करोड़ है. साल भर 100 से अधिक किसानों मजदूरों को रोजगार देता है. यह दौरा निदेशक विस्तार शिक्षा डॉ. मयंक राय के मार्गदर्शन में किया गया. इस फील्ड सह एक्सपोजर दौरे का समन्वय कृषि विस्तार शिक्षा विभाग की प्रमुख डॉ. विनिता सतपथी ने किया. प्रभारी (क्षमता निर्माण) और निदेशालय से सुरेश और सूरज ने इसमें सहयोग किया. विस्तार शिक्षा विभाग के कुछ छात्रों ने भी फील्ड विजिट में भाग लिया. नवीन जानकारियां हासिल की.

प्रभात खबर
Tuesday, January 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677c26a2c82d5f39230cab14

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के पादप रोग विभाग के हेड ने दी वैज्ञानिक तकनीक अपनाने की सलाह

फॉस्फोरस व पोटाश की कमी से बैंगन की फसल में नहीं आ रहे फूल, नाइट्रोजन की अधिकता को भी वैज्ञानिक बता रहे कारण

भास्कर न्यूज | पूसा

बुवाई के लिए खेत तैयार करने के समय सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता जरूरी

किसानों के खेतों में इस समय बैंगन की फसल लगी है। ज्यादातर किसान बैंगन की तुड़ाई भी कर रहे हैं। हालांकि बैंगन उत्पादक इन किसानों में से कई किसान ऐसे हैं जो बैंगन की फसल में फूल न लगने की वजह से परेशान हैं। इन किसानों को परेशान होने की जरूरत नही हैं। ऐसे किसान कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सुझाए गए कुछ सरल उपायों को अपनाकर इस समस्या से निजात पा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि बैंगन में फूल न आने की समस्या का समाधान एक बहु-आयामी दृष्टिकोण के तहत किया जा सकता है। किसान बैंगन की फसल में संतुलित पोषण, समुचित सिंचाई, जलवायु प्रबंधन एवं रोग-कीट का नियंत्रण करने के साथ-साथ सभी विषयों पर ध्यान देकर इस समस्या को कम कर सकते है। उन्होंने कहा कि बैंगन की फसल में फूलों का विकास सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन प्रथाओं का पालन करना आवश्यक है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया की बैंगन की खेती में अच्छी वानस्पतिक वृद्धि के बावजूद फूल न आना एक आम समस्या है जो किसानों की उत्पादकता और आय को प्रभावित कर सकती है।

खेतों में लगी बैंगन की फसल।

उन्होंने बताया कि बैंगन उत्पादक किसानों को बैंगन लगाने से पूर्व खेतों में फॉस्फोरस एवं पोटाश दोनों 60-60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिए। फॉस्फोरस एवं पोटाश दोनों की पूरी मात्रा को खेत की तैयारी के समय ही दें देना चाहिए। किसान सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे बोरॉन और जिंक की 0.2 प्रतिशत मात्रा का छिड़काव बैंगन की फसल पर करें या जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर एवं बोरॉन 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर का प्रयोग बैंगन लगाने से पूर्व खेत की तैयारी करते समय करें। उन्होंने बताया कि बोरॉन भी बैंगन के फूल बनने और परागण में काफी सहायक होता है। उन्होंने बताया कि बैंगन उत्पादक किसान पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। जलभराव से बचने के लिए खेत में उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। टपक सिंचाई प्रणाली का उपयोग करके जल की बर्बादी को रोकें और पौधों को सही मात्रा में पानी दें। उन्होंने कहा कि अत्यधिक गर्मी से पौधों को बचाने के लिए छायादार जाल या मल्चिंग का उपयोग करें। ठंड के मौसम में पौधों को प्लास्टिक की चादर से ढक दें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा नौ जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में कही-कहीं हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों तक पछुआ हवा चलने के कारण ठंड जारी रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
07 जनवरी	24.2	12.0
08 जनवरी	25.0	12.0
दरभंगा		
07 जनवरी	25.0	12.0
08 जनवरी	25.0	13.0
पटना		
07 जनवरी	26	14
08 जनवरी	27	14

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 07-01-2024

केंद्रीय कृषि विवि में लगेगा किसान महामेला

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित परिसर में आगामी 15 से 17 फरवरी 2025 तक किसानों का महामेला किसान मेला का आयोजन किया जा रहा है. कार्यालय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, इस बार के मेला में दर्जनों आकर्षक स्टॉल लगाने की व्यवस्था होगी. जिससे किसान मेला में ही ऑनस्पॉट आधुनिक तकनीकों का लाभ ले सकेंगे. बिहार राज्य के अलावे दूसरे प्रदेशों से आने वाले किसानों के ठहरने, खाने एवं उनके मनोरंजन का खास ख्याल रखा जा रहा है.

प्रभात खबर
Wednesday, January 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677d7ad75d36a6e4f407e34

8/1/25

सर्दी का सितम • घने कोहरे के कारण सड़कों पर लाइट जलाकर चली गाड़ियां, पछिया हवा ने बढ़ाई और कनकनी

24 घंटे में आठ डिग्री गिरा तापमान, नहीं निकली धूप

आगे क्या... अगले एक-दो दिनों तक घना कुहासा व आसमान में छाए रहेंगे बादल, ठंड से राहत नहीं

सिटीरिपोर्टर | समस्तीपुर

जिले में घने कोहरे ने लोगों की जिंदगी की रफ्तार कम कर दी है। 24 घंटे के अंदर अधिकतम तापमान में अचानक 8 डिग्री सेल्सियस गिरावट के बाद ठंड ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। सोमवार को अधिकतम तापमान 24.2 डिग्री रही जबकि मंगलवार को अधिकतम तापमान घटकर 16 डिग्री पर पहुंच गया। वहीं न्यूनतम तापमान 10.9 डिग्री.से. रिकॉर्ड किया। इसके कारण पूरे उत्तर बिहार में ठंड का प्रकोप बढ़ गया। पूसा के मौसम विभाग के अनुसार बुधवार को भी मौसम की स्थिति लगभग मंगलवार के जैसी ही रहेगी। अगले एक दो दिनों तक खासकर तराई के क्षेत्रों में सुबह में घना कुहासा छाया रहेगा। हवा की गति भी थोड़ी अधिक लगभग 20 से 25 किलोमीटर प्रति घंटे रहेगी। हवाओं की वजह से ठिठुरन जैसी स्थिति बनी रहेगी। हालांकि उन्होंने बताया कि बुधवार को तापमान ज्यादा कम नहीं होगा। लगातार घना कोहरा छाए रहने के चलते जहां कड़कड़ाती ठंड मे जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। वहीं कोहरे के कारण लोग घरों में ज्यादातर लोग रहे। वहीं मजदूरों और किसानों को इस ठंड में काम के लिए निकलना पड़ा जिससे उन्हें काफी मुश्किलें हुई। लंबी दूरी की लौटती ट्रेन भी कई घंटा देरी से चल रही है। इससे यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। धुंध ने ट्रेनों की रफ्तार को धीमा कर दिया है। वहीं सड़कों पर विजिबिलिटी कम होने के कारण वाहन भी कम दिखे। साथ ही बस स्टैंड पर भी यात्रियों की आवाजाही कम ही दिखी। स्टेशन पर यात्री गाड़ियों की देरी से कंबलों में दुबककर इंतजार करते देखे गए। हालांकि नगर निगम की ओर से ठंड से बचाव के लिए कुछ जगहों पर अलाव की व्यवस्था की गई है।

समस्तीपुर - दरभंगा मुख्य पथ के ओवरब्रिज पर मंगलवार को घने कुहासे के बीच गाड़ियों की लाइट जलाकर जाते राहगीर। **फोटो : उचित चंद लाल**

20 से 25 किमी की रफ्तार से चलेगी पछिया हवा

बुधवार को भी मौसम की स्थिति लगभग मंगलवार जैसी ही रहेगी। अगले एक दो दिनों तक खासकर तराई के क्षेत्रों में सुबह में घना कुहासा छाया रहेगा। उन्होंने कहा की हवा की गति भी थोड़ी अधिक लगभग 20 से 25 किलोमीटर प्रति घंटे रहेगी। हवाओं की वजह से ठिठुरन जैसी स्थिति बनी रहेगी। हालांकि उन्होंने बताया की बुधवार को तापमान ज्यादा कम नहीं होगा।
- डॉ. अब्दुस सत्तार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम विभाग

असर : लंबी दूरी की ट्रेनें घंटों देरी से चली

कोहरा के कारण लंबी दूरी की ट्रेनों के लेट होने से यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। भीषण ठंड में उन्हें स्टेशन पर घंटों इंतजार करना पड़ रहा है। इसमें बड़े शहरों से लौटती ट्रेन 20504 डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस एक घंटा, 02570 दरभंगा क्लोन एक्सप्रेस साढ़े तीन घंटे, 12554 वैशाली सुपरफास्ट एक्सप्रेस एक घंटे, 12562 स्वतंत्रता सेनानी चार घंटे, 15708 आम्रपाली एक्सप्रेस दो घंटे विलंब से चलने की सूचना है।

खतरा : आलू की फसल पर झुलसा रोग का असर

फसलों के बारे में वैज्ञानिक के अनुसार मौसम की ऐसी स्थिति में खासकर आलू में झुलसा रोग के लगने की संभावना है। इसलिए आलू उत्पादक किसान फसलों की निगरानी करते रहे तथा जरूरत पड़ने पर दवाओं का छिड़काव करें। बताया कि इस समय विंड चिल फैक्टर काम कर रहा है ।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 11 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में कुछ दिनों तक ठंड में कमी हो सकती है लेकिन सुबह और रात में ठंड का असर रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस बीच पछुआ हवा छह-आठ किमी प्रतिघंटा चलेगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
08 जनवरी	19.5	9.2
09 जनवरी	19.5	9.0
दरभंगा		
08 जनवरी	20.0	9.2
09 जनवरी	21.0	9.2
पटना		
08 जनवरी	22	12
09 जनवरी	22	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 08-01-2024

तेज पछिया हवा के कारण अधिकतम तापमान सामान्य से 3.7 और न्यूनतम सामान्य से दो डिग्री कम हुआ दर्ज, बढ़ी कनकनी

कोहरे से लिपटा रहा शहर, सर्द हवा ने किया बेहाल

मौसम का मिजाज

समस्तीपुर, नगर संवाददाता। जिले में लगातार चौथे दिन मंगलवार को भी कड़ाके की ठंड का कहर जारी रहा। सुबह से ही कोहरे से लिपटे शहर में पूरे दिन बर्फीली हवा से लोग बेहाल रहे। सुबह कोहरे में लिपटा रहा। इस दौरान पूरे दिन बर्फीली हवा चलने से लोग बेहाल रहे। वहीं घरों से कम ही निकले। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अनुसार अभी एक-दो दिन ऐसी ही स्थिति बनी रहेगी। अधिकतम तापमान सामान्य से 3.7 कम 16.0 डिग्री सेल्सियस रहा वहीं न्यूनतम तापमान सामान्य से दो कम 10.9 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। दिनभर करीब 16.8 किमी/घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चली।

मौसम विज्ञान केन्द्र के अनुसार अभी ठंड का दौर जारी रहेगा। सुबह में हाड़ कंपाने वाली सर्दी से शहर की सड़कों पर देर तक वीरानगी दिखी। ठंड का असर आलू, मिर्च व दूसरी लत्तर वाली फसलों पर पड़ने लगा है। छिटपुट रूप से झुलसा का प्रकोप शुरू होने के बाद किसान दवा का छिड़काव व सिंचाई कर फसलों को बचाने में जुटे हैं। चार दिनों से पड़ रही ठंड व सर्द हवा से पशुओं को सर्दी व बुखार होने से पशुपालक परेशान हैं। सदर अस्पताल सहित जिले के पीएचसी, सीएचसी व रेफरल अस्पतालों में ठंड जनित मरीजों की संख्या में 40 फीसदी तक इजाफा हुआ है। नवजात व छोटे बच्चों में कोल्ड डायरिया, दमफूली व निमोनिया का प्रकोप बढ़ रहा है। वयस्कों व बुजुर्गों में भी सर्दी, खांसी, बदन दर्द, सांस फूलने व सीने में दर्द जैसी समस्याएं ठंड की वजह बढ़ गई हैं। क्लीनिकों में भी मरीजों की भीड़ बढ़ गई है।

16 घंटे की रफ्तार से चली पछिया हवा

■ पछिया के कारण दिन में भी कम लोग निकले

सड़कों पर रेंगते रहे वाहन : सुबह में घने कुहासे की वजह सुबह में एनएच व एसएच पर वाहनों का परिचालन बाधित रहा। दृश्यता करीब सौ मीटर रहने से वाहन रेंगते रहे। सुबह में सड़कों पर शहर में टोटो व ई रिक्शा का परिचालन काफी कम रहा। वहीं लोग भी पूरी तरह से अपने को गरम कपड़ों में लपेट कर ही बाहर निकले। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में और घना कुहासा छाएगा। आसमान में बादल छाने के साथ उत्तर बिहार के कुछेक स्थानों पर बूंदाबांदी की भी सूरत बन रही है।

ऊनी व गर्म कपड़े की बढ़ी मांग : पांच दिनों से कड़ाके की सर्दी पड़ने से शहर से लेकर गांवों तक ऊनी कपड़ों की मांग बढ़ गई है। शहर में खुली करीब पचास से अधिक सीजनल दुकानों में भीड़ भाड़ दिख रही है।

मंगलवार को ताजपुर की मोतीपुर सब्जी मंडी में ठंड के कारण पसरा सन्नाटा। ठंड के कारण मंडी में काफी कम ग्राहक और व्यापारी पहुंचे। दूसरी ओर विद्यापतिनगर में लाइट जलाकर चलते वाहन।

ठंड से कारोबार में छाई मंदी, बाजार में सन्नाटा

ताजपुर। ताजपुर एवं आसपास में लगातार ठंड के प्रकोप से लोगों का जीना दूभर हो गया है। ठंड के कारण आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। हाट, बाजार, सब्जीमंडी आदि जगहों पर कारोबार में मंदी छाई हुई है। लोग जैसे तैसे अलाव के सहारे दिन समय काटने लगे हैं। गांव में खेती किसानी भी प्रभावित है। सर्द हवा के कारण लोगों को घर से निकलना मुश्किल हो गया है। दिन बीतने व दोपहर में मौसम के खुलने पर ही लोग कुछ काम कर पा रहे हैं। मंगलवार को ताजपुर की मोतीपुर सब्जी मंडी में भी सन्नाटा पसरा रहा। बहुत कम संख्या में खरीदार पहुंचे।

शहर में 18 स्थलों पर नगर निगम ने जलवाया अलाव

समस्तीपुर, नि.सं.। कड़ाके की ठंड व शीतलहर से लोगों को बचाने के लिए पहली जनवरी 25 को शहर में सात प्रमुख स्थलों पर अलाव की व्यवस्था के बाद मंगलवार को कुल 18 जगहों पर अलाव की व्यवस्था की गई है।

नगर निगम ने वार्ड जमादार व दैनिक श्रमिकों के माध्यम से अलाव की सूखी लकड़ियां उक्त चौक चौराहों और सार्वजनिक स्थलों पर गिरवाया था। यह लकड़ियां शाम साढ़े छह बजे तक जलती देखी गई। इस बीच, नगर निगम के सहायक प्रभारी सफाई निरीक्षक मनोज कुमार गुप्ता ने बताया कि यह अलाव देर रात तक लोगों को ठंड से राहत देगी। हर स्थल पर 20-22 किलो लकड़ियां नगर निगम से आपूर्ति करायी गई है। जेल चौक, धर्मपुर लक्की वस्त्रालय चौड, राम जानकी मन्दिर पंजाबी कॉलोनी, बस स्टैंड, भोला साह चौक, लखना चौक, गर्ल्स हाई स्कूल चौक, भोला टॉकीज रेल गुमटी बिगबॉस, मगरदही चौक, काली मन्दिर चौक पर अलाव जलाया गया है।

Hindustan 08-01-2025

सामान्य से 3.7 डिग्री सेल्सियस नीचे लुढ़का अधिकतम तापमान

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

ठंड परवान पर है. बुधवार को अधिकतम तापमान लुढकर 16 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया. यह सामान्य से 3.7 डिग्री सेल्सियस कम है. वैसे अगले तीन दिनों के लिए जारी पूर्वानुमान में मौसम का मिजाज शुष्क रहने की संभावना व्यक्त की गयी है. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित मौसम विभाग की ओर से जारी अनुमान में बताया गया है कि आसमान में बादल तैरते दिखेंगे. सुबह के समय में हल्के से मध्यम दर्जे के कुहासे छाये रह सकते हैं. इस दौरान पछुआ हवा चलने की संभावना जतायी गयी है. इसकी औसत रफ्तार 6 से 9 किलो मीटर प्रतिघंटे के आसपास रह सकती है. इस अवधि में अधिकतम तापमान के 18 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. वहीं न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. मौसम विभाग के मुताबिक बुधवार को अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया है. यह सामान्य से 3.7 डिग्री सेल्सियस नीचे है. इसी तरह न्यूनतम तापमान 10.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है. यह सामान्य से 1.9 डिग्री सेल्सियस अधिक है.

प्रभात खबर
Thursday, January 9, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/677ecd9bf0a399417d834f1

मौसम • अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री व न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान

12 तक आसमान में छाए रहेंगे हल्के बादल, 6-9 किमी की रफ्तार से चलेगी पछिया हवा, और बढ़ेगी कनकनी

भास्कर 9/1/25 पेज 15

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

पूर्वानुमान की अवधि में सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहने के आसार

उत्तर बिहार के जिलों में 12 जनवरी तक आसमान में हल्के बादल रह सकते है। इस अवधि में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मौसम विभाग के वैज्ञानिक के अनुसार इस बीच अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 6 से 9 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। दूसरी ओर सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है। विलम्ब से बोयी गयी गेहूं की फसल जो 21 से 25 दिनों की हो गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूं की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद खेत में उगे विभिन्न प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टेयर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टेयर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर समान रुप से फसल में छिड़काव करें। समय से बोयी गई गेहूं की 45 से 50 दिनों की फसल जो कल्ले निकलने की अवस्था में है, उसमें दूसरी सिंचाई करें।

फसल पर दवा का छिड़काव करते किसान।

अगात मटर की फसल में फफूंद लगने पर करें दवा का छिड़काव

अगात बोयी गयी मटर की फसल में चूर्णिल फफूंदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से बचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें। सरसों में सफेद रतुआ (काईट रस्ट) रोग की निगरानी करें। इस रोग का प्रकोप फसल में दिखने पर इसके बचाव के लिए क्लोरथालोनील दवा 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। प्याज की रोपाई करें। पौथ की रोपाई अधिक गहराई में नहीं करें। पिछले माह रोपी गयी प्याज में निकाई-गुड़ाई एवं हल्की सिंचाई करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 11 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में कुछ दिनों तक ठंड में कमी हो सकती है लेकिन सुबह और रात में ठंड का असर रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस बीच पछुआ हवा छह-आठ किमी प्रतिघंटा चलेगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
09 जनवरी	17.0	11.0
10 जनवरी	19.5	11.2
दरभंगा		
09 जनवरी	18.0	11.0
10 जनवरी	19.5	11.2
पटना		
09 जनवरी	21	12
10 जनवरी	22	13

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 09-01-2025

ठंड में जनजीवन अस्तव्यस्त, अगले चार दिनों तक छाए रहेंगे बादल

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : बीते आठ दिनों से पड़ रही कड़ाके की ठंड से जिले में जन जीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। घने कोहरे के कारण वाहनों के परिचालन में चालकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बीते दिसंबर माह तक लोगों को ठंड का अहसास नहीं हो रहा था और नए वर्ष के प्रवेश के साथ ही ठंड का असर शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र में काफी बढ़ गया है।

मंगलवार शाम से ही घना कोहरा लगना शुरू हो गया था। यह क्रम बुधवार को 10:00 बजे दिन तक लगा रहा। 50 फीट तक देखने में भी काफी दिक्कत हो रही थी। इसके कारण सड़क पर वाहनों की रफ्तार काफी कम हो गई। घने कोहरे के कारण दिन में भी वाहन चालकों को हेड लाइट जलाकर परिचालन करना पड़ा। सुबह 10 बजे के बाद से

कड़ाके की ठंड के कारण बाजार में कम देखी जा रही चहल-पहल दोपहर तक अधिकांश बाजारों में पसरा रहता सन्नाटा

मौसम साफ हुआ। कुछ घंटे के लिए लोगों को धूप भी मिली। शाम होते ही आसमान फिर घने कोहरे से ढंक गया। कड़ाके की ठंड के कारण बाजार में भी चहल-पहल कम गई है। दोपहर तक बाजार में सन्नाटा छाया रह रहा है। बुधवार को अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 10.9 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। वही आठ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से पछिया हवा चली जिससे राहगीरों को काफ़ी परेशानी झेलनी पड़ रही है।

अगले चार दिनों तक जारी रहेगा ठंड : संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तार के अनुसार उत्तरी बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक ठंड का प्रभाव जारी रहेगा। इस दौरान आसमान में हल्के बादल छाए रह सकते हैं और सुबह के समय हल्के से मध्यम कुहासा रहने की संभावना है। इस दौरान 6 से 9 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने का अनुमान है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार अगले चार दिनों में अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। उन्होंने किसानों से कहा कि वे अपनी फसलों पर पूरी सतर्कता बरतें। खासतौर पर विलंब से बोई गई गेहूं की फसल, जो 21 दिन की हो चुकी है, उसमें सिंचाई जरूर करें। ऐसा करने से फसल को ठंड के प्रभाव से बचाया जा सकेगा। मौसम विभाग का कहना है कि ठंड के इस दौर में तापमान में मामूली उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। इस लिए समय पर फसल की देखभाल और सिंचाई के साथ अन्य जरूरी कृषि कार्यों पर ध्यान देना जरूरी है।

ठंड से बचने के लिए आग तपते लोग • जागरण

Dainik Jagran 09-1-2025

मौसम : ठंड से राहत के आसार नहीं, तापमान गिरने का सिलसिला रहेगा जारी, बढ़ेगी आमजन की मुश्किलें

समस्तीपुर (एसएनबी)। बीते कुछ दिनों से कनकनी और हाड कंपाने वाली ठंड ने लोगों का जीना दुश्वार कर रखा है। उपर से मंगलवार की रात हुई हल्की बारिश ने कोढ में खाज का काम किया है। लोग बाग घरों में अलाव के सहारे दुबकने को मजबूर हो गये है। बुधवार को न्यूनतम तापमान समान्य से 1.9 डिग्री अधिक 10.9 डिग्री सेल्सियस एवं अधिकतम तापमान समान्य से 3.7 डिग्री कम 16 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम वैज्ञानिको की मानें तो पछिया हवा और वातावरण में नमी के कारण अभी हाड कंपाती ठंड का दौर जारी रहेगा। इस बाबत मौसम व जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से मौसम परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 08-12 जनवरी, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते है। इस अवधि में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 6 से 9 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

कोहरे से घिरी सुबह।

Rashtriya Sahara 09-01-2025

मछली पालन को लेकर दी गई जानकारी

प्रतिनिधि, पूसा

तालाब बनाने के लिए अच्छी मिट्टी वाली जगह का चुनाव करें. यह बात डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिक डा अभिलिप्षा विश्वल ने कही. उन्होंने बताया कि मछलीपालन के लिए तालाब में साल भर पानी रहना चाहिए. तालाब बनाने के लिए मिट्टी के प्रकार, उर्वरकता, जलधारण क्षमता पर ध्यान दें.तालाब की तैयारी के लिए तालाब से सभी जलीय पौधे, खाऊ और छोटी-छोटी मछलियों को निकाल दें. अगर इन्हें सही से दाना और घास खिलाई जाये तो यह 6-7 महीनों में ही 1 किलो से अधिक की हो जाती है. ध्यान रहे कि मछलियों की प्रगति 1 किलो से ऊपर की हो जाये ताकि रेट अच्छी मिल सके. दिन में 1-2 बार खाना दे देना चाहिए लेकिन उन्हें पेटभर से ज्यादा आहार नहीं देना चाहिए. परिपक्व होने में लगने वाला समय प्रजातियों और अलग-अलग मछलियों के बीच अलग-अलग होता है. कम जीवन अवधि वाली मछलियां जल्दी परिपक्व हो जाती हैं. खुश मछलियां स्वस्थ मछलियां होती है. सक्रिय रूप से अपने आसपास की चीजों का पता लगाती है. खाने के समय का आनंद लेती है. तैरने के लिए उनके पास पर्याप्त जगह होती है. उनमें बीमारी के कोई स्पष्ट लक्षण नहीं होते हैं. अपने टैंक के साथियों के साथ मिलजुल कर रहती है.

प्रतिभागियों को तकनीक बताते मत्स्य वैज्ञानिक .

प्रभात खबर
Friday, January 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67801b6742b3035f6e0f3a21

मिलेट फसलों के उत्पादन व मूल्यवर्धित उत्पाद से बढ़ेगी आय : डॉ राय

प्रतिनिधि, पूसा

कदन्न (मिलेट) फसलों के उत्पादन और मूल्यवर्धित उत्पाद से किसान अपनी आय दोगुनी कर सकते हैं. साथ ही अपने भोजन में श्रीअन्न मिलेट को नियमित रूप से समाहित कर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी निजात पा सकते हैं. मोटे अनाज पोषण से भरपूर होता है, जो पोषण प्रदान कर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है. यह बातें डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक बीज डॉ. डीके राय ने कही.

उन्होंने कहा कि कदन्न (मिलेट) फसलों के उत्पादन और मूल्यवर्धित उत्पाद विषयक किसानों हेतु आयोजित त्रिदिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री अन्न फसलों के उत्पादन के लिए किसान बन्धुओं को प्रेरित किया. स्वागत भाषण मिलेट उत्कृष्टता एवं मूल्यवर्धित उत्पाद परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. श्वेता मिश्रा ने किया. डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह, डॉ. कौशल किशोर एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भी कृषकों को लघु कदन्न फसलों के गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन के लिए महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी. संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया. मौके पर डॉ. राजेश कुमार, जयशंकर प्रसाद मौजूद थे.

किसानों के साथ वैज्ञानिक.

पूर्व मध्य

ई–ऑक्शन सूच

भारत के राष्ट्रपति की ओर

वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, समस

समस्तीपुर (SPJ) रेलवे स्टेशन

साईकिल, स्कूटर, मोटरसाईकिल

कॉलोनी, समस्तीपुर (SPJ) स्थित

टेम्पू एवं ई–रिक्सा स्टैण्ड तथा भैरो

थरबिटिया (TN) रेलवे स्टेशन

साईकिल, मोटरसाईकिल, स्कूटर,

टेम्प एवं ई–रिक

प्रभात खबर

Friday, January 10, 2025

Samstipur

https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67801b6742b3035f6e0f3a2d

श्री अन्न से जुड़ी फसलों की खेती और इसके बीजों का उत्पादन किसानों के लिए लाभकारी, रोजगार भी मिलेगा : डॉ. डीके राय

10/1/25 भास्कर न्यूज | पूसा पेज 18

प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. डीके राय।

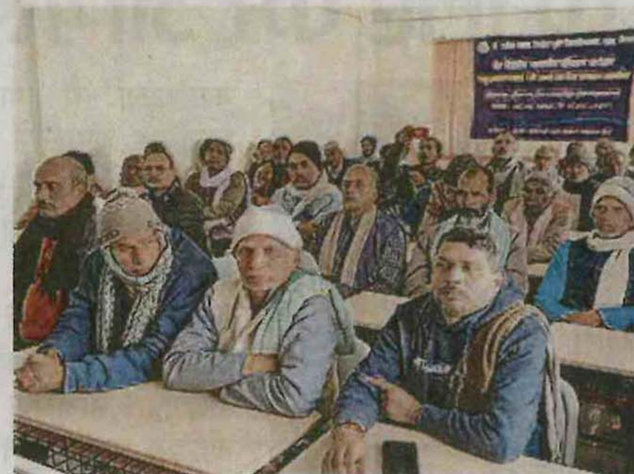

प्रशिक्षण में मौजूद किसान।

श्रीअन्न यानी (मिलेट्स) फसलों के उत्पादन और मूल्य वर्धित उत्पादों से किसान अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं। इतना ही नहीं किसान अपने भोजन में भी श्री अन्न (मिलेट्स) को नियमित रूप से समाहित कर अपने स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं से निजात पा सकते हैं। मिलेट्स यानी मोटा अनाज पोषण से भरपूर होता है। इसके सेवन से शरीर को भरपूर मात्रा में पोषण मिलने के साथ-साथ शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। ये बातें कृषि विवि पुसा के निदेशक बीज डॉ. डीके राय ने गुरुवार को पुसा विवि में कदन्न यानी मिलेट्स फसलों के बीज उत्पादन तकनीक विषय पर किसानों के लिए आयोजित हुए तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम में मौजूद किसानों को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए डॉ. डीके राय ने कहा कि श्री अन्न की खेती तथा श्री अन्न से जुड़े फसलों का बीज उत्पादन किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी है। श्री अन्न से जुड़े फसलों की खेती से जहां मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। वही इसकी खेती पर्यावरण के लिए भी अनुकूल होती है। श्री अन्न से जुड़े फसलों की खेती में कम मेहनत, कम पानी और कम उर्वरक की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने कहा कि किसान श्री अन्न के तहत ज्वार, रागी, मरुआ, बाजरा जैसे प्रमुख अनाजों की खेती कर कम लागत में ज्यादा आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि श्री अन्न में प्रोटीन, फाइबर, आयरन, कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम जैसे कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व पियें जाते हैं। उन्होंने श्री अन्न फसलों का उत्पादन करने को लेकर किसानों को प्रेरित भी किया। कार्यक्रम के दौरान विवि के मिलेट्स उत्कृष्टता एवं मुल्य वर्धित उत्पाद परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. श्वेता मिश्रा, सह अन्वेषक डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव, डॉ.मिथिलेश कुमार सिंह, डॉ.कौशल किशोर एवं अन्य वैज्ञानिकों ने किसानों को श्री अन्न से जुड़े विभिन्न फसलों के गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन को लेकर भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। मंच संचालन डॉ.मिनाक्षी द्विवेदी एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बेगूसराय व अन्य जिलों से पहुंचे कुल 35 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। मौके पर डॉ. राजेश कुमार, श्री जयशंकर प्रसाद आदि मौजूद थे।

Dainik Bhaskar 10-01-2025

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के वरीय वैज्ञानिक ने दी जानकारी

आलू में निकलने वाले फूल की वैज्ञानिक तकनीक से करें कटाई, उपज नहीं होगी प्रभावित : कृषि वैज्ञानिक

10/1/25 भास्कर न्यूज | पूसा पेज 15

आलू के पौधों में निकले फूल।।

आलू के पौधे में निकलने वाले फूल को काटकर हटा देना आलू उत्पादक किसानों के लिए फायदेमंद माना जाता है। ऐसा करने से आलू के पौधों की सारी ऊर्जा आलू कंद को मिलने लगती है. जिससे आलू के कंद का बेहतर विकास होने के साथ-साथ आलू से उच्च स्तरीय उत्पादन भी किसानों को प्राप्त होता है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि आलू में निकलने वाले फूलों को बढ़ने और बीज बनाने में पौधे की काफी ऊर्जा खर्च होती है जिससे कंदों के विकास में कमी आ सकती है।उन्होंने कहा की आलू के फूलों को हटाने का उद्देश्य है यह होता हैं कि पौधे अपनी पूरी शक्ति और पोषण कंदों को बढ़ाने में लगाएं जिससे उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता दोनों में सुधार हो। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि आलू के पौधे में जब फूल लगने लगते हैं तो यह संकेत होता है कि पौधा प्रजनन प्रक्रिया में प्रवेश कर रहा है। इस दौरान पौधों का ध्यान कंद बनाने के बजाय फूल और बीज को बनाने पर केंद्रित हो जाता है। जबकि आलू की खेती में बीजों के बजाय कंद मुख्य फसल होते हैं। इसलिए यह आवश्यक होता है कि पौधे की ऊर्जा को कंदों तक सीमित किया जाए। फूलों को काटने से पौधों की ऊर्जा का सही उपयोग सुनिश्चित होता है। आलू की फसल में फूल काटने के कई फायदे हैं। इन फायदों में से आलू के पौधे के ऊर्जा का सही उपयोग, उत्पादन में वृद्धि, रोग नियंत्रण, पौधे की वृद्धि में सुधार आदि। उन्होंने बताया कि आलू के पौधों से फूल काट देने के बाद से पौधा ज्यादा ताकतवर और स्वस्थ रहता है। इसके कारण कंदों में पोषक तत्वों का संचय अधिक मात्रा में होता है। फसल में कीटों का प्रकोप भी कम होता हैं। आलू में लगे फूल को काटने के लिए सही समय का चुनाव करना चाहिए। फूलों को तभी काटा जाना चाहिए जब वे पूरी तरह विकसित हो जाएं लेकिन बीज बनने की प्रक्रिया शुरू न हुई हो। फूल काटने के लिए धारदार और साफ उपकरणों का उपयोग करना चाहिए ताकि संक्रमण का खतरा न हो। आलू के पौधों की नियमित रूप से निगरानी करनी चाहिए और समय पर ही फूलों को हटाना चाहिए।

रखें सावधानी : कब नहीं काटने चाहिए आलू के फूल

कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि आलू के फूल को काटने का निर्णय किसान की आवश्यकताओं, जलवायु, फसल की स्थिति आदि पर निर्भर करती है। कुछ परिस्थितियों में फूल काटने की आवश्यकता नहीं होती हैं। यदि आलू की खेती बीज के उत्पादन के लिए की जा रही है तो फूलों को काटने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ठंडी जलवायु वाले क्षेत्रों में पौधों की ऊर्जा पहले से ही कंदों के विकास में केंद्रित रहती है। इसलिए फूल काटने की आवश्यकता कम हो सकती है। जैविक खेती में फूल काटने के बजाय पौधों को प्राकृतिक रूप से बढ़ने दिया जाता है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि यदि आलू के फूलों को गलत तरीके से काटा जाए तो पौधों को नुकसान हो सकता है। इससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है।

Dainik Bhaskar 10-01-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा नौ जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में कही–कहीं हल्के बादल आ सकते है। हालांकि मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों तक पछुआ हवा चलने के कारण ठंड जारी रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
10 जनवरी	19.0	8.0
11 जनवरी	19.0	9.0
दरभंगा		
10 जनवरी	19.0	9.0
11 जनवरी	20.0	9.5
पटना		
10 जनवरी	22	11
11 जनवरी	22	11

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-01-2025

बीज उत्पादन पर प्रशिक्षण शुरू

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक (बीज) डॉ. डीके राय ने कहा कि मिलेटस (श्री अन्न) पौष्टिक आहार है। इससे जुड़े फसलों के उत्पादन और मूल्य वर्धित उत्पाद से किसान अपनी आय को दोगुनी कर सकते है। दूसरी ओर इसे अपनी नियमित भोजन में शामिल कर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी निजात पा सकते हैं। वे गुरुवार को विवि के पोषक अनाज एवं मूल्य शृंखला उत्कृष्टता केंद्र के सभागार में राज्य के बेगूसराय समेत अन्य जिलों के किसानों को संबोधित कर रहे थे।

मौका था श्री अन्न के बीज उत्पादन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। स्वागत परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. श्वेता मिश्रा ने किया। मौके पर डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह, डॉ. कौशल किशोर एवं अन्य वैज्ञानिकों ने फसलों के गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन की तकनीकी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी ने एवं धन्यवाद डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया।

Hindustan10-01-2025

कदन्न फसलों के बीजों के उत्पादन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पोषक अनाज एवं मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केन्द्र कि ओर से कदन्न (मिलेटस) फसलों के बीजों उत्पादन बिषय पर आधारित तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र की शुरूआत करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. डी.के. राय ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए फसल के उत्पादन में बीज के गुणवत्ता की भुमिका को अहम् बताया और मिलेट फसलों के बीजों उत्पादन में विवि की ओर किए जा रहे शोध पर विस्तृत जानकारी दिया। उन्होंने ने कहा कि किसानो के सहभागिता से बीजों उत्पादन कार्यक्रम को तीव्रगति दिया जा सकता है। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. श्वेता मिश्रा ने श्री अन्न फसलों के बीज उत्पादन के लिए प्रशिक्षुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि किसान मिलेटस फसल के मूल्य वर्धित उत्पाद से अपनी आय को दुगुनी कर सकते है। कार्यक्रम का संचालन डॉ मिनाक्षी द्विवेदी ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया। मौके पर डॉ. रितंभरा सिंह, डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह, डॉ. कौशल किशोर, राजेश कुमार सहित प्रशिक्षु उपस्थित थे।

प्रशिक्षण में शामिल निदेशक, प्रशिक्षक व प्रशिक्षु।

Rashtriya Sahara 10-01-2025

पड़ौलिया में किया पपीता के खेती का अवलोकन

पीपराकोठी। जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल ने गुरुवार को प्रखंड क्षेत्र के सूर्यपुर पंचायत के पड़ौलिया गांव में उद्यान विभाग द्वारा संचालित योजना गांव की बागवानी, हमारे गौरव की कहानी के तहत उद्यानिक फसलों की व्यवसायिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कलस्टर में बागवानी की योजना -।। सेवानिवृत्त सैनिक राजेश कुमार पपीता की खेती का अवलोकन किया। उद्यान विभाग से अनुदानित दर पर पपीता रेड लेडीताईवानी 786 का पौध प्राप्त कर खेती कर रहें किसान श्री कुमार से मुलाकात कर जानकारी प्राप्त की गयी। श्री कुमार द्वारा बताया गया कि उद्यान विभाग से प्रषिक्षण एवं समय-समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र पीपराकोठी के वैज्ञानिक का मार्गदर्शन प्राप्त कर खेती करना शुरू किया। जिसमें एक एकड़ में लागत हटाकर प्रतिवर्ष दस लाख तक आमदनी होता है। साथ ही इस खेती को बढ़ावा देने हेतु उद्यान विभाग द्वारा कलस्टर में बागवानी की योजना-।। के लिए भी चयन किया गया है। जिसमें 25 एकड़ की कलस्टर बनायी गई है। जिसमें मेरे साथ 17 ग्रामीण जुडे है। प्रति एकड़ एक लाख रुपये अनुदान का प्रावधान है। जिसमें पौध रोपण सामग्री, ड्रीप, घेरावन्दी इत्यादि सम्मिलित है। बताया गया कि जिले के बाहर एवं जिले के अन्दर से पपीता की खेती हेतु इच्छुक किसान एवं महिलाए भी जानकारी प्राप्त करने के लिए आ रहें है। जिनकों खेती से संबंधित जानकारी भी उपलब्ध कराई जा रही है। डीएम श्री जोरवाल ने सेवानिवृत्त सैनिक किसान के खेती की सराहना करते हुए अन्य युवाओं को भी प्रेरित करने की बात कही। मौके पर डीएम श्री जोरवाल के साथ डीएओ मनीष कुमार, जिला उद्यान पदाधिकारी विकाश कुमार, प्रखंड उद्यान पदाधिकारी देव प्रकाश, प्रियंका कुमारी, राजेश्वर सिंह, देवा श्री सहित अन्य पदाधिकारी व किसान मौजूद थे।

निरीक्षण करते डीएम ।

Rashtriya Sahara 10-01-2025

रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने की जरूरत : डॉ. संजय

जैविक खेती करते किसान.

प्रतिनिधि, पूसा

खेतों में कृषि रसायनों के प्रयोग और उसकी निर्भरता को धीरे-धीरे हर हाल में कम करना होगा. ऐसा तभी संभव है जब कृषि वैज्ञानिक और कृषि विभाग से जुड़े तमाम अधिकारी किसानों को जैविक खेती या जीरो बजट खेती करने के लिए प्रेरित करेंगे. मौजूदा समय में जैविक खेती को लोकप्रिय बनाना अब अत्यंत जरूरी हो गया है. ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के सह निदेशक अनुसंधान एवं विवि के वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह ने कही. उन्होंने कहा कि एक समय था जब कृषि वैज्ञानिकों ने फसल के उत्पादन को बढ़ाने तथा बढ़ती जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराने को लेकर किसानों को खेतों में कृषि रसायनों का संतुलित उपयोग करने का सुझाव दिया था. लेकिन, आज वहीं कृषि वैज्ञानिक खेती बाड़ी में अंधाधुंध प्रयोग हो रहे कृषि रसायनों से काफी चिंतित हैं. खेतीबाड़ी में जोर शोर से प्रयोग हो रहे तमाम तरह के रासायनिक खाद और दवाओं ने कृषि उत्पादों को विषैला बना दिया है. इस विषैले भोजन को ग्रहण करने से आज लोगों में कैंसर के साथ-साथ लिवर, किडनी की समस्याएं तेजी से बढ़ रही है. उन्होंने कहा कि शुरुआत के समय में भी कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खेती में अत्यंत आवश्यक और अंतिम विकल्प के रूप में ही कृषि रसायनों का प्रयोग करने के लिए कहा था. लेकिन, आज के दौर में किसानों ने कृषि रसायनों के प्रयोग को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि अब फसल के उत्पाद ही बिषैले बनते जा रहे हैं. जैविक खेती करने वाले किसान से लेकर जैविक उत्पाद की खरीदारी करने वाले सभी लोग आज इस ओर आकर्षित हो रहे हैं.

प्रभात खबर
Saturday, January 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67816e29b9abe7833ec08884

मिसाल-ऐ-भारत अवार्ड से विवि कर्मी सम्मानित

पूसा. मिसाल द प्राइड ऑफ सोसाइटी पंजाब विशेष रूप से सोसाइटी के संस्थापक महकप्रीत सिंह ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कर्मी डॉ. राजेश कुमार को सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए एक सेमिनार में सम्मानित किया है.

प्रभात खबर
Saturday, January 11
Samstipur
https://epaper.prabh

गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन कदन्न फसलों की मूल्य श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण स्तंभ: डॉ. श्वेता

प्रतिनिधि, पूसा

प्रमाण पत्र के साथ प्रतिभागी.

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित पोषक अनाज व मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र के सभागार में तीन दिवसीय आवासीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सह सहभागिता प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जिसमें मिलेट परियोजना (श्री अन्न) की मुख्य अन्वेषिका डॉ. श्वेता मिश्रा ने स्वागत भाषण करते हुए कहा लघु कदन्न फसलों से संबंधित कृषक सहभागिता कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कृषकों का आह्वान किया. गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन कदन्न फसलों के मूल्य श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, बल्कि गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन एवं सुनिश्चित बीज उपलब्धता इन फसलों के उत्पादकता बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगा. मंच संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी कर रही थीं. धन्यवाद ज्ञापन प्रशिक्षण निदेशक डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. ऋतंभरा सिंह एवं सभी सह अन्वेषक एवं वैज्ञानिकों में डॉ. शैलेश कुमार, डॉ. कौशल किशोर, डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव, डॉ. मिथिलेश कुमार, डॉ. गीतांजलि चौधरी, डॉ. सुमित कुमार सिंह एवं डॉ. सुधानंद लाल प्रसाद तथा डॉ. राजेश कुमार, सहायक भी उपस्थित थे. कृषक उत्पादन संगठन लिमिटेड, तेतरी, बेगूसराय के समन्वयक जयशंकर कुमार समेत बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, पटना व समस्तीपुर जिले के 35 कृषक सहभागी सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त कर गुणवत्तायुक्त कदन्न बीज उत्पादन प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त किया.

प्रभात खबर
Saturday, January 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67816e29b9abe7833ec08863

27 दिसंबर 2024 से 2 जनवरी 2025 तक इस क्षेत्र में बारिश सामान्य से काफी कम रही है

जनवरी में फसलों की देखभाल तय करेगा उपज

रबी फसलों की देखभाल में जरा सी लापरवाही से बेकार हो जायेगी किसानों की मेहनत

रबी की फसल उगाने वाले किसानों के लिए जनवरी का महीना अहम है. वो फसलें, जो अब तक बोई जा चुकी थीं, उनके फलने-फूलने का वक्त शुरू होता है. जनवरी में तापमान में उतार चढ़ाव के साथ गिरावट शुरू हो जाती है. यानी पाला, कोहरा और ओला जैसी घटनाओं का खतरा बढ़ जाता है. ऐसे में किसानों को अलर्ट रहने की जरूरत है.

संतुलित उर्वरक, सही पानी ही फसल सुरक्षा की गारंटी

रबी फसलों के अच्छे उत्पादन के लिए मिट्टी का परीक्षण करवाना चाहिए. बिहार कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ अनिल कुमार सिंह बताते हैं कि संतुलित उर्वरक, सही पानी और खरपतवार का सही प्रबंधन ही फसल को सुरक्षित रखता है. फसल थोड़ी देर से बोई गई है, तो उसे भी ध्यान से देखना होगा. उसे पानी की जरूरत हो सकती है. कम तापमान और धूप की कमी के कारण कई बीमारियां भी फसलों को घेर सकती हैं. इसलिए, किसानों को अपनी फसलों पर विशेष ध्यान देना होगा. कुल मिलाकर, जनवरी का महीना रबी फसलों के लिए गेम-चेंजर साबित हो सकता है.

डॉ एके सिंह

इस समय अधिकांश जिलों में 100% बारिश की कमी रही है, जिससे किसानों के लिए संकट बढ़ गया है. विशेषज्ञ किसानों को सलाह दे रहे हैं कि वे अपनी फसलों की सही देखभाल करें और इस सूखे मौसम का सामना करने के लिए समय पर सिंचाई और कीट नियंत्रण उपाय करें. खासकर गेहूं और अन्य संवेदनशील फसलों को इस मौसम में विशेष ध्यान की आवश्यकता है.

उत्तर बिहार में वर्षा की कमी, रबी पर गंभीर असर

उत्तर बिहार में हाल ही में बारिश की कमी ने कृषि क्षेत्र में चिंता बढ़ा दी है. मौसम विभाग द्वारा जारी अनुमान के अनुसार, 27 दिसंबर 2024 से 2 जनवरी 2025 तक इस क्षेत्र में बारिश सामान्य से काफी कम रही है. इससे मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, दरभंगा, शिवहर, सीतामढ़ी, पूर्वी चंपारण, पश्चिम चंपारण, मधुबनी में रबी फसलें जैसे गेहूं, मक्का और सब्जियों पर प्रतिकूल असर पड़ा है. मौसम विभाग के अनुसार, सूखा जारी रहने की संभावना है.

सही देखभाल से गेहूं का बढ़ा सकते उत्पादन

जनवरी में गेहूं के लिए कृषि कार्यों का सही समय पर शुरुआत करना बहुत जरूरी है. अगर आपने गेहूं की फसल सही समय पर बोई है तो दूसरी सिंचाई बुआई के 40-45 दिन बाद करनी चाहिए, तीसरी सिंचाई बुआई के 60-65 दिन बाद गांठ बनने की अवस्था में करनी चाहिए. डॉ रोहित मौर्य, विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)कृषि विज्ञान केंद्र तुर्की का कहना है कि सिंचाई के बाद खेत में पैर न चिपके, तब नाइट्रोजन की शेष एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें. भारी मृदा में प्रति हेक्टेयर 132 किग्रा यूरिया (60 किग्रा नाइट्रोजन) की टॉप ड्रेसिंग पहली सिंचाई के 4-6 दिन बाद की जाती है, जबकि हल्की मृदा में 88 किग्रा यूरिया (40 किग्रा नाइट्रोजन) का छिड़काव पहली सिंचाई के बाद किया जाता है. देर से बोई गई गेहूं की फसल में सिंचाई के बाद नाइट्रोजन का छिड़काव करना जरूरी होता है. गेहूं की फसल में खरपतवारों का नियंत्रण भी अहम है, बुआई के बाद इनका नियंत्रण करने के लिए सल्फोसल्फ्यूरान या क्लोडिना कॉप जैसी दवाओं का छिड़काव करें.

डॉ रोहित मौर्य

इसके अलावा, गेहूं की फसल में जिंक और आयरन की कमी के लक्षण दिखने पर पत्तियों पर जिंक सल्फेट और आयरन सल्फेट का घोल छिड़कने से फसल को बचाया जा सकता है. बीमारियों से बचाव के लिए प्रोपिकोनोजोल या मैंकोजेब का छिड़काव भी फायदेमंद हो सकता है. अगर खेत में चूहे हैं, तो जिंक फास्फाइड या एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया से बने चारे का इस्तेमाल कर सकते हैं.

जौ की फसल को पाला ही नहीं चूहों से भी नुकसान

जनवरी का महीना जौ की फसल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है. इस समय जौ के विकास में तीव्र वृद्धि होती है. जौ की फसल में दूसरी सिंचाई बुआई के 55-60 दिन बाद गांठ बनने की अवस्था में करनी चाहिए. सिंचाई के बाद, जब खेत में पैर न चिपके, तब नाइट्रोजन की शेष एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करना चाहिए. यह फसल की वृद्धि और विकास को बेहतर बनाता है. सलोनी कुमारी ,पारास्नातक छात्रा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की सलाह है कि जौ की फसल में खर पतवार नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 200 ग्राम प्रति हे. या क्यूनालफास 25 ई. सी. 250 ग्राम प्रति हे. का प्रयोग किया जा सकता है. यह पत्ती और तना भेदक की रोकथाम में मदद करता है. इसके अतिरिक्त, फफूंदजनित रोगों की संभावना होने पर प्रोपिकोनोजोल 0.1 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें. मोल्या रोग में छोटे, गोलाकार सफेद चमकते हुए सूत्रकृमि जड़ों पर दिखाई देते हैं, जो जौ की फसल में नुकसान पहुंचाते हैं. इस रोग के नियंत्रण के लिए बुआई के समय 6 किग्रा. एल्डिकार्ब या 13 किग्रा. कार्बोफ्यूरान खाद में मिलाकर डालें. इससे मोल्या का प्रकोप कम होता है और जड़ों का विकास ठीक से होता है. चूहों से बचाव के लिए जिंक फास्फाइड या एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग किया जा सकता है. यह चूहों से फसल को सुरक्षित रखने के लिए अत्यंत प्रभावी है. जनवरी के महीने में पाले का खतरा अधिक होता है, जो फसलों को नुकसान पहुंचा सकता है. पाले से बचाव के लिए खेतों के आसपास धुआं करें.

सलोनी कुमारी

सर्दियों में मछली के प्राकृतिक आहार में कमी हो जाती है

सर्दियों के मौसम में मछली पालनकों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है. मत्स्य पालन विशेषज्ञ डॉ नूतन (डीएफओ, तिरहुत परिक्षेत्र) ने कहा कि मछली एक ठंडे खून वाली प्राणी है. सर्दियों में इसके शरीर का तापमान भी घट जाता है. धूप की कमी के कारण प्राकृतिक आहार की कमी हो जाती है. इससे मछली की वृद्धि कम हो जाती है. मछली के लिए 25 से 28 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा माना जाता है. इसलिए, मछली की वृद्धि दर के लिए तालाब में 6 फीट पानी की गहराई बनाए रखना आवश्यक है. जब पानी का तापमान 15 डिग्री से नीचे गिर जाए, तो शाम के समय ट्यूबवेल - पंप सेट के माध्यम से फव्वारा के द्वारा पानी तालाब में डालकर सतह के पानी को गर्म रखा जा सकता है. मुख्यमंत्री तालाब मात्स्यिकी विकास योजनान्तर्गत इसके लिए अनुदान दिया जा रहा है. एरेटर का उपयोग करके घुलित ऑक्सीजन के स्तर को बनाए रखना चाहिए. मुख्यमंत्री तालाब मात्स्यिकी विकास योजना के अंतर्गत यांत्रिक ऐरेटर योजना जिला से अनुदान पर उपलब्ध है. अगर पीएच 7.0 से नीचे जाए, तो प्रति एकड़ 100 किग्रा चूना दो चरणों में डाला जाना चाहिए. सर्दियों में विभिन्न बैक्टीरियल, फंगल और परजीवी रोगों जैसे कि फिन रोट, गिल रोट, अल्सर और आर्गुलोसिस का खतरा बढ़ जाता है, इनसे बचाव के लिए 400 मिली सीआईएफएएक्स या 1-2 किग्रा केएमएनओ 04 प्रति एकड़ का छिड़काव किया जा सकता है. 50-100 किग्रा नमक प्रति एकड़ भी परजीवियों और गिल रोट से बचाव के लिए प्रभावी होता है.

डॉ नूतन

भास्कर 18/1/25 पेज 16

कृषि • किसानों को गेहूं व धान के आधार बीज के लिए अब भटकना नहीं पड़ेगा, प्रशिक्षण के साथ मिलेगी मदद

गेहूं व धान के आधार बीज का गांव में ही संरक्षण

जिले के हर गांव में दो-दो किसान आधार बीज के लिए चुने गए

. सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

किसानों को गेहूं व धान के आधार बीज के लिए कहीं भटकना न पड़े और उन्हें उनके ही गांव में बीज उपलब्ध कराया जा सके इसके लिए कृषि विभाग ने पहल शुरू कर दी है।जिले के हर गांव में दो-दो किसान धान और गेहूं का आधार बीज संरक्षित करेंगे और उन्हें इसके लिए राज्य सरकार 90 फीसदी तक अनुदान देगी। बता दें कि आधार बीज कृषि विश्वविद्यालयों, बड़े-बड़े कृषि फार्मों या फिर बड़े किसानों के पास संरक्षित होते हैं। कृषि अनुसंधान परिषद और अन्य केन्द्रीय एजेंसियों में भी इसे संरक्षित किया जाता है। बीज की कमी होने पर बड़ी मात्रा में राज्य के बाहर से भी आधार बीज मंगाये जाते हैं। कुछ किसान तो स्वयं भी बीजों को संरक्षित करते हैं। किसानों को आधार बीज के लिए इस समय कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। उन्हें बाहर से मंगाने पर अधिक धनराशि भी खर्च करनी पड़ती है। समय भी अधिक लग जाता है। कृषि विभाग के अनुसार गांवों में आधार बीज के संरक्षण से इच्छुक किसानों को उच्च गुणवत्ता के बीज स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो सकेंगे और उनका अपव्यय बचेगा। किसानों को अनाज के आधार बीज के संरक्षण के लिए कृषि विभाग ने व्यापक कार्ययोजना तैयार की है। इसके तहत अब गांवों में ही अनाज के आधार बीज को किसान अपने ही गांव में विकसित होता देख सकेंगे। कृषि विभाग की नई योजना के अनुसार 90 फीसदी तक किसानों को अनुदान भी दिया जाएगा। हर गांव स चयनित दो-दो किसानों को ही आधार बीज के संरक्षण की जिम्मेवारी दी जाएगी। फिलहाल इस योजना के लिए विभाग ने पूरे राज्य के लिए 50 करोड़ रुपए की धनराशि मंजूर की है। जरूरत के हिसाब से इसमें बढ़ोतरी की जाएगी। विभाग ने मॉडल के रूप में जिले में इस योजना पर काम प्रारंभ भी कर दिया गया है। भविष्य में किसानों की संख्या बढ़ाकर इससे नये किसानों को जोड़ा जाएगा।

मिलेगा लाभ : बीज संरक्षित करने पर किसानों को 90 फीसदी मिलेगा अनुदान

उजियारपुर प्रखंड के रामपुर समथू एफपीओ के तहत लगी गेहूं की फसल।

ई किसान भवन में बैठक में शामिल कृषि कर्मी

कृषि एप से किसानों को मिलेगी जानकारी, सभी कृषि कर्मी के साथ बनाएं समन्वय

विभूतिपुर | प्रखंड कृषि कार्यालय विभूतिपुर ई. किसान भवन के सभा कक्ष में शुक्रवार को बिहार कृषि एप पटना के नोडल पदाधिकारी प्रशांत पाठक द्वारा कृषि विभाग विभूतिपुर के सभी किसान सलाहकार, सभी तकनीकी सहायक प्रबंधक, सभी कृषि समन्वयक का बैठक किया गया। बैठक में बिहार कृषि एप के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही सभी लोगों को किसानों के मोबाइल में इस एप को डाउनलोड करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। प्रत्येक पंचायत के कम से कम 50 किसानों के मोबाइल में इस एप को डाउनलोड करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस एप को इंस्टाल करने के बाद किसानों को कृषि विभाग बिहार सरकार एवं केन्द्र सरकार की सभी योजनाएं की जानकारी एक ही जगह मिल जाती है। इससे किसान स्वयं ही हर योजनाओं का आवेदन भी कर लेंगे। इसके लिए उन्हें कहीं भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस एप पर मौसम की जानकारी तीन दिन पूर्व का हमेशा प्रसारित होता रहता है। मंडी भाव की जानकारी किसानों को मिलता रहेगा। विभिन्न कार्यालयों का सटीक जानकारी कर्मियों एवं पदाधिकारियों का नाम एवं मो. नं. उर्वरक एवं बीज दुकान पैक्स पैक्स गोदाम कोल्ड स्टोरेज आदि का सही सही जानकारी प्राप्त होता है। इसमें अच्छे कार्य करने के लिए विभूतिपुर उत्तर पंचायत के किसान सलाहकार प्रेमचन्द्र सिंह तथा नरहन पंचायत के कृषि समन्वयक कैलाश प्रसाद की सराहना किया गया तथा इन लोगों को प्रोत्साहित किया गया । मौके पर प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक शशिरंजन, किसान सलाहकार जानकी छाया, कन्हैया, रामकुमार झा, मानसिंह मधुकर, रंजीत कुमार, महावीर प्रसाद, बैजू सहनी, वचन देव शर्मा, सिकंदर रजक, अमरेश कुमार, मनोज कुमार, अरुण कुमार, तरुण कुमार, नूतन कुमारी, संजीत कुमार, बमबम कुमार, कृषि समन्वयक मुरारी सिंह, अभिजीत, आलोक, मुकेश रंजन, कैलाश प्रसाद,रतिकांत कुमार,अजीत कुमार, अंजनी कुमार, लेखापाल कुमार सुधांशु रंजन आदि उपस्थित थे।

भास्कर 13/1/25 पेज 13

मौसम • 3 से 6 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना, कनकनी और बढ़ेगी

उत्तर बिहार के जिलों में 15 तक 9-11 डिग्री सेल्सियस न्यूनतम तापमान रहने की संभावना, ठंड से राहत नहीं

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। इस अवधि में दिन एवं रात के तापमान में 1-2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। अधिकतम तापमान 19 से 21 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मौसम विभाग के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 6 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 94 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

पूसा में आलू के फसल पर स्प्रे करता किसान।

उत्तर बिहार के जिलों में 15 जनवरी तक हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। -डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम), डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

शुक्रवार का अधिकतम तापमान 21.9 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक और न्यूनतम तापमान 5.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.7 डिग्री सेल्सियस कम रिकॉर्ड किया गया।

गेहूं की फसल में सिंचाई के बाद नेत्रजन डालें

बिलंब से बोई गई गेहूं की फसल जो 21 से 25 दिनों की हो गई हो 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूं की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूं की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूं की बढ़वार को प्रभावित करती है। इससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें। मक्का की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इसकी सुंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुंच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। इससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधे को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुंचाती है। उपचार के लिए फोरेट 10 जी. या कार्बोफ्यूरान 3 जी. का 7-8 दाना प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथिन 250-300 मिली. दवा 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 12 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले कुछ दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते है। इस अवधि में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
वगहा		
11 जनवरी	20.0	8.0
12 जनवरी	21.0	9.0
बेतिया		
11 जनवरी	21.0	9.0
12 जनवरी	22.0	9.0
पटना		
11 जनवरी	24	11
12 जनवरी	24	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 11-01-2025

स्वामी विवेकानंद का जीवन देश के सभी नौजवानों के लिए प्रेरणादायक : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

शुभारंभ करते कुलपति डा पीएस पांडेय

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में स्वामी विवेकानंद जयंती समारोह मनाया गया. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा पीएस पांडेय ने कहा कि सम्मान के साथ समाज में समरसता लाने की जरूरत है. स्वामी विवेकानंद का जीवन नौजवानों के लिए प्रेरणादायक है. उन्होंने पूरे विश्व में भारत के महत्व को रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि स्वामी का विश्व धर्म सम्मेलन में शिकागो में दिया गया संबोधन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ भाषणों में से एक है. उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद के बारे में प्रसिद्ध विद्वान रोमा रोलां ने कहा था कि वे अद्वितीय विद्वान हैं, वे दुनिया भर में जहां भी गए सर्वश्रेष्ठ ही रहे. डॉ पांडेय ने कहा कि स्वामी जी सिर्फ एक संत ही नहीं बल्कि महान देशभक्त, दार्शनिक, वक्ता और मानवता प्रेमी थे. उनके विचार लोगों को सदियों तक प्रेरित करते रहेंगे. निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद हम सबके आदर्श हैं. डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह ने कहा कि विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको देश को विकसित बनाने का संकल्प लेना चाहिए. आयोजन छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा किया गया था. संचालन स्नातक बेसिक साइंस के छात्र हर्ष एवं फूड न्यूट्रीशन की छात्रा अंशु ने किया. जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा ज्योत्सना ने दिया. कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में छात्रों के बीच भाषण प्रतियोगिता, रंगोली एवं पोस्टर प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार एवं सर्टिफिकेट प्रदान किया गया. कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा डा मयंक राय, निदेशक अनुसंधान, डॉ ए के सिंह, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, जलवायु अनुकूल कृषि के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ रत्नेश कुमार झा, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन उपस्थित रहे.

प्रभात खबर
Tuesday, January 14, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678563e73e60135bc4ad5680

दैनिक भास्कर - 14-01-25 - P - 14

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में स्वामी विवेकानंद की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई

विवेकानंद का जीवन सभी के लिए प्रेरणादायक

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में सोमवार को स्वामी विवेकानंद की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर विवि के पंचतंत्र सभागार में एक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन खासकर नौजवानों के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने पूरे विश्व में भारत के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद का विश्व धर्म सम्मेलन शिकागो में दिया गया संबोधन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ भाषणों में से एक है। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद के बारे में प्रसिद्ध विद्वान रोमा रोलां ने कहा था कि वे अद्वितीय विद्वान थे जो दुनिया भर में जहां भी गए वहां वे सर्वश्रेष्ठ ही रहे। कुलपति ने कहा कि स्वामी जी सिर्फ एक संत ही नहीं बल्कि महान देशभक्त, दार्शनिक, वक्ता और मानवता प्रेमी थे। उनके विचार लोगों को सदियों तक प्रेरित करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि विवेकानंद ने कहा था कि उठो जागो और तब तक नहीं रूको जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो।

विवि के कुलपति ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको विश्वविद्यालय और देश को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। मौके पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय, निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह, डीन बेसिक साइंस डॉ. अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ. पीपी श्रीवास्तव, जलवायु अनुकूल कृषि के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. रत्नेश झा, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. राकेश मणि शर्मा, डॉ. महेश कुमार, डॉ. शिवपूजन सिंह, डॉ. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक एवं छात्र छात्राएं थे।

कुलपति ने दी श्रद्धांजलि : छात्र-छात्राओं को उनके बताए मार्ग पर चलने को कहा

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति व कार्यक्रम में मौजूद शिक्षक व छात्र-छात्राएं।

देश को विकसित बनाने के लिए सबको संकल्प लेना चाहिए, तभी विकास संभव होगा

निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद हम सबके आदर्श हैं। उन्होंने अपने गुरु के नाम को विश्व भर में रौशन किया। डीन कम्युनिटी साइंस डॉ. उषा सिंह ने कहा कि विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको देश को विकसित बनाने का संकल्प लेना चाहिए और लगातार प्रयत्नशील रहना चाहिए। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के द्वारा किया गया था। कार्यक्रम में मंच संचालन स्नातक बेसिक साइंस के छात्र हर्ष एवं फुड न्यूट्रीशन की छात्रा अंशु ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बलवंत ने किया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में छात्रों के बीच भाषण प्रतियोगिता, रंगोली एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। विभिन्न प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को कुलपति ने पुरस्कार एवं सर्टिफिकेट देकर उनका हौसला बढ़ाया।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 15 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले कुछ दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते है। इस अवधि में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
14 जनवरी	23.2	12
15 जनवरी	24.0	12
दरभंगा		
14 जनवरी	24.0	12
15 जनवरी	24.0	13
पटना		
14 जनवरी	27	14
15 जनवरी	27	14

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 14-01-2025

विवेकानंद का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणादायी : कुलपति

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति व मंचासीन विज्ञानी • जागरण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पंचतंत्र सभागार में सोमवार को स्वामी विवेकानंद जयंती समारोह मनाया गया। इस अवसर पर कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने पूरे विश्व में भारत के महत्व को रेखांकित किया। कहा कि स्वामी विवेकानंद के बारे में प्रसिद्ध विद्वान रोमा रोलां ने कहा था कि वे अद्वितीय विद्वान हैं। उन्होंने कहा कि विवेकानंद ने कहा था-उठो, जागो और तब तक नहीं रूको जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो। उनके विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको विश्वविद्यालय और देश को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। निदेशक छात्र कल्याण डा. रमन त्रिवेदी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद हम सबके आदर्श हैं। डीन कम्युनिटी साइंस डा उषा सिंह ने कहा कि विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको देश को विकसित बनाने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा किया गया था। मंच संचालन स्नातक बेसिक साइंस के छात्र हर्ष व फूड न्यूट्रीशन की छात्रा अंशु ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. बलवंत ने दिया। इस दौरान भाषण, रंगोली व पोस्टर प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा डा मयंक राय, निदेशक अनुसंधान, डा. एके सिंह, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्र, डीन फिशरीज डा. पीपी श्रीवास्तव, जलवायु अनुकूल कृषि के पीडी डा. रत्नेश झा, पुस्तकालयाध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा, डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, डा. कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद रहे।

Dainik Jagran 14-01-2025

कृषि विवि पूसा में विवेकानंद जयंती समारोह हुआ आयोजित

युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं स्वामी विवेकानंद

बोले-वीसी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पंचतंत्र सभागार में स्वामी विवेकानंद जयंती समारोह का आयोजन किया गया। कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी का जीवन नौजवानों के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने पूरे विश्व में भारत के महत्व को रेखांकित किया। डीएसडब्लू डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद हम सबके आदर्श हैं। डीन डॉ उषा सिंह ने कहा कि विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको देश को विकसित बनाने का संकल्प लेना चाहिए। मंच संचालन छात्र हर्ष एवं छात्रा अंशु ने किया। धन्यवाद डॉ बलवंत कुमार ने दिया। इस दौरान छात्रों के बीच भाषण प्रतियोगिता, रंगोली एवं पोस्टर प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

सोमवार को कृषि विवि में विवेकानंद जयंती समारोह को संबोधित करते वीसी।

समारोहपूर्वक मनी स्वामी विवेकानंद की जयंती

सरायरंजन। अभाविप की सरायरंजन इकाई के द्वारा स्वामी विवेकानंद जयती समारोह सोमवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। राजकीयकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बथुआ बुजुर्ग के छात्र-छात्राओं द्वारा विवेकानंद संदेश यात्रा का आयोजन किया गया। प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। मौके पर रवींद्र मोहन कंठ, रतन कुमार, संजीव कुमार, सरोज कुमार झा, समीर चंद्र गौरव, रणधीर कुमार, सत्येंद्र प्रसाद यादव, रितु कुमारी, चंपिका, शारदा कुमारी, संजना कुमारी, रेणु कुमारी, शशि कला, मो .कमरुल होदा, मो. साहब सदरी समेत अन्य मौजूद थे।

Hindustan 14-01-2025

स्वामी विवेकानंद का जीवन नौजवानों के लिए प्रेरणादायक : कुलपति

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पंचतंत्र सभागार में विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा सोमवार को स्वामी विवेकानंद जयंती समारोह का आयोजन किया गया। अतिथियों के स्वागत एवं दीप प्रज्जवलन कर समारोह के विधिवत उद्घाटन की औपचारिकता के बाद कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने अपने संबोधन में कहा कि स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण जीवन युवा नौजवानों के लिए प्रेरणादायक है। इनके जीवन से नौजवानों को सीख लेनी चाहिए। उन्होंने पूरे विश्व में भारत के महत्व को रेखांकित किया। स्वामी जी का विश्व धर्म सम्मेलन में शिकागो में दिया गया संबोधन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संबोधन में से एक है। डॉ पांडेय ने कहा कि स्वामी जी सिर्फ एक संत ही नहीं बल्कि महान देशभक्त, दार्शनिक, वक्ता और मानवता प्रेमी थे। उन्होंने कहा कि विवेकानंद ने कहा था कि, उठो, जगो और तब तक नहीं रूको जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो। स्वामी विवेकानंद के इस मंत्र और उनके विचारों से प्रेरणा लेकर हम सबको विश्वविद्यालय एवं देश को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद सबके आदर्श है। उन्होंने अपने गुरु के नाम को विश्व में रौशन किया है। डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में छात्रों के बीच हुए भाषण प्रतियोगिता, रंगोली एवं पोस्टर प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

संबोधित करते कुलपति व अन्य।

Rashtriya Sahara 14-01-2025

बदला मौसम का मिजाज, मकर संक्रांति को दिनभर रही ठिठुरन

पूरे दिन रहा कुहासा, अधिकतम तापमान सामान्य से 3.6 डिग्री नीचे

बढ़ी ठंड

- 15 से 19 जनवरी के बीच न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना
- ठंड से बचने के लिए लोग लेते रहे अलाव व हीटर का सहारा

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

मकर संक्राति के दिन मौसम का मिजाज अचानक से बदल गया. पूरे दिन कुहासा छाया रहा. सुबह में विजीविलिटी 100 मीटर रही. वहीं कनकनी बढ़ने से लोग पूरे दिन परेशान रहें. पूरे दिन लोगों को सूरज का दर्शन नहीं हुआ. सूरज कोहरे की आगोश में छिपा रहा. लोग ठंड से बचने के लिये अलाव व हीटर का सहारा लेते रहे.

जरूरी काम होने पर ही लोग अपने घरों से निकले. स्कूल बंद रहने से बच्चों को राहत मिली. ग्रामीण क्षेत्रों में लोग ठंड से बचने के लिये अपने दरवाजे अलाव जला रखे थे. मकर संक्राति होने के कारण लोग सुबह-सुबह स्नान भी किये, ऐसी स्थिति में अचानक से बढ़ी ठंड के कारण उन्हें परेशानी हुई. इधर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 15 से 19 जनवरी 2025 तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है.

दिन में छाये कुहासे में लाइट जलाकर जाते वाहन.

पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है.

15 जनवरी को उत्तर पश्चिम बिहार तथा तराई के जिलों के अनेक स्थानों पर सुबह में मध्यम से घना कुहासा छा सकता है. समस्तीपुर तथा इसके आसपास में हल्के से मध्यम कुहासा छाये रहने का अनुमान है. पूर्वानुमानित अवधि अधिकतम तापमान 22 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है.

न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन तीन से सात किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 16.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 3.6 डिग्री सेल्सियस कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 11.0 डिगी सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 3.1 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, January 15, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6786b7248495c74cbbd8f265

प्राकृतिक खेती स्कूल देश भर में अव्वल : कुलपति

कार्यक्रम का दीप जलाकर शुभारंभ करते कुलपति.

कार्यक्रम में मौजूद प्रतिभागी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में (प्राकृतिक खेती) स्कूल आफ नेचुरल फार्मिंग के छात्रों ने फ्रेशर पार्टी शुभारंभ का आयोजन किया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि नेचुरल फार्मिंग स्कूल देश भर में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है. उन्होंने कहा कि देश में प्राकृतिक खेती पर शुरू होने वाला यह पहला स्कूल है. उन्होंने कहा कि आने वाले समय में नेचुरल फार्मिंग की ओर पूरे विश्व का झुकाव होगा. उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के बहुत सारे सिद्धांत और प्रविधि हमारे पुरातन संस्कृति से लिए गए हैं.

उन्होंने कहा कि छात्रों को समझना चाहिए कि वे विश्वविद्यालय के ध्वज वाहक हैं. पूर्व के छात्रों ने देश और दुनिया में विश्वविद्यालय का नाम रौशन किया है. 2047 तक भारत को विकसित करने में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका होगी. इसमें छात्रों का अहम योगदान होने वाला है. इसलिए अभी से छात्रों को इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर काम करने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि छात्र यदि अनुशासनबद्ध होकर लगातार परिश्रम करें तो उन्हें लक्ष्य प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं आएगी. निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों के हित को लेकर कुलपति हमेशा सक्रिय रहते हैं। छात्रों के हित में कई निर्णय लिए गए हैं. जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय के छात्रों ने देश और दुनिया के प्रतिष्ठित परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है.

निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह और निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने भी छात्रों को संबोधित किया और उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित किया. कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये. कार्यक्रम में मंच संचालन नेचुरल फार्मिंग स्कूल के छात्र- छात्राओं ने किया. स्वागत भाषण वैज्ञानिक डॉ शंकर झा ने किया. कार्यक्रम के पहले कुलपति डॉ पांडेय ने नेचुरल फार्मिंग के विभिन्न प्रदर्शों का निरीक्षण किया और उपस्थित वैज्ञानिकों एवं पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये. कार्यक्रम के दौरान निदेशक गन्ना अनुसंधान डॉ देवेंद्र सिंह, जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा, डॉ राजीव कुमार श्रीवास्तव, डॉ एसके सिंह, डॉ नीरज कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, January 15, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6786b7248495c74cbbd8f25c

15 से 17 तक किसान मेले का होगा आयोजन

पूसा . डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा में 15 से 17 फरवरी तक किसान मेला लगेगा. मेले का जलवायु अनुकूल कृषि से विकसित भारत की ओर विषय है. पंडाल व अन्य व्यवस्था को लेकर विवि के वैज्ञानिकों का दल जुटा है. इसके लिए विवि प्रशासन की ओर से दर्जनों कमेटी बनाई है. मेले का आकर्षण विवि की आधुनिक तकनीक, प्रभेद और उत्पादों की प्रदर्शनी, उद्यानिकी, मशरूम, कृषि यंत्र, कृषि उत्पादित फसलों के उत्पादों की प्रदर्शनी, पशु पक्षी प्रदर्शनी समेत देश के विभिन्न राज्यों से आये वैज्ञानिकों, व्यवसायियों के लगे स्टॉल के माध्यम से किसानों तक तकनीक और सामग्री का हस्तानांतरण रहने की संभावना है. कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय के मार्गदर्शन और डीन सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय की देखरेख में डॉ आरके झा, डॉ आरके तिवारी, डॉ एमएल मीणा, डॉ विनिता सतपथी, डॉ फूलचंद व अन्य टीम इसे जमीनी स्वरूप में उतारने में जुटे हैं.

प्रभात खबर
Wednesday, January
Samstipur
https://epaper.pra...com

भास्कर 15/1/25 पेज 13

मौसम • उत्तर बिहार के जिलों में 19 जनवरी तक मौसम शुष्क रहेगा, कल भी घना कुहासा छा सकता है, ठंड व कनकनी में और होगी वृद्धि

24 घंटे में गिरा 8 डिग्री तापमान, कोहरे के कारण 100 मीटर से कम रही विजिबिलिटी

सिटीरिपोर्टर | समस्तीपुर

पिछले 24 घंटे के अंदर मौसम में अचानक बदलाव आया। घने कोहरे के कारण यातायात प्रभावित हुआ। ट्रेन से लेकर अन्य वाहनों की रफ्तार पर भी असर पड़ा। मंगलवार को अधिकतम तापमान 8 डिग्री गिरकर 16 डिग्री पर पहुंच गया, जो सामान्य से 3.6 डिग्री सेल्सियस कम रहा। एक दिन पहले अधिकतम तापमान 24 डिग्री था। वहीं न्यूनतम तापमान 11.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जो सामान्य से 3.1 डिग्री सेल्सियस अधिक रिकॉर्ड किया गया। इस अवधि में कुछ स्थानों पर कहीं बूंदाबांदी हुई तथा सुबह में घना कुहासा देखा गया। उत्तर बिहार के जिलों में 15 से 19 जनवरी तक मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। 15 जनवरी को उत्तर पश्चिम बिहार तथा तराई के जिलों के अनेक स्थानों पर सुबह में मध्यम से घना कुहासा छा सकता है। समस्तीपुर तथा इसके आसपास में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहने का अनुमान है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा मौसम विभाग के अनुसार पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 22 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 7 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है।

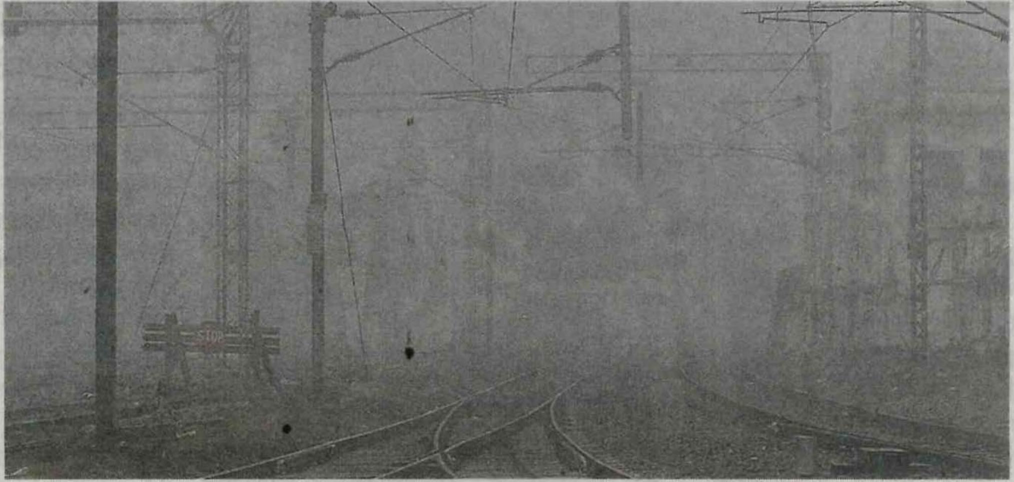

समस्तीपुर में दिन में भी घना कोहरा छाया रहा। सुबह में जंक्शन पर सौ मीटर से भी कम विजिबिलिटी रही।

दिल्ली से आने वाली ट्रेनें छह घंटे तक विलंब

घने कोहरे के कारण 02570 दरभंगा क्लोन एक्सप्रेस छह घंटे लेट चल रही है। वहीं 12566 बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस दो घंटे, 12554 वैशाली सुपरफास्ट एक्सप्रेस पांच घंटे, 15910 अवध आसाम एक्सप्रेस ढाई घंटे, 15706 चंपारण हमसफ़र दो घंटे, 15708 आम्रपाली एक्सप्रेस तीन घंटे, 12436 गरीब रथ एक्सप्रेस डेढ़ घंटे एवं 20504 डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस दो घंटे बिलंब से चलने की सूचना है।

भास्कर 15/1/25 पेज 16

कार्यक्रम • प्राकृतिक खेती यानी स्कूल ऑफ नेचुरल फार्मिंग के छात्रों के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन

पूसा कृषि विवि का नेचुरल फार्मिंग स्कूल देश भर में रखता है एक महत्वपूर्ण स्थान, आने वाला समय होगा बेहतर : कुलपति

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में प्राकृतिक खेती यानी स्कूल ऑफ नेचुरल फार्मिंग के छात्रों के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने किया। इस अवसर पर मौजूद वैज्ञानिक व छात्रों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि नेचुरल फार्मिंग स्कूल देश भर में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने कहा कि देश में प्राकृतिक खेती पर शुरू होने वाला यह पहला स्कूल है। आने वाले समय में नेचुरल फार्मिंग की ओर पूरे विश्व का झुकाव होगा। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के बहुत सारे सिद्धांत और प्रविधि हमारे पुरातन संस्कृति से लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि छात्रों को समझना चाहिए कि वे विश्वविद्यालय के ध्वज वाहक हैं। पूर्व के छात्रों ने देश और दुनिया में पुसा विश्वविद्यालय का नाम रौशन किया है। उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित करने में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और इसमें छात्रों का अहम योगदान होने वाला है। इसलिए अभी से छात्रों को इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छात्र यदि अनुशासनबद्ध होकर लगातार परिश्रम करें तो उन्हें लक्ष्य प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं आएगी। निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों के हित को लेकर कुलपति हमेशा सक्रिय रहते हैं। छात्रों के हित में कई निर्णय लिए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय के छात्रों ने देश और दुनिया के प्रतिष्ठित परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। मौके पर निदेशक गन्ना अनुसंधान डॉ. देवेंद्र सिंह, जलवायु अनुकूल कृषि के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. रत्नेश झा, डॉ.राजीव श्रीवास्तव, डॉ. एस के सिंह, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. कुमार राज्यवर्धन समेत विवि के विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक, पदाधिकारी, कर्मी व छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिक व छात्र।।

निदेशक अनुसंधान ने छात्रों को किया प्रेरित

निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह और निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने भी छात्रों को संबोधित किया। दोनों वैज्ञानिकों ने छात्रों को अच्छे से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। मंच संचालन नेचुरल फार्मिंग स्कूल के छात्र-छात्राओं ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शंकर झा ने किया। कार्यक्रम से पूर्व कुलपति ने प्राकृतिक खेती के तहत विवि परिसर में लगाए विभिन्न फसलों का निरीक्षण भी किया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान मौजूद वैज्ञानिकों एवं पदाधिकारियों को कई आवश्यक निर्देश दिए।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम शुष्क रहेगा। इस दौरान तराई के जिलों के कुछ स्थानों पर सुबह में कुहासा छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 22 से 25 व न्यूनतम 10 से 13 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
15 जनवरी	22.0	9.0
16 जनवरी	23.0	9.0
दरभंगा		
15 जनवरी	23.0	9.5
16 जनवरी	23.0	10.0
पटना		
15 जनवरी	25	11
16 जनवरी	25	11

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 15-01-2025

पछुआ हवा ने बढ़ाई कनकनी, मकर संक्रांति पर नहीं दिखे सूर्यदेव

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : 14 जनवरी को मकर संक्रांति के दिन पूरे जिले में सूर्य के दर्शन नहीं हुए। घने कोहरे और बादलों की चादर में सूर्य पूरे दिन छिपा रहा। सुबह से ही पूरा जिला कोहरे की चपेट में रहा, जिससे ठंड का प्रकोप और बढ़ गया। लोग जगह-जगह अलाव जलाकर ठंड से बचने का प्रयास करते नजर आए। सड़कों पर पर्व का दिन होने के बावजूद चहल-पहल नहीं दिखी। वाहन चालकों को कोहरे के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ा और वे धीमी गति से वाहन चलाने पर मजबूर थे। ठंड को लेकर आम जन-जीवन अस्त-व्यस्त नजर आया।

मौसम का अचानक बदला मिजाज : पिछले पांच दिनों से दिन के समय अच्छी धूप निकल रही थी लेकिन सोमवार रात मौसम ने अचानक करवट ली और ठंड बढ़ गई। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तर के अनुसार मंगलवार को अधिकतम तापमान 16.0 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 11.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पूरे दिन औसत 7 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलती रही। वहीं उत्तर बिहार के जिलों में अगले एक-दो दिनों तक सुबह में कुहासा लगने की संभावना है। 15 जनवरी को उत्तर पश्चिम बिहार तथा तराई के जिलों के अनेक स्थानों पर सुबह में मध्यम से घने कुहासा छा सकता है। समस्तीपुर तथा इसके आसपास में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहेंगे। इस अवधि में अधिकतम तापमान 22 से 25 और न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। वहीं 3 से 7 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। आयुर्वेद चिकित्सक डा. के.के. मिश्रा ने कुछ जरूरी सलाह देते हुए कहा कि गर्म कपड़े पहनें और पर्याप्त गर्म भोजन करें। अदरक, तुलसी और काली मिर्च का काढ़ा पिएं, यह सर्दी-जुकाम से बचाव करेगा। बच्चों और बुजुर्गों को घर से बाहर कम निकलने दें। दिन में कम से कम 1-2 बार गर्म पानी का सेवन करें। ठंड के कारण शरीर में अकड़न से बचने के लिए हल्के व्यायाम करें।

दिन भर छाया रहा धुंध, अलाव के सहारे कटा दिन, उत्तर बिहार के जिलों में अगले एक-दो दिनों तक सुबह में कुहासा की संभावना

ठंड से बचने के लिए अलाव के पास बैठे लोग • जागरण

Dainik Jagran 15-01-2025

नेचुरल फार्मिंग स्कूल की ओर होगा विश्व का झुकाव : कुलपति

संस, जागरण •पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में (प्राकृतिक खेती) स्कूल आफ नेचुरल फार्मिंग के छात्रों की ओर से फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ कुलपति डा. पीएस पांडेय ने किया। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि नेचुरल फार्मिंग स्कूल देश भर में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। देश में प्राकृतिक खेती पर शुरू होने वाला यह पहला स्कूल है। आने वाले समय में नेचुरल फार्मिंग की ओर पूरे विश्व का झुकाव होगा। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के बहुत सारे सिद्धांत और प्रविधि हमारे पुरातन की संस्कृति से लिया गया है। उन्होंने कहा कि छात्रों को समझना चाहिए कि वे विश्वविद्यालय के ध्वजवाहक हैं। कहा कि 2047 तक भारत

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में स्कूल आफ नेचुरल फार्मिंग के छात्रों की ओर से किया गया फ्रेशर पार्टी का आयोजन

को विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और इसमें छात्रों का अहम योगदान होने वाला है। इसलिए अभी से छात्रों को इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि छात्र यदि अनुशासनबद्ध होकर लगातार परिश्रम करते हैं तो उन्हें लक्ष्य प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं आएगी। निदेशक छात्र कल्याण डा. रमण त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय छात्र हित को लेकर हमेशा सक्रिय रहा है। विश्वविद्यालय के छात्रों ने देश और दुनिया के प्रतिष्ठित

कार्यक्रम में मौजूद कुलपति, विज्ञानी व छात्र • जागरण

परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह और निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय ने भी छात्रों को संबोधित किया और उन्हें अध्ययन के लिए प्रेरित किया। इस दौरान छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन नेचुरल फार्मिंग स्कूल के छात्र छात्राओं ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. शंकर झा ने किया। कार्यक्रम से पहले कुलपति डॉ पांडेय ने नेचुरल फार्मिंग के विभिन्न प्रदर्शों का निरीक्षण किया और उपस्थित वैज्ञानिकों एवं पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

Dainik Jagran 15-01-2025

प्राकृतिक खेती में काम कर रहा है विवि:वीसी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि कृषि के बदलते दौर में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा समय की मांग है। इसमें कृषि विवि ध्वजवाहक बनकर कार्य कर रहा है।

जिसने प्राकृतिक खेती पर देशभर में पहला स्कूल खोलकर इसकी शुरुआत की। आनेवाले समय में पूरे विश्व का झुकाव इसके प्रति होगा। वे मंगलवार को स्कूल ऑफ नेचुरल फॉर्मिंग के छात्रों के फ्रेशर पार्टी के मौके पर छात्रों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के काफी सिद्धांत पुरातन संस्कृति से लिए गए है।

निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण त्रिवेदी ने कहा कि छात्रहित में विवि निरंतर कदम उठा रहा है। निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में विवि की अबतक उपलब्धियां और आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। स्वागत डीन डॉ. मयंक राय व धन्यवाद समन्वयक डॉ. शंकर झा ने किया। इससे पूर्व समारोह की शुरुआत कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर किया। बाद में कुलपति व अन्य अधिकारियों ने प्राकृतिक खेती से जुड़े प्रदर्श व खेतों में लगे फसलों को देखकर आवश्यक दिशा निर्देश दिया। इस दौरान छात्र छात्राओं ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर मन मोह लिया। मौके पर निदेशक देवेंद्र सिंह, डॉ रत्नेश झा, डॉ एस के सिंह, डॉ राजीव श्रीवास्तव, डॉ नीरज कुमार, डॉ एसपी सिंह, डॉ. एसएस प्रसाद, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे।

फ्रेशर पार्टी का उद्घाटन करते कुलपति व अन्य। • हिन्दुस्तान

- विवि में छात्रों का फ्रेशर पार्टी कार्यक्रम आयोजित
- प्राकृतिक खेती पर देशभर में पहला स्कूल खोला गया

Hindustan 15-01-2025

आने वाले समय में नेचुरल फार्मिंग की ओर पूरी दुनिया का होगा झुकाव : कुलपति

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय में ट्टप्रा.तिक खेती) स्कूल आफ नेचुरल फार्मिंग के छात्रों की ओर से फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। जिसका कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर विधिवत किया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने छात्रों से कहा कि नेचुरल फार्मिंग स्कूल देश भर में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने कहा कि देश में प्रा.तिक खेती केन्द्रित यह पहला स्कूल है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में नेचुरल फार्मिंग की ओर पूरे विश्व का झुकाव होगा। उन्होंने कहा कि प्रा.तिक खेती के बहुत सारे सिद्धांत और प्रविधि हमारे पुरातन के संस्.ति से लिया गया है। उन्होंने कहा कि छात्रों को समझना चाहिए कि वे विश्वविद्यालय के ध्वज वाहक है वहीं पूर्ववती छात्रों ने देश और दुनिया में विश्वविद्यालय का नाम रौशन किया है। कहा कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में .षि की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और इसमें छात्रों का अहम योगदान होने वाला है। इसलिए अभी से छात्रों को इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि छात्र यदि अनुशासन बद्ध होकर लगातार परिश्रम करते है तो उन्हें लक्ष्य प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं आएगी। निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों के हित को लेकर कुलपति हमेशा सक्रिय रहते हैं। वहीं छात्रों के हित में कई निर्णय लिए गए है जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय के छात्रों ने देश और दुनिया के प्रतिष्ठित परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह और निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने भी छात्रों को संबोधित किया और उन्हें अध्यन के लिए प्रेरित किया। इस दौरान छात्र छात्राओं ने सांस्.तिक कार्यक्रम को रखा । कार्यक्रम का संचालन नेचुरल फार्मिंग स्कूल के छात्र छात्राओं ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ शंकर झा ने किया। कार्यक्रम से पहले कुलपति डॉ पांडेय ने नेचुरल फार्मिंग के विभिन्न प्रदर्शो का निरीक्षण किया और उपस्थित वैज्ञानिकों एवं पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। इस अवसर पर डॉ राजीव श्रीवास्तव, डॉ एस के सिंह, , डॉ नीरज कुमार,डॉ कुमार राज्यवर्धन सहित शिक्षक वैज्ञानिक ,पदाधिकारी एवं छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

उद्घाटन करते वीसी व अन्य।

Rashtriya Sahara 15-01-2025

मौसम : तापमान में मामूली सुधार, कोहरे और ठंड से राहत नहीं,

समस्तीपुर । पछिया हवा की रफ्तार में कमी के कारण तापमान में मामूली सुधार के बीच ठंड और कनकनी से राहत की बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती। कोहरे से लिपटी सुबह से हर दिन की शुरूआत होने की संभावना है। इस संदर्भ में जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से मौसम परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 15-19 जनवरी, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। कल दिनांक 15 जनवरी को उत्तर पश्चिम बिहार तथा तराई के जिलों के अनेक स्थानों पर सुबह में मध्यम से घने कुहासा छा सकता है। समस्तीपुर तथा इसके आसपास में हल्के से मध्यम कुहासा छाये रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 22 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 15-1-2025

कृषि विवि. गन्ना अनुसंधान, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

चौथे कृषि रोड मैप में विवि की अग्रणी भूमिका : वीसी

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में गन्ना अनुसंधान, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शुरु हुआ. आयोजन बिहार राज्य उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के अंतर्गत किया जा रहा है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय बिहार के चौथे कृषि रोड मैप में अग्रणी भूमिका निभा रहा है. गुड़ उद्योग को प्रोत्साहन देने का बिहार सरकार प्रयास कर रही है. इसमें विश्वविद्यालय कंधे से कंधा मिलाकर

सभागार में मौजूद वैज्ञानिक व किसान.

काम कर रहा है. उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन समय की मांग है. अब किसानों को भी पैकेजिंग, मार्केटिंग आदि के बारे में जानना चाहिए. विश्वविद्यालय में गुड़ के 25 से ज्यादा प्रोडक्ट्स बनाये जा रहे हैं. विश्वविद्यालय अपने सीमित संसाधनों के कारण उन्हें पूरा नहीं कर सकता. यदि नये उद्यमी इसमें जुड़ेंगे, तो विश्वविद्यालय उन्हें हर तरह का सहयोग देगा. बाजार उपलब्ध करायेगा. बिहार सरकार के गन्ना आयुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय ज्ञान का भंडार है. बिहार सरकार गुड़ उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू कर रही है. उन्हें उम्मीद है कि विश्वविद्यालय के सहयोग से कुछ वर्षों में बिहार को गुड़ उत्पादन में देश भर में अग्रणी बना दिया जायेगा. सहायक ईख आयुक्त वेदव्रत कुमार ने बिहार सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी. कहा कि किसी भी तरह की समस्या होने पर किसान सीधे उनसे संपर्क कर सकते हैं. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने विश्वविद्यालय में गन्ना अनुसंधान को लेकर किये जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी दी. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में गन्ना अनुसंधान और प्रसंस्करण को लेकर किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से भी प्रशिक्षित किया जा रहा है. गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण दिया. संचालन डॉ सुनीता कुमारी मीणा ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ अनुपम अमिताभ ने किया. जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा, वैज्ञानिक डॉ मिनातुल्ला, डी सीके झा, डॉ बलवंत, डॉ कुमार राज्यवर्धन मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, January 16, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67880730696634fcd093a1b0

भास्कर 16/1/25 पेज 20

कृषि • डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के पादप रोग विभाग के वरीय कृषि वैज्ञानिक ने दी जानकारी

आम में मंजर निकलने का समय नजदीक, बगान की जुताई के साथ कीटनाशक का छिड़काव करें

सलाह : बगान में खरपतवार का भी करें प्रबंधन, होगी अधिक उपज

भास्कर न्यूज | पूसा

आम के पेड़ों में मंजर निकलने का समय धीरे-धीरे नजदीक आ रहा है। बिहार के आम उत्पादक किसान आम में मंजर आने से पूर्व तथा मंजर आकर टिकोले बनने तक आम के बागों का वैज्ञानिक तकनीक से प्रबंधन कर आम से बेहतर फल उत्पादन प्राप्त कर सकते है। ये जानकारी डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि खासकर बिहार और उत्तर प्रदेश राज्य से जुड़े आम के बागों में फरवरी माह से पेड़ों पर मंजर लगना शुरू हो जाता है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से आम में लगने वाली गुजिया कीट एक बड़ी समस्या बनी हुई है। यह कीट आम के पेड़ों पर मंजर आने से पूर्व ही चढ़ जाता है तथा छुपकर वहीं बैठा रहता है। बाद में मंजर में दाने निकलने के बाद यह कीट मंजर व उसमें से निकलने वालों दानों को बुरी तरह से संक्रमित कर देता है जिससे मंजर व दाने बेहद कम समय में पेड़ से झड़ जाते है। गुजिया कीट से बचाव के लिए आम उत्पादक किसान दिसंबर और जनवरी माह में ही आम के बागों में तथा उसके आसपास बेहतर ढंग से सफाई कर दें। पेड़ के जड़ो के पास मौजूद मिट्टी तथा पेड़ों की टहनियों पर 1.5 डी क्लोरपायरीफास पाउडर नामक दवाई का 250 ग्राम मात्रा प्रति पेड़ की हिसाब से जड़ो के पास मिट्टी में मिला दें तथा टहनियों पर बुरकाव कर दें। इसके अलावे किसान आम के पेड़ के जड़ो में दो मीटर चौलाई वाला चिकना पत्री धागा के माध्यम से लपेटकर बांध दें। इस दोनों विधि से गुजिया कीट पेड़ पर नही चढ़ पाएगा।

आम के बागों की जुताई करता ट्रैक्टर।

डाल की करें कटाई, जिससे जमीन पर पड़े धूप

उन्होंने बताया कि ऐसे किसान जिनके आम के पेड़ों पर गुजिया कीट अभी से ही चढ़ गया हो वे अविलंब बागों में डाइमेथोएट 30 ई.सी. या क्विनाल्फोस 25 ई.सी. दोनों में से कोई एक दवाई का 1.5 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कई किसानों के आम के बागों में इस समय हापर या भुनगा कीट भी हो सकते हैं। पहले से यह कीट बाग में न आएं इसके लिए यह आवश्यक है कि किसान आम के घने बागों में से कुछ कुछ डालो की कटाई-छटाई समय-समय पर करते रहे। इससे सूर्य का प्रकाश बाग में जमीन की सतह तक आसानी से पहुंचता है जिससे कीट बाग में नही आते है। उन्होंने बताया कि हापर या भुनगा कीट के लिए आम के मंजर बहुत ही अच्छे खाद्य पदार्थ होते है। मंजरों को खाने के लिए ये कीट भारी संख्या में बागों में पहुंच जाते हैं। उन्होंने बताया कि जब बाग में किसानों को हापर या भुनगा कीट दिख जाए तो किसान पेड़ों पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल दवाई का 1 एमएल मात्रा प्रति 2 लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव कर दें।

वर्तमान में आम के बागों में ये न करें

इस समय आम के बागों में किसान गहरी सिंचाई न करें। कली (फूल) बनने से 1 से 2 महीने पहले से ही बाग में गहरी सिंचाई करना बंद कर दें। अधिक पानी से मिट्टी में अत्यधिक नमी हो जाती है जो फूल आने की प्रक्रिया में बाधा डालती है। बाग में नाइट्रोजन आधारित उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग न करें क्योंकि इससे पौधों में पत्तियों की वृद्धि होती है और फूल आने में बाधा आती है। पोटाश का अधिक उपयोग न करें चूंकि इससे फूल गिरने की संभावना बढ़ जाती है। फूल लगने के समय उर्वरक न ही डालें संभव हो तो फल लग जाने के बाद ही खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। इस समय बाग में अनावश्यक छंटाई न करें। इससे पौधे कमजोर हो सकते हैं तथा फूल आने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। इस समय बिना किसी आवश्यकता के कीटनाशकों और कवकनाशकों का छिड़काव न करें। रासायनिक छिड़काव से पर्यावरण और फूलों की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। फूल आने से पहले बगीचे से खरपतवार को साफ कर दें। बगीचे में जलभराव की समस्या न हो इसका ध्यान रखें। इस समय पेड़ के जड़ो के पास अनावश्यक मिट्टी न खोदें। बाग के पौधों पर नजर बनाएं रखे तथा बीमारियों और कीटों को बिल्कुल भी नजरअंदाज न करें। फूल आने से पहले समय पर कीटों और बीमारियों का प्रबंधन न करना हानिकारक हो सकता है। मवेशियों को बगीचे में न आने दें।

गुड़ उद्योग को बढ़ावा देने में जुटी सरकार

केकृवि के सहयोग से गुड़ उत्पादन में देश में अग्रणी बनेगा बिहार : गन्ना आयुक्त

25 से ज्यादा गुड़ प्रोडक्ट्स विश्वविद्यालय की ओर से बनाए जा रहे, रहती काफी मांग

- गन्ना अनुसंधान, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन पर सात दिवसीय प्रशिक्षण प्रारंभ
- राज्य के चौथे कृषि रोड मैप में अग्रणी भूमिका निभा रहा डा. राजेंद्र प्रसाद केंकृवि : कुलपति

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में गन्ना अनुसंधान, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार से प्रारंभ हुआ। बिहार राज्य उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के अंतर्गत हुए आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि सरकार गुड़ उद्योग को प्रोत्साहन देने का हरसंभव प्रयास कर रही है। केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय भी राज्य के चौथे कृषि रोड मैप में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय इस काम में सरकार के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन समय की मांग है। अब किसानों को भी पैकेजिंग, मार्केटिंग आदि के बारे में भी जानना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में गुड़ के 25 से ज्यादा प्रोडक्ट्स बनाए जा रहे हैं। इसकी काफी मांग भी है। विश्वविद्यालय अपने सीमित संसाधनों के कारण उन्हें पूरा नहीं कर सकता। यदि नए उद्यमी इसमें जुड़ेंगे तो विश्वविद्यालय उन्हें हर तरह का सहयोग देगा और बाजार उपलब्ध करवाएगा। वहीं राज्य सरकार के गन्ना आयुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय ज्ञान का भंडार है। यहां के वैज्ञानिक का देश भर में गन्ना के विकास में अहम योगदान है। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार गुड़ उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू कर रही है और उन्हें उम्मीद है कि विश्वविद्यालय के सहयोग से कुछ वर्षों में बिहार को गुड़ उत्पादन में देश भर में अग्रणी बना दिया जाएगा। सहायक ईख आयुक्त वेदव्रत कुमार ने बिहार सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। निदेशक अनुसंधान डा. ए के सिंह ने विश्वविद्यालय में गन्ना अनुसंधान को लेकर किये जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम को संबोधित करते केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति • जागरण

कार्यक्रम में मौजूद विज्ञानी व प्रशिक्षणार्थी • जागरण

निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में गन्ना अनुसंधान और प्रसंस्करण को लेकर किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से भी प्रशिक्षित किया जा रहा है। गन्ना अनुसंधान संस्थान निदेशक डा. देवेंद्र सिंह ने कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण दिया और प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी। मंच संचालन डा. सुनीता कुमारी मीणा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. अनुपम अमिताभ ने किया। कार्यक्रम के दौरान जलवायु अनुकूल कृषि के प्रोजेक्ट निदेशक डा. रत्नेश झा, विज्ञानी डा. मिनातुल्ला, डी सी के झा, डा. बलवंत, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 16-01-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम शुष्क रहेगा। इस दौरान जिलों के कुछ स्थानों पर सुबह में कुहासा छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 22 से 25 व न्यूनतम 10 से 13 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
बेतिया		
16 जनवरी	22.0	10.0
17 जनवरी	23.0	10.0
बगहा		
16 जनवरी	23.0	10.5
17 जनवरी	23.0	11.0
पटना		
16 जनवरी	25	12
17 जनवरी	25	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 16-01-2025

नये उद्यमियों को पूरी मदद व बाजार उपलब्ध करायेगा विवि : कुलपति

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा में गन्ना अनुसंधान, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर आधारित सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गई। जिसका शुभारंभ विवि के कुलपति एवं आगत अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। बिहार राज्य उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय बिहार के चौथे .षि रोड मैप में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। वही गुड़ उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए बिहार सरकार की ओर से प्रयास किया जा रहा है। जिसमें विश्वविद्यालय कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन समय की मांग है। अब किसानों को भी पैकेजिंग, मार्केटिंग आदि के बारे में जानकारी होना चाहिए। विश्वविद्यालय में गुड़ के पच्चीस से ज्यादा उत्पाद बनाये जा रहे है जिसकी काफी मांग है। उन्होंने ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने सीमित संसाधनों के कारण उसे पूरा नही कर पा रहा है। यदि नये उद्यमी इसमें जुड़ें तो विश्वविद्यालय उन्हें हर तरह का सहयोग देगा और बाजार भी उपलब्ध करवायेगा। बिहार सरकार के गन्ना आयुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय ज्ञान का भंडार है। वहीं विवि के वैज्ञानिकों का देश भर में गन्ना के विकास में अहम योगदान है। उन्होंने कहा पिछले दो वर्षो में विश्वविद्यालय ने जो प्रगति की है उसकी चर्चा बिहार ही नहीं बल्कि पूरे देश में किया जा रहा है। श्री झा ने कहा कि बिहार सरकार गुड़ उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू कर रही है और उन्हें उम्मीद है कि विश्वविद्यालय के सहयोग से कुछ वर्षो में बिहार को गुड़ उत्पादन में देश भर में अग्रणी बना दिया जाएगा। सहायक ईख आयुक्त वेदव्रत कुमार, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, आदि ने भी प्रशिक्षुओं को कई उपयोगी जानकारियां दी। इसके पुर्व गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने स्वागत संबोधन में प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

Rashtriya Sahara 16-01-2025

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में दो दिवसीय 18वीं अनुसंधान परिषद की बैठक

एकजुटता के साथ अनुसंधान की जरूरत

बोले वक्ता

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में दो दिवसीय 18वीं अनुसंधान परिषद बैठक शुरू हुई. इसमें विश्वविद्यालय के अनुसंधान प्रयासों पर विचार-विमर्श किया जाएगा. अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया है. इनमें डॉ. एके पाठक, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, डॉ. एमवी चेट्टी, धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और डॉ. विकास दास, राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची के निदेशक शामिल हैं. कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने उद्घाटन भाषण में कहा कि अनुसंधान

कृषि स्मारिका का विमोचन करते अतिथि .

के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है. उन्होंने कहा कि अनुसंधान प्रकाशनों, पेटेंट और जारी की गई. किस्मों की बढ़ती संख्या अनुसंधान की प्रगति को दर्शाता है. उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे अपने अनुसंधान को लेकर बार-बार क्षेत्र का दौरा करते रहें. उन्होंने कहा कि देश को 2047 तक विकसित बनाने में वैज्ञानिकों की प्रमुख भूमिका है. इसलिए अभी से एकजुट होकर सभी को कार्य करने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने संसाधनों का उपयोग करके स्थानीय कृषि समस्याओं से संबंधित 168 अनुसंधान परियोजनाओं को वित्तपोषित किया है. उन्होंने कहा कि यह गौरव का विषय है कि विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों के पास कम से कम एक अनुसंधान परियोजना है. डॉ. एमवी चेट्टी ने आरपीसीएयू के अनुसंधान की प्रशंसा की और कहा कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय का अनुसंधान देश की कृषि को एक नई दिशा देगा. बैठक के दौरान, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित कई प्रकाशन जारी किए गये. राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची के निदेशक डॉ. विकास दास ने आरपीसीएयू की अनुसंधान पारिस्थितिकी की प्रशंसा की. इसे कई अनुसंधान संस्थानों के लिए प्रेरणादायक बताया. अनुसंधान निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय की अनुसंधान परियोजनाओं के पिछले छह महीनों के दौरान हुए विकास पर प्रस्तुति दी. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान कुलपति के निर्देश पर किसान केंद्रित हो गया है और स्थानीय किसानों की समस्याओं पर भी कई अनुसंधान हो रहे हैं. दो दिवसीय अनुसंधान परिषद बैठक में विश्वविद्यालय में चल रहे 280 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा. अनुसंधान परिषद की बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉ राम सुरेश वर्मा, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, डीन टीसीए ढोली डॉ पीपी सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ सतीश कुमार, डॉ राजेश कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, January 17, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67895882c46b0cc2d81e43a3

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि इस अवधि मे उत्तर बिहार के जिलों में मौसम शुष्क रहेगा। इस दौरान जिलों के कुछ स्थानों पर सुबह में कुहासा छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि मे अधिकतम तापमान 22 से 25 व न्यूनतम 10 से 13 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
16 जनवरी	18.0	12.0
17 जनवरी	19.0	12.0
दरभंगा		
16 जनवरी	19.0	12.0
17 जनवरी	20.0	13.0
पटना		
16 जनवरी	22	14
17 जनवरी	22	15

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 17-01-25

देश को विकसित बनाने में विज्ञानियों की भूमिका होगी महत्वपूर्ण : कुलपति

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की 18वीं अनुसंधान परिषद की दो दिवसीय बैठक गुरुवार को प्रारंभ हुई। बैठक में विश्वविद्यालय के अनुसंधान प्रयासों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। बैठक में अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया है। इनमें नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एके पाठक, धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एमवी चेट्टी, राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची के निदेशक डा. विकास दास शामिल हैं। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति डा. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। उन्होंने कहा कि अनुसंधान प्रकाशनों, पेटेंट और जारी की गई किस्मों की बढ़ती संख्या अनुसंधान की प्रगति को दर्शाता है। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे अपने अनुसंधान को लेकर बार-बार क्षेत्र का दौरा करते रहे है। देश को 2047 तक विकसित बनाने में वैज्ञानिकों की प्रमुख भूमिका है। इसलिए अभी से एकजुट होकर सभी को कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने संसाधनों का उपयोग करके स्थानीय कृषि समस्याओं से संबंधित 168 अनुसंधान परियोजनाओं को वित्तपोषित किया है। उन्होंने कहा कि यह गौरव का विषय है कि विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों के पास कम से कम एक अनुसंधान परियोजना है। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित कई प्रकाशन जारी किया गया। इसमें मक्का, मसालों, तिलहनी, अरहर और कंद वाली फसलों पर स्टेटस रिपोर्ट शामिल हैं। इसके अलावा, सतत जल प्रबंधन पर एक

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति व उपस्थित वैज्ञानिक • जागरण

पालिसी पेपर भी जारी किया गया। दो दिवसीय अनुसंधान परिषद बैठक में विश्वविद्यालय में चल रहे 280 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा। अनुसंधान परिषद की बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा , डीन इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा, डीन फिशरीज डा. पीपी श्रीवास्तव, डीन टीसीए ढोली डा. पीपी सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा, डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, डा. सतीश कुमार, डा. राजेश कुमार, डा. कुमार राज्यवर्द्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

डिजिटल कृषि पर महत्वपूर्ण परिणाम देगा विश्वविद्यालय : धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एमवी चेट्टी ने आरपीसीएयू के अनुसंधान की प्रशंसा करते हुए कहा कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय का अनुसंधान देश की कृषि को एक

कार्यक्रम में उपस्थित लोग • जागरण

नई दिशा देगा। डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के कार्यों ने देश भर में एक स्पष्ट प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि डिजिटल कृषि पर विश्वविद्यालय का अनुसंधान आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण परिणाम देगा, जो विश्व स्तर पर कृषि के भविष्य की रूपरेखा तय करेगा। राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची के निदेशक डा. विकास दास ने आरपीसीएयू की अनुसंधान पारिस्थितिकी की प्रशंसा करते हुए कई अनुसंधान संस्थानों के लिए प्रेरणादायक बताया। अनुसंधान निदेशक डा. एके सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय की अनुसंधान परियोजनाओं के पिछले छह महीनों के दौरान हुए विकास पर प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान कुलपति के निर्देश पर किसान केंद्रित हो गया है और स्थानीय किसानों की समस्याओं पर भी कई अनुसंधान हो रहे हैं।

Dainik Jagran 17-01-2025

हिन्दुस्तान 17/1/25 पेज 4

168 अनुसंधानों पर हो रहा कार्यः कुलपति

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि अनुसंधान प्रकाशनों, पेटेंट एवं प्रभेदो व तकनीको की बढ़ती संख्या विवि में शोध के क्षेत्र में हो रहे प्रगति को दर्शाता है।

विवि स्थानीय कृषि समस्याओं से संबंधित 168 अनुसंधान परियोजनाओं को वित्त पोषित कर रही है। वे गुरुवार को विवि में आयोजित दो दिवसीय 18वीं अनुसंधान परिषद (रबी) की बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह गौरव का विषय है कि विवि के सभी वैज्ञानिकों के पास कम से कम एक अनुसंधान परियोजना है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने में वैज्ञानिकों की प्रमुख भूमिका है। जरूरत है सामूहिक प्रयास करने की।

राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची कें निदेशक डॉ. विकास दास ने विवि के अनुसंधान को प्रेरणादायी बताया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एके सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस दौरान मक्का, मसाला, तेलहनी, अरहर और कंद वाली फसलों के स्टेटस रिपोर्ट से जुड़े बुकलेट का विमोचन किया गया।

हिन्दुस्तान 17/11/25 पेज 4

कृषि विवि को राज्य में दूसरी रैंक मिली

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर को राज्य स्तर पर दूसरा रैंक मिला है।

यह बीते एक वर्ष में स्टार्टअप से जुड़े उद्यमियों को उत्कृष्ट मेंटरिंग (सलाह) के लिए दिया गया है। पहला रैंक चाणक्या इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट, पटना एवं तीसरे रैंक पर चाणक्या लॉ विवि, पटना को मिला। पटना में आयोजित समारोह में उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, सचिव बंदना प्रेयसी की मौजूदगी में महिला वैज्ञानिक सह विवि की प्रतिनिधि डॉ. एआर श्रवंती को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस संबंध में विवि के केन्द्र प्रभारी डॉ. रामदत्त ने बताया कि यह रैंक पूरे वर्ष के रैंक के आधार पर दिया गया है। उन्होंने

पटना में आयोजित समारोह में विवि के वैज्ञानिक को प्रमाण-पत्र देते अधिकारी।

बताया कि विवि के इनक्यूबेशन सेंटर से 80 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

जिसमें उद्यमियों को नवीनतम तकनीकी सलाह के अलावा मार्केटिंग, एडवरटाईजिंग व ब्रांडिग के तौर-तरीको को विस्तार से जानकारी दी गई। विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि एग्री स्टार्टअप विवि की प्राथमिकता है। आने वाले समय में विवि स्टार्टअप को को-वर्किंग स्पेस मुहैया करायेगा। जहां नये आईडिया को उत्पाद के रूप में परिवर्तित करने के लिए विवि स्टार्टअप को तकनीकी सहयोग देगा।

डीआरपीसीएयू में दो दिवसीय 18 वीं अनुसंधान परिषद बैठक आरंभ

पूसा (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (डीआरपीसीएयू) की दो दिवसीय 18वी अनुसंधान परिषद की बैठक का शुभारंभ किया गया। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय से जुड़े अनुसंधान प्रयासों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। अतिथियों के स्वागत दीप प्रज्वलन कर बैठक का शुभारंभ एवं विधिवत कुलगीत प्रसारण के उपरांत कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। अनुसंधान प्रकाशनों, पेटेंटों, एवं जारी की गई किस्मों की बढ़ती संख्या विश्वविद्यालय में शोध की प्रगति का आईना है। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे अपने अनुसंधान को लेकर बार बार क्षेत्र का दौरा करते रहें। उन्होंने कहा कि देश को 2047 तक विकसित बनाने में वैज्ञानिकों की भूमिका अहम होगी । इसलिए अभी से एकजुट होकर सभी को कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने संसाधनों का उपयोग कर स्थानीय कृषि समस्याओं से संबंधित 168 अनुसंधान परियोजनाओं को वित्तपोषित किया है। जो गौरव का विषय है। उन्होंने ने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों के पास कम से कम एक अनुसंधान परियोजना है। उपस्थित धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एम.वी. चेट्टी ने आर पी सी एयू के अनुसंधान की प्रशंसा करते हुए कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के कार्यो ने देश भर में एक स्पष्ट प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि डिजिटल कृषि पर विश्वविद्यालय का अनुसंधान आने वाले वर्षो में महत्वपूर्ण परिणाम देगा, जो विश्व स्तर पर कृषि के भविष्य की रूपरेखा को तय करेगा। आने वाले समय में विश्वविद्यालय का अनुसंधान देश की कृषि को एक नई दिशा देगा। बैठक के दौरान, विश्वविद्यालयके वैज्ञानिकों द्वारा लिखित कई प्रकाशन भी जारी किये गये। जिनमें मक्का एवं मसालों सहित तिलहनी, अरहर और कंद वाली फसलों पर स्टेटस रिपोर्ट शामिल है। इसके अलावा, सतत जल प्रबंधन पर एक पालिसी पेपर भी जारी किया गया। राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची के निदेशक डॉ. विकास दास ने आरपीसीएयू की अनुसंधान पारिस्थितिकी की प्रशंसा की, इसे कई अनुसंधान संस्थानों के लिए प्रेरणादायक बताया। इसके पुर्व अनुसंधान निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय की अनुसंधान परियोजनाओं के पिछले छह महीनों के दौरान हुए विकास पर अपनी बातों को रखते हुए विषय प्रवेश कराया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान कुलपति के निर्देश पर किसान केंद्रित किया जा रहा है। बैठक के बारे में जानकारी देते हुए सूचना पदाधिकारी डॉ कुमार राज्यवर्धन ने बताया कि दो दिवसीय अनुसंधान परिषद बैठक में विश्वविद्यालय में चल रहे 280 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा। मौके पर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, अधिष्ठाता मत्स्यकी डॉ पीपी श्रीवास्तव, डीन टीसीए ढोली डॉ पीपी सिंह, डीन डॉ उषा सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ सतीश कुमार, डॉ राजेश कुमार, सहित शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे ।

संबोधित करते कुलपति व अन्य।

Rashtriya Sahara 17-01-2025

"The Times of India", Dt.-17/07/25, P. No.-03

VC: RPCAU funds 168 research projects on local agri problems

B K Mishra | TNN

Patna: Vice-chancellor of Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa, P S Pandey, on Thursday said the university has funded as many as 168 research projects on local agricultural problems from its internal resources, aimed at promoting research and innovation on the campus.

Inaugurating a two-day 18th research council meeting of the university at Pusa (Samastipur), Pandey highlighted significant improvements in the research ecosystem of the university owing to the promotion of quality research on the campus. The output of research can be visualised through the increasing number of research publications, award of patents, and varieties of crops released, he said.

TOI

The 18th research council meeting at RPCAU in Samastipur on Thursday

Addressing the scientists and academics of the university, Dharwad Agricultural University's former vice-chancellor M V Chetty commended RPCAU's research output and said it has started to create a tangible impact on the country's agriculture. He predicted that research on digital agriculture will yield substantial output in the coming years, shaping the future of agriculture globally.

During the meeting, the university released several publications, including status reports on maize, spices, oilseeds, pigeon pea, and tuber crops. Additionally, a policy paper on sustainable water management was also released

अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने के आसार, जारी रहेगी शीतलहर

समस्तीपुर. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 18 से 22 जनवरी 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिनों (18व 19 जनवरी) को आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं. हालांकि, मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है. अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की संभावना है. अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्रीसेल्सियस रहने की संभावना है. न्यूनतम तापमान 7 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है. पाछिया हवा चलने व आसमान में बादल रहने के कारण अगले दो दिनों तक ठंड की संभावना बनी रहेगी. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 5 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आद्र्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमानः20.2 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 0.3 डिग्री सेल्सियस कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 10.5 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 1.7 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा

प्रभात खबर
Saturday, January 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678aab00aba68254565583

नोटिस बैनर **मानसिक विकार में अवसाद दुनिया भर में सबसे बड़ी समस्या : डा. मनोज** prabhatkhabar.com

केंद्रीय कृषि विवि में आयोजित दो दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक का अंतिम दिन

तीन प्रभेद व पांच तकनीक रिलीज के लिए पेश

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

संबोधित करते कुलपति डा पीएस पांडेय.

अनुसंधान परिषद की बैठक में मौजूद वैज्ञानिक.

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में आयोजित दो दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक के दूसरे दिन मक्का के दो प्रभेद राजेंद्र मक्का 5 व राजेन्द्र मक्का 6 और मसूर के एक प्रभेद राजेंद्र मसूर 2 को रिलीज के लिए प्रस्तुत किया गया.

तीनों प्रभेद को इस आरसीएम की बैठक में रिलीज करने के लिए अनुशंसा की गयी है. इसमें मुख्य रूप से राजेंद्र हाइब्रिड मक्का पांच है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्नेल विश्वविद्यालय अमेरिका समेत कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर कई अनुसंधान कर रहा है. 2047 तक भारत को विकसित बनाने में कृषि वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका है. कहा कि अनुसंधान परियोजनाओं में किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता दी गई है. वैज्ञानिकों के लिए हर तरह की सुविधा उपलब्ध है.

लगभग पचास से अधिक वैज्ञानिकों ने पिछले दो वर्षों में बीस से अधिक देशों में कार्य किया है. पूर्व कुलपति डॉ. एमवी चेट्टी ने कहा कि पिछले दो सालों में 13 पेटेंट, छह किस्में, और 18 से अधिक तकनीकों का विकास सराहनीय है. पूर्व कुलपति डॉएआर पाठक ने वैज्ञानिकों के राष्ट्र के प्रति योगदान के महत्व पर जोर दिया. अनुसंधान निदेशक डॉ. एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान को नई दिशा मिली है. कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉ राम सुरेश वर्मा, डीन वानिकी डॉ आरके झा, डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ मुकेश कुमार, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ शंकर झा , डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे.

- **राजेंद्र मक्का 5:** इस किस्म के पौधा की ऊंचाई 185 से 190 सें मीटर है. यह 135-140 दिनों में परिपक्व हो जाता है. यह टर्सिकम पत्ती ब्लाइट और फॉल आर्मीवर्म के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है. 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की बीज दर के साथ इसकी उपज वर्तमान प्रभेदों से लगभग दस प्रतिशत अधिक है.
- **राजेन्द्र मक्का 6:** इस किस्म 190-195 सेमी की पौधा ऊंचाई वाला है. 150-160 दिनों में परिपक्व हो जाता है. यह फॉल आर्मीवर्म के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है. 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की बीज दर के साथ इसकी उपज वर्तमान प्रभेदों से 15 प्रतिशत अधिक है.
- **राजेंद्र मसूर 2:** यह किस्म प्रति हेक्टेयर 1750 किग्रा की औसत उपज देती है. यह विल्ट रोग, पोड बोरर, एफिड, और रूट नॉट नेमाटोड रोगो के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है, जो इसे बिहार में संपूर्ण रूप से उगाने के लिए उपयुक्त बनाती है. इसके पौधे ऊंचाई 42 सेमी है.

प्रभात खबर
Saturday, January 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678aab00aba682545655582fb

आम के पेड़ में 24 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस के तापमान में फूल आते हैं, लेकिन फूलों के विकास के समय तापमान की स्थिति, मिट्टी की गुणवत्ता व सिंचाई पद्धति का योगदान होता है.

आम : सही देखभाल से गुणवत्ता व उत्पादन में होगा इजाफा

संवाददाता, मुजफ्फरपुर

उत्तर बिहार में आम की खेती किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय है, लेकिन इसकी सफलता कई कारकों पर निर्भर करती है. विशेषज्ञों का कहना है कि आम के पेड़ में फूल आने से पहले किसान बाग में सही प्रबंधन करते हैं, तो फसल की गुणवत्ता बेहतर होने के साथ-साथ उत्पादन भी अधिक होगा. समय पर उठाए गए कदम किसानों को अच्छे नतीजे दे सकते हैं. डॉ. राजेंद्र प्रसाद सेंट्रल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, पूसा के पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट पैथोलॉजी के विभागाध्यक्ष, डॉ. एसके सिंह ने किसानों को सावधानी बरतने की सलाह दी है. उन्होंने बताया कि आम के पेड़ में 24 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस के तापमान में फूल आते हैं, लेकिन फूलों के विकास के समय तापमान की स्थिति, मिट्टी की गुणवत्ता और सिंचाई पद्धति का महत्वपूर्ण योगदान होता है. आम के फूल आने से एक-दो महीने पहले गहरी सिंचाई से बचना चाहिए. अधिक पानी से मिट्टी में नमी बढ़ सकती है, जिससे फूल गिरने की संभावना बढ़ जाती है. इस दौरान सिंचाई की मात्रा को नियंत्रित करना बेहद जरूरी है. उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग न करें. फूलों के आने से पहले नाइट्रोजन आधारित उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग न करें. इससे पौधों में पत्तियों की अधिक वृद्धि हो सकती है, जो फूलों के विकास में बाधा डाल सकती हैं. संतुलित उर्वरकों का उपयोग बेहतर रहेगा.

अनियमित छंटाई से बचें

फूलों के आने से पहले अत्यधिक छंटाई करने से बचना चाहिए. इससे पौधे कमजोर हो सकते हैं और फूल आने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है. केवल सूखी और रोगग्रस्त शाखाओं को हटा देना चाहिए. रसायन या कीटनाशकों का बेमौसम छिड़काव फूलों के गिरने का कारण बन सकता है. विशेषज्ञों का कहना है कि रासायनिक छिड़काव केवल जरूरत के समय ही करना चाहिए. रासायनिक उत्पादों का बेमौसम उपयोग न केवल फूलों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, बल्कि यह पर्यावरण पर भी नकारात्मक असर डालता है. फूल आने से पहले बगीचे में खरपतवार न छोड़ें, क्योंकि ये पौधों के पोषक तत्वों का खपत करते हैं और फूल आने की प्रक्रिया में रुकावट डाल सकते हैं. खरपतवार नियंत्रण के लिए जैविक और रासायनिक दोनों उपाय उपलब्ध हैं, लेकिन पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जैविक उपायों का चयन बेहतर होता है.

आम के पेड़ में 24 डिग्री से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान में फूल आते हैं

फूल आने से एक-दो माह पहले गहरी सिंचाई से बचना चाहिए

मौसम का ध्यान रखें

डॉ. एसके सिंह के मुताबिक, ठंड, पाले या बेमौसम बारिश के दौरान कोई रासायनिक छिड़काव नहीं करना चाहिए. ऐसी परिस्थितियों में रसायन पौधों को नुकसान पहुंचा सकते हैं. मौसम की सही जानकारी और मौसम परिवर्तन के अनुसार बागवानी कार्यों को समायोजित करना चाहिए .इस सबके अलावा, किसानों को कृषि विशेषज्ञों से समय-समय पर सलाह लेने की भी आवश्यकता है, ताकि वे सही तरीके से बागवानी कर सकें और अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकें. साथ ही, बागवानी में आने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिए तकनीकी ज्ञान का होना भी महत्वपूर्ण है.

जल निकासी और मिट्टी का ख्याल रखें

बगीचे में जलभराव की स्थिति न बने, इसके लिए जल निकासी की व्यवस्था पर ध्यान देना जरूरी है. जलभराव से जड़ें सड़ सकती हैं, जो फूलों के विकास पर नकारात्मक असर डालता है. इसके अलावा, मिट्टी की भौतिक संरचना पर भी ध्यान देना चाहिए ताकि पेड़ की जड़ें स्वस्थ रहें और पौधा मजबूती से बढ़ सके.

कीटों व बीमारियों का समय पर इलाज

फूल आने से पहले कीटों और बीमारियों की पहचान कर उनका समय पर इलाज करना चाहिए. अगर इस समय में समस्या को नजरअंदाज किया गया, तो यह फूलों की गिरावट और फसल की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है. बीमारियों और कीटों का नियंत्रण प्राकृतिक उपायों के माध्यम से करना ज्यादा सुरक्षित होता है.

मौसम विज्ञान विभाग की किसानों को सलाह

- तापमान ज्यादा होने की वजह से रबी फसल के लिए यह नुकसानदेह हो सकता है.
- किसानों की मक्का की फसल लगभग 30 दिन पुरानी हो चुकी है, उन्हें खेतों का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस समय कीटों और अन्य समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है.
- समय पर बोई गई आलू की फसल की सिंचाई और खुदाई का ध्यान रखें, जरूरत पड़ने पर हल्की सिंचाई करें और मिट्टी में नमी बनाए रखें.
- मटर की फसल को अच्छे से बढ़ने के लिए 2% यूरिया घोल का छिड़काव करें.
- गोभी की फसल में कीटों से बचाव के लिए मेटासिस्टन या अन्य कीटनाशक का घोल पानी में मिलाकर पौधों पर समान रूप से छिड़कें.

उत्तर बिहार के प्रमुख जिलों पर मौसम का प्रभाव (आइएमडी रिपोर्ट के आधार पर)

01. मुजफ्फरपुर	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	2.4 मिमी
प्रभाव :	वर्षा की पूरी कमी के कारण गेहूं और सब्जियों जैसी फसलों पर तनाव हो रहा है.
02. समस्तीपुर	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	1.9 मिमी
प्रभाव :	वर्षा की पूरी कमी के कारण रबी फसलों की वृद्धि पर दबाव बन रहा है.
03. दरभंगा	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	1.7 मिमी
प्रभाव :	वर्षा की कमी के कारण मिट्टी में नमी की कमी हो रही है, जो फसलों के विकास के लिए आवश्यक है, खासकर गेहूं की फसल पर असर.
04. शिवहर	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	2.1 मिमी
प्रभाव :	सूखे मौसम के कारण फसलों की वृद्धि प्रभावित हो रही है. किसानों को सिंचाई में विशेष ध्यान देने की सलाह दी जा रही है.
05. सीतामढ़ी	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	2.9 मिमी
प्रभाव :	वर्षा की पूरी कमी के कारण फसलों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, जिससे पैदावार में कमी हो सकती है.
06. पूर्वी चंपारण	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	2.7 मिमी
प्रभाव :	वर्षा की कमी से कृषि गतिविधियां प्रभावित हो रही हैं, खासकर गेहूं और मक्का जैसी फसलों के लिए जल आपूर्ति की कमी हो रही है.
07. पश्चिमी चंपारण	
वास्तविक वर्षा :	0 मिमी (वर्षा कमीः 100%)
सामान्य वर्षा :	4.3 मिमी
प्रभाव :	सूखा मौसम फसलों के विकास पर असर डाल रहा है, जिससे रबी फसलों को नुकसान हो सकता है.

प्रभात खबर
Saturday, January 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678aab00aba68254565582fe

भास्कर 18/1/25 पेज 16

वीसी ने की सराहना • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में अनुसंधान परिषद की बैठक

अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ वैज्ञानिक कर रहे शोध

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में चल रहे अनुसंधान परिषद की तीन दिवसीय बैठक के दूसरे दिन बाह्य विशेषज्ञ व अनुसंधान से जुड़े अन्वेषकों को संबोधित करते हुए पुसा विवि के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि मौजूदा समय में पुसा विवि कार्नेल विश्वविद्यालय अमेरिका समेत कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर कई तरह के अनुसंधान को कर रहा है। उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने में खासकर कृषि वैज्ञानिकों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने कहा कि अनुसंधान परियोजनाओं में किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता दी गई है। विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों के लिए हर तरह की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। पुसा विवि के लगभग पचास से अधिक वैज्ञानिकों ने पिछले दो वर्षों में बीस से अधिक देशों में पहुंचकर अनुसंधान से जुड़े कार्यों को किया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान को लेकर एक नया माहौल बना है जिसके परिणाम आने वाले समय में कृषि के लिए लाभकारी होंगे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए धारवाड़ कृषि विवि के पूर्व कुलपति एवं बाह्य विशेषज्ञ डॉ. एमवी चेट्टी ने सर्वप्रथम पुसा विश्वविद्यालय के प्रगति की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि पुसा विवि ने पिछले दो से ढाई सालों में 13 पेटेंट, छह किस्में और 18 से अधिक तकनीकों का विकास किया हैं जो काफी सराहनीय है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा बाह्य विशेषज्ञों से हर छह महीने पर कराई जाती है। निरंतर समीक्षा होने से पहले की तुलना में अब अनुसंधान की क्वालिटी काफी अच्छी हो गई है। मौके पर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, डीन बेसिक साइंस डॉ. अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉ. राम सुरेश वर्मा, डीन वानिकी डॉ. आर के झा, डीन कम्युनिटी साइंस डॉ. उषा सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. राकेश मणि शर्मा, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. महेश कुमार, डॉ. शिवपूजन सिंह, डॉ. शंकर झा, डॉ. कुमार राज्यवर्धन समेत विवि के विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक, बाह्य विशेषज्ञ के अलावे पदाधिकारी व कर्मी थे।

अनुसंधानों के परिणाम आने वाले समय में कृषि के लिए होंगे अत्यंत लाभकारी

बैठक में वैज्ञानिकों को संबोधित करते कुलपति।

कृषि वैज्ञानिकों को कृषि संबंधी सटीक डाटा जुटाने का भी निर्देश

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नवसारी कृषि विवि के पूर्व कुलपति एवं बाह्य विशेषज्ञ डॉ. एआर पाठक ने वैज्ञानिकों के राष्ट्र के प्रति योगदान के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कृषि वैज्ञानिक व अनुसंधान अन्वेषकों से सटीक और निष्पक्ष डेटा जुटाने के आवश्यकता पर भी बल दिया। पुसा विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ.एके सिंह ने कहा की विश्वविद्यालय में अनुसंधान को कुलपति के बेहतर मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण के कारण एक नई दिशा मिली है।

उपलब्धि : फसलों के तीन प्रभेद व 5 कृषि तकनीकों को रिलीज के लिए परिषद में किया प्रस्तुत

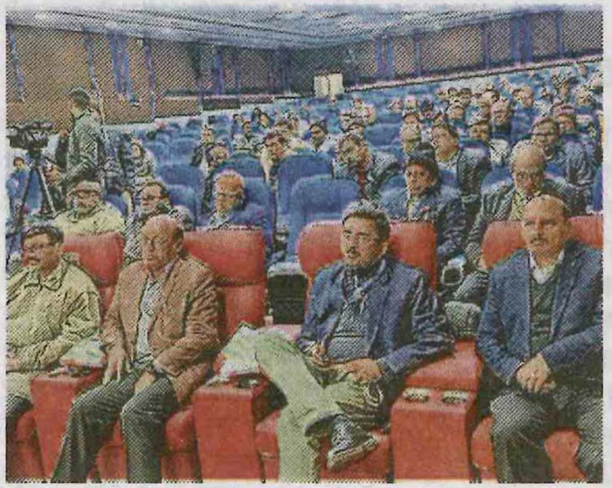
बैठक में मौजूद बाह्य विशेषज्ञ व पूसा विवि के कृषि वैज्ञानिक।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के विद्यापति सभागार में चल रहे अनुसंधान परिषद की तीन दिवसीय बैठक के दूसरे दिन मक्का के दो प्रभेद राजेंद्र मक्का 5 व राजेन्द्र मक्का 6 के अलावे मसूर के एक प्रभेद राजेंद्र मसूर 2 के साथ-साथ 5 कृषि तकनीकों को भी रिलीज करने के लिए परिषद में मौजूद कुलपति, बाह्य विशेषज्ञ एवं अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। कृषि वैज्ञानिकों से मिली जानकारी के अनुसार राजेंद्र हाइब्रिड मक्का 5 की किस्म के पौधे की ऊंचाई 185 से 190 सेंटीमीटर होती है। यह 135 से 140 दिनों में परिपक्व हो जाता है। यह टर्सिकम पत्ती ब्लाइट और फॉल आर्मीवर्म बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। बीस किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज दर की रोपाई से इस मक्के की उपज वर्तमान प्रभेदों से लगभग दस प्रतिशत अधिक होती है। राजेन्द्र मक्का 6 के किस्म के पौधों की ऊंचाई 190 से 195 सेंटीमीटर होता है। यह 150 से 160 दिनों में परिपक्व हो जाता है। मक्के का यह प्रभेद फॉल आर्मीवर्म बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम बीज दर से रोपाई करने पर मक्के के इस प्रभेद की उपज वर्तमान प्रभेदों से पंद्रह प्रतिशत अधिक होती है।

Dainik Bhaskar 18-01-2025

मौसम • लगातार पछिया हवा चलने व आसमान में बादल रहने के कारण और अधिक ठंड की आशंका

उत्तर बिहार में अगले दो दिनों में आसमान में हल्के बादल छाए रहेंगे, अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहेगा

भास्कर 18/1/25 पेज 13

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिनों (18-19 जनवरी) को आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की सम्भावना है। अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 7 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। लगातार पाछिया हवा चलने तथा आसमान में बादल रहने के कारण अगले दो दिनों तक ठंड की सम्भावना बनी रहेगी। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय ,पूसा मौसम विभाग के वैज्ञानिक के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 5 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है। आलू की फसल की नियमित निरीक्षण करें। आलू के फसल पर झुलसा रोग का प्रकोप दिखाई तो इसके बचाव के लिए रिडोमिल नामक दवा का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। खेतों में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

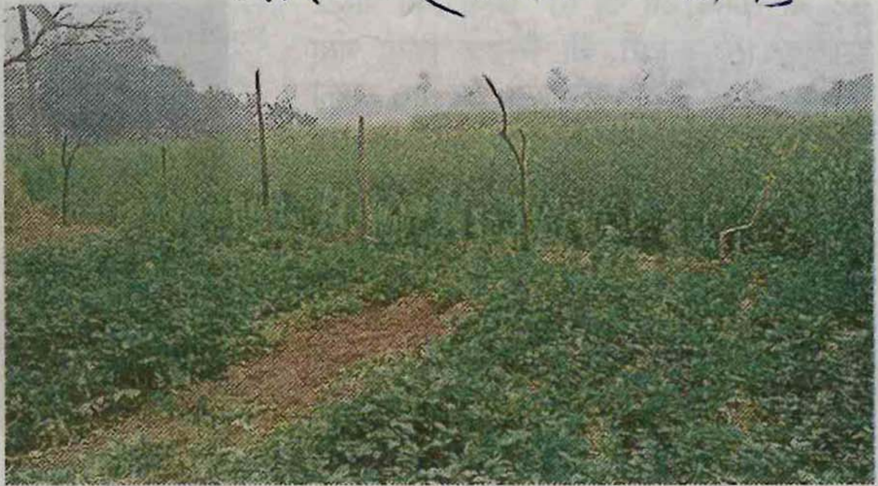

सरसों और आलू का खेतों में लगा फसल।

उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिनों (18-19 जनवरी) में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।

- डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय मौसम विभाग, पूसा

मक्के की फसल की किसान करें सिंचाई

मक्का की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सिंचाई के बाद 25-30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें, जिससे कम तापमान के प्रभाव से फसल पर हुए नुकसान को कम किया जा सके। पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर, बैंगन, टमाटर एवं मिर्च फसलों में निराई-गुड़ाई एवं सिंचाई करते रहें। इन फसलों में रोग-व्याधि से बचाव हेतु कार्बन्डाजीम (वेविस्टीन) / 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें।

भास्कर 18/1/25 पेज 15

प्रशिक्षण का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं में कौशल क्षमता बढ़े

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में 10 दिवसीय पूर्वार्जित ज्ञान प्रमाणन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मधुमक्खी पालक विषय पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ केवीके बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. तिवारी ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य खासकर ग्रामीण युवाओं में कौशल क्षमता का विकास कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने कहा कि खासकर समस्तीपुर जिले में मधुमक्खी पालन की संभावना को देखते हुए मधुमक्खी पालक के विषय पर यह प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बिहार कौशल विकास मिशन के अंतर्गत श्रम संसाधन विभाग बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान केवीके के वैज्ञानिक सह प्रशिक्षक सुमित कुमार सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को मधुमक्खी पालन की भी जानकारी दी।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 22 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में अगले दो दिनों उत्तर बिहार के जिलों में को आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। मौसम शुष्क रहेगा। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहेंगे।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
18 जनवरी	20.2	10.5
19 जनवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
18 जनवरी	21.0	11.0
19 जनवरी	22.0	11.5
पटना		
18 जनवरी	23	12
19 जनवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 18-01-2025

उत्तर बिहार में अगले दो दिनों तक ठंड रहेगी जारी

संवाद सहयोगी, जागरण, पूसा: उत्तर बिहार में अगले दो दिनों (18-19 जनवरी) को आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। मौसम शुष्क रहेगा। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहेंगे। लगातार पछिया हवा चलने तथा आसमान में बादल रहने के कारण अगले दो दिनों तक ठंढ़ की संभावना बनी रहेगी। इस अवधि में औसतन 3 से 5 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विभाग के अनुसार अगले चार दिनों के मौसम पूर्वानुमान में अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस रहेगा। न्यूनतम तापमान 7 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। शुक्रवार का अधिकतम तापमान 20.2 एवं न्यूनतम तापमान 10.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

अधिकतम तापमान 20.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान 10.5 डिग्री सेल्सियस रहा। यह न्यूनतम तापमान सामान्य से 1.7 डिग्री अधिक था, लेकिन पछुआ हवाओं और गलन के कारण लोगों को ठिठुरन का सामना करना पड़ा। कड़ाके की ठंड के कारण जनजीवन पूरी तरह प्रभावित हो गया है। बच्चों और बुजुर्गों को इस मौसम में विशेष रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

Dainik Jagran 18-01-2025

अब किसानों को फसल की क्षतिपूर्ति मिलना होगा आसान

जागरण संवाददाता, समस्तीपुरः बिहार राज्य के किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए बिहार कृषि सहायता योजना 2024-25 की शुरुआत हो गई है। योजना के तहत किसानों की फसलें बाढ़, सूखा, ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, तो उन्हें आर्थिक सहायता दी जाएगी। योजना राज्य के किसानों को विपरीत मौसम और अन्य आपदाओं से हुए फसल नुकसान पर राहत प्रदान करेगी। किसानों को 31 मार्च तक आवेदन करना होगा।

योजना का संचालन आनलाइन किया जाएगा। थ्रेशहोल्ड उपज दर की तुलना में वास्तविक उपज दर में 20 प्रतिशत तक ह्रास की स्थिति में 7500 रुपये प्रति हेक्टेयर की दर से अधिकतम दो हेक्टेयर तक कुल 15 हजार रुपये सहायता राशि अनुमान्य है। उपज दर की तुलना में वास्तविक उपज में 20 प्रतिशत से ज्यादा ह्रास की स्थिति में 10 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर की दर से अधिकतम दो हेक्टेयर तक कुल 20 हजार रुपये सहायता राशि अनुमान्य है।

दो हेक्टेयर तक मिलेगा लाभ : आवेदक के द्वारा एक से अधिक फसल हेतु अथवा रैयत एवं गैर-रैयत दोनों वर्गों की भूमि होने की स्थिति में यदि आवेदन करने पर जांच होगी। इसमें एक से अधिक

जिले में किसानों को दो हेक्टेयर तक मिलेगा योजना का लाभ
बिहार कृषि सहायता योजना 2024-25 की हो गई शुरुआत

फसल के उत्पादन में ह्रास होने तथा गैर-रैयत व रैयत दोनों की सम्मिलित भूमि पर दी जाने वाली सहायता की अनुमान्यता एवं गणना के आलोक में योजना के तहत आवेदित फसलों में से जिस फसल में उत्पादन का ह्रास ज्यादा प्रतिवेदित हुआ है। उस फसल के लाभ की गणना प्राथमिकता के आधार पर की जाएगी। योजना के लाभ हेतु अधिकतम दो हेक्टेयर की पात्रता के संदर्भ में यदि उक्त फसल में दो हेक्टेयर तक के ह्रास की प्रतिपूर्ति नहीं होती है तो अधिकतम ह्रास वाली फसल के बाद उत्तरोत्तर ह्रास वाली फसल के रकबा को मिलाकर अधिकतम दो हेक्टेयर तक इस योजना का लाभ मान्य होगा।

आनलाइन अपलोड करना होगा राजस्व रसीद : योजना का लाभ लेने के लिए रैयत एवं आंशिक रूप से रैयत तथा गैर-रैयत दोनों श्रेणी के किसानों को आवेदक के नाम का भू-स्वामित्व प्रमाण पत्र 31 मार्च 2023 के बाद का निर्गत होना चाहिए। इसके अलावा अद्यतन राजस्व रसीद 31 मार्च 2024 के उपरांत का निर्गत होने पर अपलोड करना अनिवार्य किया गया है। किसानों को व्यक्तिगत एसएमएस, योजना के पोर्टल के माध्यम से सूचित करते हुए संबंधित दस्तावेज यथा अद्यतन भू-स्वामित्व प्रमाण पत्र व राजस्व रसीद अपलोड करने के लिए रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर एक लिंक उपलब्ध कराया जाएगा। किसान विभाग द्वारा उनके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर प्रेषित लिंक के माध्यम से संबंधित दस्तावेज आनलाइन अपलोड कर सकते हैं।

बैठक में मक्के के प्रभेद व तकनीक पर चर्चा

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसाः डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में जारी अनुसंधान परिषद की बैठक के दूसरे दिन मक्का के दो प्रभेद राजेंद्र मक्का 5, राजेंद्र मक्का 6 और मसूर के एक प्रभेद राजेंद्र मसूर 2 को रिलीज के लिए प्रस्तुत किया गया।

कुलपति डा. पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्नेल विश्वविद्यालय अमेरिका समेत कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर कई अनुसंधान कर रहा है। अनुसंधान परियोजनाओं में किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता दी जा रही है। विश्वविद्यालय विज्ञानियों के लिए हर तरह की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। लगभग 50 से अधिक विज्ञानियों ने पिछले दो वर्षों में बीस से अधिक देशों में कार्य किया है। विश्वविद्यालय में अनुसंधान को लेकर एक नया माहौल बना है। इसके परिणाम आने वाले समय में कृषि के लिए लाभकारी होंगे।

पूर्व कुलपति डा. एमवी चेट्टी ने

अनुसंधान परिषद की बैठक में संबोधित करते कुलपति • जागरण

कहा कि पिछले दो से ढाई सालों में 13 पेटेंट, छह किस्में और 18 से अधिक तकनीकों का विकास सराहनीय है। पूर्व कुलपति डा. एआर पाठक ने विज्ञानियों को राष्ट्र के प्रति योगदान के महत्व पर जोर देते हुए सटीक और निष्पक्ष डेटा की आवश्यकता पर बल दिया।

अनुसंधान निदेशक डा. एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान को नई दिशा मिली है। विश्वविद्यालय के सभी अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा बाह्य विशेषज्ञों से हर छह महीने पर होती है। इससे अनुसंधान की क्वालिटी काफी अच्छी हो गई है कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा, डीन वानिकी डा. आर के झा, डीन कम्युनिटी साइंस डा. उषा सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा, डा. मुकेश कुमार, डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, डा. शंकर झा, डॉ. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 18-01-2025

केवीके बिरौली में मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण हुआ शुरू

पूसा, निसं। डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली के सभागार में शुक्रवार को 10 दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण शुरू हुआ। उद्घाटन केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

उद्घाटन बाद केंद्र प्रमुख डॉ आरके तिवारी ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बिहार कौशल विकास मिशन के तहत श्रम संसाधन विभाग, बिहार सरकार से प्रायोजित है। समस्तीपुर जिले में मधुमक्खी पालन की सम्भावना को देखते हुए मधुमक्खी पालक का प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षक सुमित कुमार सिंह ने इस प्रशिक्षण से संबंधित विषय वस्तु से परिचित कराया व तकनीकी पहलुओं पर चर्चा की। मुख्य रूप से डॉ. धीरु कुमार तिवारी, भारती आदि मौजूद थे।

Hindustan 18-01-2025

कॉर्नेल विवि के साथ शोध कार्य कर रहा विवि: वीसी

- कृषि विवि में रिसर्च काउंसिल की बैठक हुई
- कृषि वैज्ञानिकों को दी गई कई जानकारियां

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि विवि कार्नेल विश्वविद्यालय, अमेरिका समेत कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर कई अनुसंधान पर कार्य कर रहा है। जिसका बेहतर परिणाम आने वाले समय में संभावित है। वे शुक्रवार को विवि के विद्यापति सभागार में रिसर्च काउंसिल की बैठक के दूसरे दिन वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अनुसंधान परियोजनाओं में किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता दी गई है। विवि के वैज्ञानिक इसे गति देने में जुटे है।

उन्हें हर तरह की सुविधा उपलब्ध कराया जा रहा है। इसी कड़ी में करीब 50 से अधिक वैज्ञानिकों ने पिछले दो वर्षों में बीस से अधिक देशों में कार्य किया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान को लेकर एक नया माहौल बना है। जिसका परिणाम आने वाले समय में कृषि के लिए लाभकारी साबित होगा। मौके पर पूर्व कुलपति डॉ. एमवी चेट्टी ने विश्वविद्यालय की प्रगति की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि पिछले ढाई वर्षों में 13 पेटेंट, छह किस्में और 18 से अधिक तकनीकों का विकास सराहनीय है। पूर्व कुलपति डॉ. एआर. पाठक ने वैज्ञानिकों के राष्ट्र के प्रति योगदान के महत्व पर जोर देते हुए सटीक और निष्पक्ष डेटा की आवश्यकता पर बल दिया। निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने विवि गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की। मौके पर में डीन डॉ मयंक राय, डॉ अमरेश चंद्रा, डॉ राम सुरेश, डॉ आरके झा, डॉ उषा सिंह, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ मुकेश कुमार, डॉ संतोष कुमार ठाकुर, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ शंकर झा , डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे।

Hindustan 18-1-2025

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अनुसंधान परिषद के दूसरे दिन तीन प्रभेद व पांच तकनीक रिलीज के लिए प्रस्तुत

पूसा (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की अनुसंधान परिषद की बैठक के दूसरे दिन मक्का के दो प्रभेद राजेंद्र मक्का 5, राजेन्द्र मक्का 6 और मसूर के एक प्रभेद राजेंद्र मसूर 2 को रिलीज के लिए प्रस्तुत किया गया। अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय कार्नेल विश्वविद्यालय अमेरिका समेत कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर कई अनुसंधान कर रहा है। 2047 तक भारत को विकसित बनाने में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है, इसे ध्यान में रख कर अनुसंधान परियोजनाओं में किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों के लिए हर तरह की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। लगभग पचास से अधिक वैज्ञानिकों ने पिछले दो वर्षों में बीस से अधिक देशों में कार्य किया है। उन्होंने

बैठक को संबोधित करते कुलपति।

कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान को लेकर एक नया माहौल बना है जिसके परिणाम आने वाले समय में कृषि के लिए लाभकारी होंगे। पूर्व कुलपति डॉ. एम.वी. चेट्टी ने विश्वविद्यालय की प्रगति की प्रशंसा की और कहा कि पिछले दो से ढाई सालों में 13 पेटेंट, छह किस्में, और 18 से अधिक तकनीकों का विकास सराहनीय है। पूर्व कुलपति डॉ. ए.आर. पाठक ने वैज्ञानिकों के राष्ट्र के प्रति योगदान के महत्व पर जोर दिया, सटीक और निष्पक्ष डेटा की आवश्यकता पर बल दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान को कुलपति के निर्देश और पर्यवेक्षण के कारण नई दिशा मिली है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा बाह्य विशेषज्ञों से हर छह महीने पर होती है। इससे अनुसंधान की क्वालिटी काफी अच्छी हो गई है। कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय , निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डीन वानिकी डॉ आर के झा,डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ मुकेश कुमार, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ शंकर झा, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 18-01-2025

The Times of India

RPCAU develops new crop varieties, agri technologies

B K Mishra | TNN

Patna: The scientists of Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa (Samastipur), have produced three high-yield varieties of crops to be released shortly. They have also developed five new technologies related to agricultural production.

BIHAR IS POWER

The details of the characteristics of newly developed crop varieties and technologies were discussed at the two-day research council meeting of the university which concluded on Friday.

TOI

Participants at a research council meet

Announcing these new developments after the meeting, RPCAU vice-chancellor P S Pandey said the new varieties of crops and farm technologies would be released shortly. These scientific advancements on the campus showcase university's commitment to innovation and sustainable development, the VC said.

The new varieties to be released include 'Rajendra hybrid maize 5', 'Rajendra maize 6' and 'Rajendra masoor 2'.

मशरूम उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी अहम : निदेशक

मशरूम फार्म का अवलोकन करते निदेशक डा वीपी शर्मा.

प्रतिनिधि, पूसा

देश में मशरूम क्रांति है. मशरूम उत्पादन में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है. यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अधीनस्थ मशरूम निदेशालय सोलन हिमाचल प्रदेश के निदेशक डॉ वीपी शर्मा ने कही. वे बिहार के दर्जनों मशरूम उत्पादकों के फार्म एवं लैब का तीन दिवसीय दौरा के दौरान गहन अवलोकन किया. उन्होंने बताया कि पटना स्थित बेलदारी चक के फ्लेक्सी ग्रुप मशरूम फार्म का निरीक्षण किया. जहां पर नियंत्रण कक्ष का कार्यविधि देख प्रसन्नता हुई. जिले के प्रभात कुमार ने टेकारी एग्री प्रोड्यूसर कंपनी के सहयोग से करीब करीब 1500 लोगों को मशरूम व्यवसाय से जोड़कर बटन मशरूम एक से डेढ़ टन प्रतिदिन उत्पादन करते देख सराहना की. मुजफ्फरपुर के तुर्की में अवस्थित मशरूम अड्डा एवं जयभीम के सदस्यों ने निदेशक डा शर्मा को मिथिला परंपरा से स्वागत किया. विवि के माध्यम से अर्जित तकनीकों को पूरे देश में लागू करने एवं मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में चलाये जा रहे बिहार सरकार के क्रियाकलापों पर भी समीक्षा की. निदेशक डा शर्मा ने डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा पीएस पांडेय एवं निदेशक अनुसंधान डा अनिल कुमार सिंह के कुशल निर्देशन में एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के माध्यम से चल रहे शोध कार्यों का जमकर सराहना की.

परियोजना निदेशक डा आरपी प्रसाद ने बताया कि तीन दिनों के दौरा में निदेशक डा शर्मा ने मशरूम व्यवसाय में स्वरोजगार की संभावना देखा है.

प्रभात खबर
Sunday, January 19, 2025
Samastipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678be569d99da94269e7553d

दैनिक भास्कर - 19/01/2025 P- 22

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के वैज्ञानिक ने दी जानकारी

ह्यूमिक एसिड पौधा व मिट्टी के पोषण के लिए जरूरी : वैज्ञानिक

किसान वैज्ञानिक विधि से ह्यूमिक एसिड का करें प्रयोग

भास्कर न्यूज | पूसा

ह्यूमिक एसिड पौधा व मिट्टी के पोषण एवं संरचना को बेहतर बनाने की दिशा में काफी कारगर होता है। ह्युमिक एसिड मुख्य रूप से मिट्टी को भुरभुरी बनाता हैं जिससे पौधों के जड़ों का विकास अधिक होता है। इतना ही नहीं यह एसिड पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया को भी तेज करता है जिससे पौधों में हरापन आता है और शाखाओं की भरपूर वृद्धि होती है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने ह्यूमिक एसिड के प्रयोग से होने वाले लाभ एवं इसके प्रयोग विधि को लेकर किसानों को जानकारी देते हुए बताया कि ह्युमिक एसिड जैविक पदार्थ जैसे लिग्निएट, पीट एवं मृदा समूह पदार्थों का ही एक सदस्य है। यह एसिड पौधों के अंदर जहां एंजाइम और हार्मोन को उत्तेजित करता है। वहीं पौधों के जड़ श्वसन और द्वितीयक व तृतीयक जड़ों के गठन को बढ़ाकर मजबूत बनाता है। उन्होंने कहा कि ह्यूमिक एसिड पौधों की जड़ों और पत्तियों के माध्यम से सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाता है। यह पौधों के अंदर विटामिन की मात्रा को बढ़ाने के साथ-साथ मिट्टी का वातन और मिट्टी में जल धारण क्षमता को भी बढ़ाता है।

ह्यूमिक एसिड।

बीजों का उपचार बहुत जरूरी

कृषि वैज्ञानिक ने किसानों को बताया कि वे ह्यूमिक एसिड का प्रयोग मिट्टी में करने के साथ इससे पर्णीय छिड़काव और बीजो का उपचार भी कर सकते है। उन्होंने कहा कि किसान 1 लीटर ह्यूमिक एसिड (12 प्रतिशत डब्लू ऑबलिक डब्लू) को एक एकड़ खेत की मिट्टी के लिए प्रयोग कर सकते हैं। इतना ही नहीं इसका उपयोग अकेले या अन्य उर्वरक के साथ या ड्रिप सिंचाई के माध्यम से किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि ह्यूमिक एसिड द्वारा पर्णीय छिड़काव पौधों पर फूल आने से पहले या सक्रिय वानस्पतिक अवस्था में करना चाहिए। इसके अलावा सुबह या शाम के समय में किसान सभी फसलों में मासिक अंतराल पर ह्यूमिक एसिड का 2 से 3 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर भी छिड़काव कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान ह्यूमिक एसिड से बीजो को उपचारित करने के लिए सर्वप्रथम फसलों की बुआई से कम से कम 1 घंटा पहले पर्याप्त मात्रा के जल में ह्यूमिक एसिड का 10 एमएल मात्रा मिला दें। इसके बाद फसलों के बीज को इस पानी में अच्छे से भींगा दें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 22 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में अगले दो दिनों उत्तर बिहार के जिलों में को आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। मौसम शुष्क रहेगा। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहेंगे।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
19 जनवरी	21	9
20 जनवरी	22	9
दरभंगा		
19 जनवरी	22	10
20 जनवरी	22	10.5
पटना		
19 जनवरी	23	12
20 जनवरी	24	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 19-01-2025

मधुमक्खी पालकों के लिए 10 दिवसीय पुर्वार्जित ज्ञान प्रमाणन प्रशिक्षण आरंभ

संबोधित करते प्रशिक्षक व अन्य।

पूसा (एसएनबी)। कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली के परिसर में मधुमक्खी पालन विषय से जुड़े 10 दिवसीय पुर्वार्जित ज्ञान प्रमाणन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ शुक्रवार को .षि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए डॉ तिवारी ने कहा कि समस्तीपुर जिला में मधुमक्खी पालन की सम्भावना को देखते हुए मधुमक्खी पालकों का प्रशिक्षण की शुरुआत किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बिहार कौशल विकास मिशन के तहत श्रम संसाधन विभाग, बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित है। जिसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं के कौशल क्षमता का विकास करते हुए आत्मनिर्भर बनाना है। इस अवसर पर प्रशिक्षक सुमित कुमार सिंह ने विषय से जुड़े तकनीकी पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्रशिक्षुओं को दिया। मौके पर डॉ धीरु कुमार तिवारी, भारती उपाध्याय सहित प्रशिक्षु उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 19-01-2025

कैंपस अलर्ट

कृषि विवि में शोध कार्यों की हुई व्यापक समीक्षा

समीक्षा के दौरान मौजूद वैज्ञानिक .

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को शिक्षा निदेशक के तत्वावधान में पीएचडी और एमएससी (एग्रीकल्चर) प्लांट पैथोलॉजी के छात्रों के माध्यम से शिक्षा निदेशक ने पीएचडी और एमएससी (एग्रीकल्चर) प्लांट पैथोलॉजी के छात्रों द्वारा किये जा रहे शोध कार्यों की व्यापक समीक्षा की. इस संवाद सत्र के दौरान, प्रत्येक छात्र को अपने शोध निष्कर्षों, कार्य प्रणाली और प्रगति को सीधे निदेशक के समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर मिला. यह समीक्षा छात्रों के लिए अपने शैक्षणिक और वैज्ञानिक प्रयासों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है. सत्र में शोध-संचालित वातावरण को बढ़ावा देने और छात्रों के काम की शैक्षणिक कठोरता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला गया. मौके पर निदेशक शिक्षा के अलावे विभागाध्यक्ष डॉ संजय कुमार सिंह सहित छात्र-छात्राएं मौजूद थे.

प्रभात खबर
Monday, January 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678d4b1116b3123d0e509a96

स्टार्टअप को को-वर्किंग स्पेस मुहैया कराने की जरूरत: वीसी

रैंक प्रमाण पत्र प्राप्त करतीं वैज्ञानिक डॉ श्रवंति .

तकनीकी जानकारी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर को राज्य स्तर पर दूसरी रैंक मिली है. यह बीते एक वर्ष में स्टार्टअप से जुड़े उद्यमियों को उत्कृष्ट मेंटरिंग (सलाह) के लिए दी गयी है. पहली रैंक पर चाणक्या इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट, पटना एवं तीसरी रैंक पर चाणक्या लॉ विवि, पटना रहा है. इसको लेकर पटना में आयोजित समारोह में उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, सचिव बंदना प्रेयसी की मौजूदगी में महिला वैज्ञानिक सह विवि की प्रतिनिधि डॉ. एआर श्रवंति को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया. इस संदर्भ में विवि के केंद्र प्रभारी डॉ. रामदत्त ने बताया कि यह रैंक पूरे वर्ष के रैंक के आधार पर दी गयी है. उन्होंने बताया कि विवि के इनक्यूबेशन सेंटर से 80 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. जिसमें उद्यमियों को नवीनतम तकनीकी सलाह के अलावा मार्केटिंग, एडवरटाइजिंग व ब्रांडिंग के तौर- तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई. उन्होंने कहा कि वर्तमान में 40 स्टार्टअप केंद्र जुड़े हैं. जिन्हें समुचित सलाह दी जा रही है. आने वाले समय में अन्य सहयोग भी दिये जायेंगे.

विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि एग्री स्टार्टअप विवि की प्राथमिकता है. आने वाले समय में विवि स्टार्टअप को को-वर्किंग स्पेस मुहैया करायेगा. जहां नये आइडिया को उत्पाद के रूप में परिवर्तित करने के लिए विवि स्टार्टअप को तकनीकी सहयोग देगा.

प्रभात खबर
Monday, January 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678d4b1116b3123d0e509a96

कृषि ज्ञान वाहन वैशाली जिले के लिए हुआ रवाना

अधिक उत्पादन के लिए कृषि ज्ञान वाहन उपयोगी : सतपथी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित परिसर से कृषि तकनीकों से लैस कृषि ज्ञान वाहन को वैशाली जिले के जंदाहा एवं गोरौल प्रखंड में रवाना किया गया. जहां वैज्ञानिकों के सहयोग से बेहतर उत्पादन के लिए कृषि विभाग के तत्वावधान में किसानों को समुचित ज्ञानवर्धन करने का एक सफल प्रयास किया जा रहा है. वहीं प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी से मिली जानकारी के अनुसार जलवायु परिवर्तन की दौर में कृषि के विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आधुनिक तकनीक के बारे में जानकारी दी जा रही है. ताकि कम लागत में किसान अधिक उत्पादन कर सकें. इसी क्रम में किसानों को लाभान्वित करने के लिए चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा कि कृषि ज्ञान वाहन के माध्यम से कृषि सूचना एवं उनकी समस्याओं का समाधान किसानों के द्वार पर पहुंचकर मौसम अनुकूल फसलों को सुरक्षित एवं संरक्षित करने की विद्या से निपुण किया जा रहा है. यह कार्यक्रम किसानों को जागरूक करने के उद्देश्य से और साथ ही साथ उनके समस्याओं का समाधान करने के उद्देश्य से किया जा रहा है. इस अवसर पर वीडियो फिल्म के माध्यम से अलग-अलग फसलों की वैज्ञानिक तकनीक और उन्नत किस्म के बीजों की जानकारी दी गई. जहां प्रखंड के विभिन्न पंचायत से पहुंचे किसान मौजूद थे.

ज्ञान वाहन से नवीनतम तकनीक प्राप्त करते किसानों का समूह.

प्रभात खबर
Monday, January 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678d4b1116b3123d0e509a93

दैनिक भास्कर - 20/01/2025 P- 20

अच्छी खबर • पूसा विवि के वैज्ञानिक किंग ओएस्टर प्रजाति के मशरूम पर लंबे समय से कर रहे अनुसंधान

मशरूम की नई प्रजाति किंग ओएस्टर में सबसे अधिक पोषक तत्व : वैज्ञानिक

सचिनभारद्वाज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडे के नेतृत्व में मशरूम विभाग से जुड़े वैज्ञानिक किंग ओएस्टर नाम के एक मशरूम पर उच्च स्तरीय अनुसंधान कर रहे हैं। किंग ओएस्टर प्रजाति के इस मशरूम को बटन मशरूम के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। आने वाले समय में मशरूम की यह प्रजाति बिहार के मशरूम उत्पादकों के लिए एक वरदान साबित हो सकती हैं। किंग ओएस्टर मशरूम के प्रजाति का उत्पादन ठंड के दिनों में अन्य मशरूम की तुलना से काफी अधिक है। विवि के मशरूम विभाग से जुड़े कई वैज्ञानिक करीब 6 महीने से किंग ओएस्टर मशरूम पर व्यापक स्तर से अनुसंधान कर रहे हैं। मशरूम वैज्ञानिकों के देखरेख में मशरूम के इस प्रजाति का ट्रायल भी बिहार के कई बड़े मशरूम उत्पादक किसानों के यहां लगाया गया हैं। किंग ओएस्टर मशरूम बिहार में खेती करने के लिए काफी उपयुक्त माना जा रहा हैं। बिहार के किसान किंग ओएस्टर मशरूम की खेती अक्टूबर से मार्च तक करके कुल चार बार मशरूम का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। स्वाद के दृष्टिकोण से भी किंग ओएस्टर मशरूम काफी बेहतर होता है। किंग ओएस्टर की खेती भी किसान अन्य मशरूम के प्रजातियों की तरह बेहद आसान ढंग से कर सकते है। मशरूम वैज्ञानिकों की मानें तो मशरूम के इस प्रजाति की खेती लकड़ी के बुरादे पर काफी अच्छी उपज देती हैं। हालांकि भविष्य के चुनौतियों को ध्यान में रखकर इसकी खेती केवल लकड़ी ही नही बल्कि अन्य तरह के भूसे पर भी की जा सकती हैं। मशरूम के इस प्रजाति का उपयोग भी अन्य मशरूम की तरह विभिन्न प्रकार के सब्जियों एवं अन्य व्यंजनों को बनाने में किया जा सकता हैं। किंग ओएस्टर मशरूम को एक सप्ताह तक सामान्य स्थिति में भी रखा जा सकता है। किंग ओएस्टर मशरूम के प्रजाति के सेवन से मानव शरीर के पेट में पायें जाने वाले हुक वार्म एवं अन्य कीड़े नष्ट हो जाते हैं। इसकी खेती करने के 40 से 45 दिन बाद ही मशरूम उत्पादक किसान इसकी कटाई शुरू कर सकते हैं। बिहार के मशरूम उत्पादक किसान किंग ओएस्टर मशरूम को लगाकर एवं इसका सेवन कर दोनों रूप में अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

किंग ओएस्टर का उत्पादन किसानों के लिए लाभकारी

किंग ओएस्टर मशरूम।

क्या कहते हैं मशरूम उत्पादक किसान

मुजफ्फरपुर जिले के कमतौल गांव के मशरूम उत्पादक किसान नृपेंद्र शाही ने बताया कि फिलहाल प्रायोगिक तौर पर मैंने किंग ओएस्टर मशरूम की खेती की हैं। अभी दो से तीन किलों प्रतिदिन इस मशरूम का उत्पादन हो रहा हैं। इसकी बिक्री 250 रुपए से 300 रुपये किलो आसानी से हो जा रही है। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में किंग ओएस्टर मशरूम की डिमांड मार्केट में और अधिक बढ़ने वाली हैं। इससे कीमत भी बढ़ेगी।

एक्सपर्ट : जल्द शुरू हो सकता है व्यावसायिक उत्पादन

किंग ओएस्टर मशरूम पर रिसर्च कर रहे पूसा विश्वविद्यालय के मशरूम विशेषज्ञ डॉ. दयाराम, मशरूम वैज्ञानिक डॉ. आरपी प्रसाद आदि ने बताया की बिहार में अभी तक मशरूम के कुल 6 प्रजातियों की खेती कमोबेश की जा रही हैं। ओयस्टर, बटन एवं मिल्की यानी दूधिया मशरूम की खेती व्यावसायिक स्तर पर हो रही है। इसके अलावे पैडीस्ट्रॉ एवं औषधीय मशरूम जैसे शिटाके एवं हेरीशियम की खेती भी प्रायोगिक तौर पर सफलतापूर्वक की जा रही हैं। इन सभी मशरूमों के व्यवसायिक उत्पादन को लेकर पूसा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएस पांडे के नेतृत्व में मशरूम से जुड़े वैज्ञानिक दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में मशरूम उत्पादकों की बढ़ती रुचि एवं उपज बढ़ोतरी के हिसाब से वर्ष 2024- 25 में मशरूम की अनुमानित उपज 41000 टन को भी पार कर जाएगी। मशरूम वैज्ञानिकों ने बताया कि आज मशरूम का क्रेज इस कदर बढ़ गया है की शादी समारोह हो या पार्टी-फंक्शन सभी त्योहार और अवसरों पर छोटे-बड़े होटल, रेस्टोरेंट, नाश्ता दुकान सभी जगह मशरूम से जुड़े व्यंजन बनाएं जा रहे हैं ।

किंग ओएस्टर मशरूम में कैलोरी अधिक

मशरूम वैज्ञानिक के अनुसार किंग ओएस्टर मशरूम में बटन मशरूम से अधिक पोषक तत्व और औषधीय गुण पायें जाते हैं। इस मशरूम पर जारी अनुसंधान के अनुसार किंग ओएस्टर मशरूम के 100 ग्राम में 35 कैलोरी, 0.5 ग्राम कुल वसा, 5 ग्राम कुल कार्बोहाइड्रेट, 3 ग्राम प्रोटीन और 15 मि.ली. सोडियम पाए जाते हैं।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 22 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में अगले दो दिनों उत्तर बिहार के जिलों में को आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। मौसम शुष्क रहेगा। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहेंगे।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
20 जनवरी	20.2	10.5
21 जनवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
20 जनवरी	21.0	11.0
21 जनवरी	22.0	11.5
पटना		
20 जनवरी	23	12
21 जनवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 20-01-2025

दैनिक भास्कर - 21/01/2025 P-16

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

प्याज की फसल में लगने वाला रोग पर्पल ब्लॉच घातक, उपज हो सकती है प्रभावित

किसान फसल की करें निगरानी और अपनाएं वैज्ञानिक तकनीक

भास्कर न्यूज़ | पूसा

प्याज जैसे नगदी फसल में लगने वाला पर्पल ब्लॉच रोग प्याज के फसल की लिए काफी घातक होता हैं। मौजूदा समय में किसानों के खेतों में प्याज की फसल लहलहा रही हैं। इस समय किसान अपने प्याज के फसल की निगरानी करें और रोग नजर आने पर वैज्ञानिक तकनीक से उसका प्रबंधन करें। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एसके सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि प्याज का पर्पल ब्लॉच रोग फसल के पत्तियों और तनों पर असर डालता है जिससे पौधों का विकास रुक जाता है और उपज प्रभावित हो जाती है। यह रोग अत्यधिक नमी, बारिश और अधिक सिंचाई के कारण फैलता हैं। अगर समय रहते नियंत्रण के उपाय नहीं किए जाएं तो यह फसल को भारी नुकसान पहुंचा सकता है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि पर्पल ब्लॉच रोग के प्रारंभिक लक्षण प्याज की पत्तियों पर छोटे, पानी से भरे हल्के पीले धब्बों के रूप में दिखाई देते है। जैसे-जैसे संक्रमण बढ़ता है ये धब्बे भूरे या बैंगनी रंग में बदल जाते हैं और चारों

प्याज की फसल में लगा पर्पल ब्लॉच रोग।

ओर पीला घेरा बना लेते है। गंभीर संक्रमण की स्थिति में पत्तियां पूरी तरह से सूखकर झुलसने लगती हैं और तने भी प्रभावित हो जाते हैं। इससे पौधे का समग्र विकास रुक जाता हैं। इस रोग का फैलाव मुख्य रूप से हवा, संक्रमित पौधों के अवशेष और अधिक नमी के कारण होता है। अधिक नमी, बारिश या अत्यधिक सिंचाई की स्थितियों में यह रोग तेजी से फैलता है। यह रोग विशेष रूप से उन क्षेत्रों में पाया जाता है जहां नमी की अधिकता होती है।

किसान पर्पल ब्लॉच रोग का इस तरह करें प्रबंधन, कम होगा नुकसान

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि पर्पल ब्लॉच रोग के नियंत्रण के लिए जैविक तरीके अपनाने में ट्राइकोडर्मा का उपयोग काफी प्रभावी होता है। 5 प्रतिशत निमोल का छिड़काव करके भी इस रोग को नियंत्रित किया जा सकता है। रासायनिक दवाओं से इस रोग को नियंत्रित करने के लिए किसान मैनकोजेब 75 डब्लूपी का 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर सकते है। किसान दवा का छिड़काव 10-15 दिन के अंतराल पर दो बार करें। वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग से प्याज की फसल को बचाने के लिए किसान ड्रिप सिंचाई का उपयोग सुबह के समय करें। खासकर प्याज की बुआई से पूर्व बीजों को थायरम या कैप्टन नामक दवाई की 2 ग्राम मात्रा प्रति 1 किलो बीज में मिलाकर बीज को उपचारित करके ही प्याज की बुआई करें। प्याज लगाने के 30 से 35 दिन बाद रोग के नियंत्रण के लिए फफूंदनाशकों का छिड़काव करें। खेत में पानी का जमाव न होने दें क्योंकि अत्यधिक जल जमाव से रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है। नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का संतुलित मात्रा में उपयोग करें क्योंकि नाइट्रोजन की अधिकता से रोग के प्रकोप में वृद्धि हो सकती है।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 22 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में अगले दो दिनों उत्तर बिहार के जिलों में को आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। मौसम शुष्क रहेगा। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छाए रहेंगे।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
21 जनवरी	20.2	10.5
22 जनवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
21 जनवरी	21.0	11.0
22 जनवरी	22.0	11.5
पटना		
21 जनवरी	23	12
22 जनवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 21-01-2025

पूसा में शीघ्र खुलेगा राज्य का पहला मशरूम माल

- पूसा में चल रही तैयारी, उसी माल में बिकेंगे अन्य उत्पाद भी
- अब लोगों को एक ही छत के नीचे मिलेंगे सभी प्रकार के उत्पाद

संस, जागरण • पूसा : मशरूम से निर्मित उत्पादों के लिए अब लोगों को भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। एक ही जगह एक ही छत के नीचे लोगों को सारे उत्पाद मिल जाएंगे। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा मशरूम माल बनाने की योजना पर काम चल रहा है। इसमें मशरूम के विभिन्न उत्पाद तो मिलेंगे ही, विश्वविद्यालय के अन्य उत्पादों की भी बिक्री होगी। किसानों की ओर से तैयार किए गए मशरूम के विभिन्न व्यंजन को जांच कर उसे भी विश्वविद्यालय अपना टैग एवं मोनोग्राम देकर बेचेगा। इससे किसानों को भी लाभ होगा। फिलहाल मशरूम के 12 से अधिक प्रोडक्ट तैयार हो रहे हैं। इसमें गुलाब जामुन, बिस्किट, समोसा, रसगुल्ला, पनीर, लड्डू पाउडर, ठेकुआ एवं कोफ्ता शामिल हैं। यह बिहार का पहला मशरूम माल होगा। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के विज्ञानियों ने मशरूम का बिस्किट, अचार, समोसा, खोवा, पकौड़ा और रवा, पनीर और गुलाब जामुन बनाने की तकनीक विकसित की। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली की वर्चुअल बैठक में इस पर मुहर लग चुकी है। व्यवसायिक उत्पादन के लिए किसानों व उद्यमियों को तकनीक से अवगत कराया जा रहा है। मशरूम की कई प्रजातियां हैं। सूबे में ओएस्टर व बटन का उत्पादन अधिक हो रहा है। शिटाके और हेरेशियम जैसी औषधीय प्रजाति के मशरूम के बारे में भी किसानों को जानकारी दी जा रही है। बोआई के बाद ओएस्टर मशरूम 40 से 50 दिन में तैयार हो जाता है। इसे आसानी से धूप में सुखा सकते है, इसलिए सेल्फ लाइफ की समस्या नहीं होती। हाल में ही विश्वविद्यालय में कृषि विभाग द्वारा चयनित किसानों को यहां प्रशिक्षण दिया गया है।

मशरूम उत्पादन में पूसा की प्रमुख भूमिका : बताते हैं कि मशरूम उत्पादन में पूसा की प्रमुख भूमिका रही है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रशिक्षित किसानों के सहयोग से उत्तर बिहार मशरूम उत्पादन का हब बन रहा है। उत्तर बिहार में सालाना चार हजार टन मशरूम होता है। समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, मधुबनी, दरभंगा, चंपारण समेत अन्य जिलों के छोटे-बड़े एक हजार से अधिक किसान इसकी खेती कर रहे हैं।

Dainik Jagran 21-01-2025

बार-बार बदल रहा मौसम का तेवर घने कोहरे की चादर में लिपटा जिला

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

मौसम का मिजाज मंगलवार को एक बार फिर बदल गया. पूरा जिला घने कोहरे की आगोश में रहा. पूरे दिन लोगों को सूरज के दर्शन नहीं हुये. कनकनी बढ़ी रही. सुबह में सड़कों पर विजिबिलिटी 100 मीटर के भीतर रही. वाहन चालकों को बहुत अधिक परेशानी हुई. सड़कों पर वाहनों की गति धीमी रही. कहीं-कहीं तो बहुत अधिक घना कोहरे के कारण विजिबिलिटी बहुत कम रही. पूरे दिन लोग ठंड से परेशान रहे. ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अलाव जलाकर ठंड से बचने की कोशिश कर रहे थे. वहीं शहर में हीटर व ब्लोअर चलाकर लोगों ने ठंड से निजात पाया. इधर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 22 से 26 जनवरी 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. देर सुबह तक मध्यम से घना कुहासा छा सकता है तथा ठंड के प्रकोप की संभावना बनी रहेगी. पूर्वानुमानित अवधि में अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है. न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 10 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 92 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 17.4 डिग्री सेल्सियस,रहा जो सामान्य से 2.8 डिग्री सेल्सियस कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 10.4 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, January 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678ff29459b2d1ff34c84097

गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण पर चल रहा सात दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

जलवायु परिवर्तन के लिए गन्ना उत्पादन अच्छा विकल्प: डॉ अमरेश

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईंख अनुसंधान संस्थान के सभागार में बिहार राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर चल रहे सात दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न हुआ. इस अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया. अध्यक्षता करते हुए आधार विज्ञान एवं मानविकी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में गन्ना उत्पादन किसानों के लिये बेहतर विकल्प है. प्रशिक्षण में प्राप्त तकनीकी ज्ञान को दैनिक जीवन में उतारने की जरूरत है. सभी प्रतिभागी शुगर केन के एंबेस्डर के रूप में कार्य करेंगे. गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में भारत संपूर्ण विश्व में प्रथम स्थान पर है. फिलहाल 25 मिलियन मैट्रिक टन गन्ना उत्पादन हो रहा है. गन्ना का उत्पादन 84 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादन संभव हो रहा है. भूमि में जाने वाली कार्बन से भी किसान लाभान्वित होते हैं. गन्ने के साथ अंतर्वर्ती फसलों का चयन करने एवं वैज्ञानिकी विधि अपनाने की जरूरत है. देश के प्रत्येक शुगर मिल में एक टिश्यू कल्चर लैब एवं बायो कंट्रोल यूनिट निश्चित रूप से लगाए जाते हैं. गन्ना के सभी पार्ट्स बहुउपयोगी होते हैं. बेहतर उत्पादन के दृष्टिकोण से बिहार में चीनी मिल की भारी कमी है. बिहार सरकार भी इस दिशा में क्रियाशील है. मिलों की संख्या बढ़ाने की दिशा में केंद्र सरकार से लेकर राज्य सरकार कार्य कर रही है. बहुत ही जल्द परिणाम गन्ना उत्पादक किसानों के सामने होगा. स्वागत भाषण करते हुए ईंख अनुसंधान संस्थान पूसा के निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह ने कहा कि राज्य के राजस्व एवं संसाधन बढ़ाने की दिशा में विवि अग्रणी भूमिका निभा रही है. विभागाध्यक्ष एसके चौधरी ने कहा कि चीनी के उपयोग बढ़ने पर ही अधिकाधिक रोगों से लोगों को सामना करना पर रहा है. लोग गुड़ का उपयोग करना भूल चुके हैं. गुड़ का सेवन पौष्टिकता से परिपूर्ण होता है. शुगर केन के वैज्ञानिक ई. अनुपम अमिताभ ने प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण में 09 जिले के 45 किसान एवं मिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया. संचालन वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी मीना ने किया. वहीं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ. एसएन सिंह ने किया. मौके पर डॉ. डीएन कामत, डॉ. सीके झा, डॉ. नवनीत कुमार, डॉ. धर्मेंद्र कुमार के अलावे जिला ईंख पदाधिकारी के प्रतिनिधि के रूप में हरेराम प्रसाद आदि मौजूद थे.

प्रमाणपत्र वितरण करते डीन.

प्रभात खबर
Wednesday, January 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/678ff29459b2d1ff34c8408e

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। देर सुबह तक कुहासा छा सकता है तथा ठंड के प्रकोप की संभावना रहेगी। इस दौरान अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
22 जनवरी	20.2	10.5
23 जनवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
22 जनवरी	21.0	11.0
23 जनवरी	22.0	11.5
पटना		
22 जनवरी	23	12
23 जनवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 22-01-2025

उत्तर बिहार के जिले में अभी कुहासे के साथ ठंड रहेगी बरकरार, रहें सतर्क

संस, जागरण • पूसा : उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। देर सुबह तक मध्यम से घना कुहासा छा या रहेगा। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का बताना है कि घना कुहासा एवं पछिया हवा चलने के कारण उत्तर बिहार में अभी ठंड का प्रकोप जारी रहेगा। अगले 4 दिनों के पूर्वानुमान के मुताबिक अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री के बीच रहेगा। मौसम विभाग के द्वारा मंगलवार का अधिकतम तापमान 17.4 एवं न्यूनतम तापमान 10.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

अधिकतम तापमान सामान्य से लगभग तीन डिग्री कम एवं न्यूनतम तापमान सामान से दो डिग्री अधिक है। अगले चार दिनों तक 5 से 10 किलोमीटर की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी। इससे ठंड का प्रकोप जारी रहेगा।

Dainik Jagran 22-01-2025

पछिया हवा जारी रहने का पूर्वानुमान, अभी ठंड से निजात नहीं मिलने की संभावना

2.8 डिग्री सेल्सियस गिरा दिन का तापमान, कुहासा से परेशानी

मौसम का मिजाज

पूसा, निज संवाददाता। कड़ाके की ठंड व बादल के बीच मंगलवार का दिन बीत गया। इस दौरान लोग धूप को तरसते रहे। वहीं सुबह कुहासा वाहन चालकों को परेशान करता रहा। ठंड के कारण लोग दिन भर ठिठुरते रहे। इस दौरान लोग अलाव व बिजली हीटर आदि से चिपके रहे।

मौसम विभाग की मानें तो इस दौरान अधिकतम तापमान 17.4 डिग्री सेल्सियस रहा। जो सामान्य से 2.8 डिग्री कम बताया गया है। वहीं न्यूनतम तापमान भी गिरावट के साथ 10.4 डिग्री रिकार्ड किया गया। मौसम विभाग के अनुसार आगे भी ठंड बरकरार रहने की संभावना है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 26 जनवरी तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान साफ व मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस दौरान देर सुबह तक मध्यम से घना कुहासा रह सकता है। मौसम पूर्वानुमान की अवधि में औसतन 5 से 10 किमी. प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चल सकती है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री एवं न्यूनतम 12 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।

मंगलवार सुबह पूसा में लाइट जलाकर चलते वाहन। कुहासे से परेशानी बढ़ गई है।

ठंड से जनजीवन पस्त घूरे के सहारे जिंदगी

ताजपुर। ताजपुर व आसपास में मंगलवार सुबह घने कोहरे के बीच अचानक बढ़ी ठंड से लोगों का जीना दूभर हो गया है। ठंड से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। लोग अलाव के सहारे दिन काट रहे हैं। गांव में खेती किसानी भी प्रभावित हो गई। सर्द हवा के कारण लोगों को घर से निकलना मुश्किल हो गया।

Hindustan 22-01-2025

गन्ना उत्पादन बढ़ाना समय की मांग: डीन

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के डीन (बेसिक साइंस) डॉ. अमरेश चन्द्रा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में गन्ना उत्पादन व इससे जुड़ा व्यवसाय एक बेहतर विकल्प है। जरूरत है इसके उत्पादन के साथ प्रसंस्करण व ब्रांडिंग के क्षेत्र में सशक्त होने की। इसके तकनीकी पहलुओं को सशक्त करने में विवि हरसंभव सहयोग में जुटा है।

वे मंगलवार को विवि के ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के सभागार में प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था बिहार राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण के समापन सत्र का।

मंगलवार को कृषि विवि में प्रशिक्षणार्थी को सर्टिफिकेट देते वैज्ञानिक।

Hindustan 22-01-2025

भास्कर 23/1/25 पेज 17

वैज्ञानिकों ने किसानों को दी मोटे अनाज के उत्पादन की जानकारी

सलाह : श्री अन्न मूल्य शृंखला विकास जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | मोरवा

जनकल्याण किसान उत्पादक सहयोग समिति (एफपीओ) मोरवा से संबंधित किसानों का एक दिवसीय कार्यशाला निकसपुर पंचायत अंतर्गत हिलटॉप एकेडमी चाकोभिण्डी में सुधीर कुमार राय की अध्यक्षता व जयकृष्ण राय के संचालन में आयोजित की गई। किसानों को राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वैज्ञानिक अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ उषा सिंह व कृषि वैज्ञानिक डॉ नीलम ने श्री अन्न मूल्य शृंखला विकास जागरूकता कार्यक्रम के तहत मोटे अनाज के उत्पादन व खाने में प्रयोग करने से होनेवाले लाभ के संबंध में विस्तृत जानकारी देकर मोटा अनाज उत्पादन करने का किसानों से आह्वान किया। वैज्ञानिकों ने किसानों से मोटा अनाज मरुआ,बाजरा की खेती करने व अनाज को विश्वविद्यालय द्वारा खरीदने का आश्वासन दिया। वहीं मरुआ व बाजरा के रोटी खाने व अन्य सामग्री बनाने के संबंध में भी बताया। वहीं नाबार्ड जिला विकास प्रबंधक अभिनव कृष्ण ने किसानों व एफपीओ को हरसंभव मदद करने का आश्वासन दिया।इस अवसर पर वैज्ञानिकों ने मरुआ, बाजरा व मशरूम की अच्छे ढंग से खेती कर उत्पादन करने के लिए राजपति राय, पिंकी देवी, संजीत कुमार राम व रंजना देवी को सम्मानित भी किया गया। मौके पर संतोष कुमार शर्मा, जगदीश राय, रामबाबू पंडित,शेखर राय सिंटू,राम सकल राम, धर्मेन्द्र राम, शिवशंकर राय,अमर शंकर राय छोटू, ज्योति शंकर राय, सुनीता देवी,विनय कुमार पांडे, देवेन्द्र राम, उषा देवी, रंजना देवी समेत दर्जनों महिला व पुरुष किसान उपस्थित थे।

कार्यशाला में मौजूद किसान।

भास्कर 23/1/25 पेज 15

मौसम की मार • 26 तक 5 से 10 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलने की है संभावना, दिन भर कुहासे में लिपटा रहा शहर

24 घंटे में अधिकतम तापमान 2 डिग्री गिरा, बढ़ी ठंड

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

24 घंटे के अंदर अधिकतम तापमान में 2 डिग्री गिरावट के साथ ठंड में बढ़ने से लोगों की परेशानी बढ़ गयी। वहीं पछिया हवा के साथ ही अचानक कनकनी बढ़ रही। वहीं सुबह में कुहासा के कारण वाहनों के भी आवाजाही में परेशानी हुई। पूरे दिन धूप नहीं निकला। आसमान पूरे दिन बादल ही लगा रहा। इसके कारण लोगों को दिनचर्या में दिक्कतें हुई। वहीं बुधवार को 24 घंटे में 2 डिग्री.से. कमी के साथ अधिकतम तापमान 15.5 रहा, जबकि न्यूनतम तापमान 10.9 डिग्री.से. रिकॉर्ड किया। मौसम को लेकर डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम विभाग के अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में 26 जनवरी तक आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस बीच देर सुबह तक मध्यम से घने कुहासा छा सकता है तथा ठंड के प्रकोप की सम्भावना बनी रहेगी। वहीं पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। वहीं न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। जबकि पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 10 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। इस बीच सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 92 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

अधिकतम पारा 15.5° | न्यूनतम पारा 10.9° | विजिबिलिटी 10 मीटर

सदर अस्पताल में भर्ती मरीजों को हो रही परेशानी, हीटर के उपयोग पर है रोक

समस्तीपुर | सदर अस्पताल में स्वास्थ्य सेवा में लगातार सुधार होने का दावा किया जाता है। मगर सदर अस्पताल में भर्ती मरीजों को इस कंपकपाती ठंड में अस्पताल प्रबंधन कोई खास इंतजाम नहीं कर रहा है। सुरक्षा कारणों से हीटर के उपयोग पर रोक है। जबकि न्यूनतम तापमान 10 डिग्री के आसपास रहने के कारण ठंड और कनकनी बढ़ने के बाद भर्ती मरीजों का रात काटना मुश्किल हो जाता है। अस्पताल प्रबंधन के भरोसे बगैर कंबल के आए मरीजों के लिए यह किसी आफत से कम नहीं है। वैसे ठंड बढ़ने से परेशानी बढ़ गई है।

ठंड का अधिक असर वृद्ध व बच्चों पर पड़ता है। इस मौसम में उनका विशेष रूप से ख्याल रखने की आवश्यकता होती है। काफी ठंडी हवा चल रही है और तापमान बहुत कम है इसलिए बच्चों को हवा से बचाने की आवश्यकता है। बच्चों के मौसमी बीमारियों की चपेट में आने पर उन्हें नजदीक के चिकित्सक से दिखाना चाहिए।
-डॉ आशुतोष कुमार, शिशु रोग विशेषज्ञ।

आठवीं तक की पढ़ाई 25 जनवरी तक बंद

जिला दंडाधिकारी रोशन कुशवाहा ने जिले के सभी निजी व सरकारी विद्यालयों (प्री-स्कूल एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों सहित) में कक्षा 01 से 08 (प्री-प्राईमरी सहित) के लिए शैक्षणिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया है।साथ ही अन्य कक्षाएं पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 04:00 बजे तक चलेंगे। इसका पत्र निर्गत करते हुए डीएम ने विद्यालय प्रबंधन को निदेश दिया है कि वे आदेश के अनुरूप शैक्षणिक गतिविधियों को पुनर्निधारित करें।वही प्री-बोर्ड या बोर्ड की परीक्षा के लिए संचालित किये जाने वाली विशेष कक्षाओं व परीक्षाओं के संचालन को इससे मुक्त रखा गया है। यह आदेश समस्तीपुर जिले में दिनांक 23 जनवरी से 25 तक प्रभावी रहेगा। मौसम विभाग का कहना है कि 26 जनवरी तक ठंड में कमी की संभावना कम है। इस दौरान पछिया हवा चलती रहेगी।

भास्कर 23/1/25

सलाह • किसान वैज्ञानिक तकनीक से केले के बागों का प्रबंधन कर ठंड में भी कर सकते हैं बेहतर उत्पादन

केले की खेती पर ठंड का पड़ता है दुष्प्रभाव

भास्कर न्यूज़ | पूसा

कृषि वैज्ञानिक ने कहा : फूल निकलने के समय ठंड से बचाने की जरूरत

केले की खेती पर ठंड का काफी अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। ठंड के कारण केले के घौद (बंच) आभासी तने से बाहर ठीक से नहीं निकल पाते हैं। ठंड के दिनों में केले में लगने वाले इस विकार को (बनाना थ्रोट चोकिंग) कहा जाता है। बिहार के केला उत्पादक किसान केले की खेती पर ठंड के दिनों में पड़ने वाले दुष्प्रभाव को वैज्ञानिक तकनीक से उसका प्रबंधन करते हुए केले से सालों भर बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि बिहार में केला की कुल खेती 34.64 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में होती है जिससे कुल 1526 हजार टन केले का उत्पादन प्राप्त होता है। बिहार की उत्पादकता 44.06 टन प्रति हेक्टेयर है। राष्ट्रीय स्तर पर केले की खेती की बात करें तो केला देश के 880 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में उगाया जाता है जिससे कुल 30,008 हजार टन उत्पादन प्राप्त होता है। केला की राष्ट्रीय उत्पादकता 34.10 टन प्रति हेक्टेयर है। केले की खेती के लिए 13 से 40 डिग्री के मध्य का तापमान बेहतर माना जाता है।

बनाना थोट चोकिंग से ग्रसित केले के पौधे।

केले की खेती पर कैसे पड़ता है ठंड का दुष्प्रभाव : कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि केले के पौधें का सक्रिय विकास तब रुक जाता है जब ठंड के दिनों में तापमान 10 डिग्री से कम हो जाता है। विकास रुक जाने से केले की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और गंभीर मामलों में केले के ऊतक मरने लगते हैं। उन्होंने बताया कि बंच यानी (गुच्छा) का विकास सामान्य होता है लेकिन जब फूल निकलने के समय में तापमान कम होता है तब गुच्छा यानी आभासी तना (स्यूडोस्टेम) से बाहर आने में असमर्थ हो जाता है। उन्होंने बताया कि थ्रोट चोकिंग विकार का कारण रासायनिक कारण भी हो सकता है। रासायनिक कारणों में जैसे केले के बागों में कैल्शियम और बोरॉन की कमी भी इस तरह के लक्षणों का कारण बन सकते है। उन्होंने बताया कि इस विकार में पुष्पक्रम का बाहर का हिस्सा बाहर आ जाता है और आधार (बेसल) भाग आभासी तने में फंस जाता है। इसलिए इसे गले का चोक यानी (थ्रोट चॉकिंग विकार) कहा जाता है। इस विकार के कारण केले के गुच्छे को परिपक्व होने में कभी कभी 5 से 6 महीने तक का समय लग जाता है।

केले पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का ऐसे करें प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि बिहार में टिशू कल्चर केला को लगाने का सर्वोत्तम समय मई से लेकर सितंबर तक का है। इस समय के बाद लगाएं जाने वाले केले के बागों पर ठंड का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। मई से सितंबर तक केले को लगाने का सबसे बड़ा सिद्धांत यह होता है कि इस समय लगाएं गए केले के बागों में ज्यादा ठंड के दौरान फूल खुद बखुद नहीं निकलता है। उन्होंने बताया कि अत्यधिक ठंड के दौरान केले के पौधों में फूल नहीं ही निकलना चाहिए क्योंकि अत्यधिक ठंड में केले के बंच की बढ़वार बिल्कुल भी अच्छी नहीं होती है। ज्यादा ठंड में कभी कभी बंच ठीक से आभासी तने से बाहर भी नहीं निकल पाते है। उन्होंने बताया कि उत्तक संवर्धन से लगाएं गए केले के पौधों में फूल 9 वें महीने में आने लगता है जबकि सकर से लगाए केले के पौधों में फूल आने में 10 से 11 वें महीने तक का समय लग जाता है। उन्होंने कहा कि केला उत्पादक किसानों के लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि केला एक ऐसी फसल है जिसे पानी की पर्याप्त आपूर्ति की आवश्यकता होती है।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। देर सुबह तक कुहासा छा सकता है तथा ठंड के प्रकोप की संभावना रहेगी। इस दौरान अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
23 जनवरी	20.2	10.5
24 जनवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
23 जनवरी	21.0	11.0
24 जनवरी	22.0	11.5
पटना		
23 जनवरी	23	12
24 जनवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagran 23-01-2025

सर्दी का सितम जारी, पूरे दिन नहीं निकली धूप, बर्फीली हवा की गति बढ़कर हुई 11 किमी प्रति घंटे

सामान्य से 6 डिग्री लुढ़का दिन का पारा

मौसम की मार

समस्तीपुर, नगर संवाददाता। बुधवार सुबह भी जिले में घना कुहासा छाया रहा। वहीं तापमान में गिरावट व बर्फीली हवा की गति बढ़कर 11 किलोमीटर प्रति घंटे हो जाने से सर्दी का सितम पूरे दिन जारी रहा। गलन व ठिठुरन से लोगों का जनजीवन बेहाल रहा। सुबह में ओस की बूंदे बारिश के समान टपकती रहीं। इस सीजन में पहली बार लगातार तीन दिनों से ठंड का प्रकोप जारी है। कड़ाके की ठंड को देखते हुए जिला प्रशासन प्राइमरी स्कूलों को बंद कर दिया है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार ठंड का सितम अगले दो दिनों तक जारी रहेगा। इस दौरान घने कोहरे के आसार हैं। लेकिन पछिया हवा को जोर जारी रहेगा। दिन चढ़ने के बाद कोहरे का प्रकोप कम होने के बावजूद पूरे दिन धूप नहीं निकली।

मवेशियों पर आफत : जिले में लगातार पड़ रही कड़ाके की ठंड का असर मवेशियों पर पड़ रहा है। सर्द हवा से पशु बेहाल हैं। बड़ी संख्या में बीमार पड़ रहे हैं। ठंड के कारण दुधारू मवेशियों के दूध कम हो गए हैं। दूध में 30 से 50 फीसदी की गिरावट आई है। जिससे जिले में इसकी आपूर्ति प्रभावित हुई है। सर्दी से पशुओं को निमोनिया, नजला, फेफड़ों का संक्रमण व टाइफाइड की चपेट में आ रहे हैं।

दस बजे तक घरों में लोग दुबके रहे : सुबह में दस बजे तक लोग घरों में दुबके रहे। चौक-चौराहों से लेकर खेत-खलिहानों में वीरानगी का आलम रहा। शाम को छह बजते-बजते चौक-चौराहों पर सन्नाटा पसर गया। लोग लकड़ी, भूसा-पुआल आदि को जला कर अलाव तापते दिखे। लगातार कड़ाके की ठंड का जिले में चौतरफा असर दिख रहा है। रोज सैकड़ों की संख्या ठंडा जनित रोगों की चपेट में आ रहे हैं। सदर अस्पताल से लेकर निजी क्लीनिकों तक में ठंड जनित रोगों से बीमार लोगों की भीड़ उमड़ रही है। छोटे-छोटे बच्चे निमोनिया, कोल्ड डायरिया व दमफूली रोगों की चपेट में आ रहे हैं। अस्थमा व हृदय रोग से पीड़ित लोगों की भी परेशानी बढ़ गई है। गुरुवार को न्यूनतम तापमान में वृद्धि होने की संभावना व्यक्त की

साल का दूसरा सबसे ठंडा दिन रहा बुधवार : पूसा, निज संवाददाता। हाड़ कंपाने वाले ठंड के साथ बुधवार को न भी कोल्ड डे की स्थिति बनी रही। दिन भर लोग धूप को लेकर तरसते रहे। सुबह कई घंटो तक शीत की बूंदे वर्षा के रूप में टपकती रही। इस दौरान दिन का तापमान 15.5 रहा। जो सामान्य से 5.6 डिग्री कम था।

न्यूनतम तापमान भी गिरावट के साथ 10.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। मौसम विभाग के अनुसार इस दौरान सुबह में सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत रहा। जबकि दोपहर में यह 91 प्रतिशत रिकार्ड किया गया। इस दौरान करीब 5 किमी. प्रति घंटा की गति से जारी पछुआ हवा कनकनी को लगातार बढ़ाती रही। जिससे लोग ठिठुरते रहे। यह स्थिति अगले दो दिनों तक बनी रहने की संभावना है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्तार ने बताया कि आज वर्ष का दूसरा सबसे ठंडा दिन रहा। इससे पूर्व 5 जनवरी को दिन का तापमान 14.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया था।

बुधवार सुबह पूसा-सैदपुर पुल के निकट कुहासे के बीच गुजरते लोग।

ताजपुर में बुधवार को मोतीपुर सब्जी मंडी में पसरा सन्नाटा।

रसोइया की मौत, विद्यालय व गांव में शोक

शिवाजीनगर। डुमरा मोहन पंचायत के प्राथमिक विद्यालय शिवरामा मुसहर टोल की रसोईया शांति देवी (51) की बुधवार को ठंड की चपेट में आने से मौत हो गयी। इससे विद्यालय एवं गांव में शोक की लहर दौड़ गई। प्रभारी एचएम राजेश कुमार ने बताया कि रसोईया शांति देवी बुधवार को विद्यालय में खाना बना कर छात्र-छात्राओं को खिला घर चली गई थी। ठंड लगने के कारण उसकी मौत हो गई। मृत रसोइया के पति गणेश सदा की भी कुछ दिन पूर्व ही मौत हुई थी। बीईओ रामजन्म सिंह ने बताया कि रसोइया की मौत की सूचना एचएम ने दी है। सरकारी प्रावधानों के अनुसार रसोईया के आश्रित को राशि दिलायी जाएगी। रसोईया की मौत पर मुखिया सुनैना देवी, समाज सेवी संतोष कुमार सिंह ने परिजनों को सांत्वना दी। कबीर अंत्येष्टि के तहत दाह संस्कार के लिए राशि भी दी गयी।

मौसम की मार से मोतीपुर सब्जी मंडी बेजार

ताजपुर। ताजपुर एवं आसपास में मंगलवार की सुबह से जारी घने कोहरे एवं कड़ाके की ठंड से आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। मौसम की मार से मोतीपुर सब्जी मंडी भी बेजार है। मंदी की मार से कारोबार प्रभावित है। बुधवार सुबह देर तक मंडी में वीरानी छाई रही। किसान व गद्दीदार खरीदार के आने और सौदा बिकने का इंतजार करते रहे। सुबह दस बजे के बाद इक्के दुक्के खरीदार मंडी में घूमते नजर आए। दोपहर में कुछ सुगबुगाहट नजर आई। सब्जियों के दाम नहीं बढ़ने एवं सौदा की बिक्री नहीं होने से सब्जी उत्पादक किसान के चेहरे पर मायूसी देखी गई। सब्जी मंडी के दुकानदार इम्तेयाज आलम उर्फ लड्डू, कमलेश कुमार, मनोज कुमार, विनोद कुमार आदि ने बताया कि अभी भी सब्जी मंडी में पूस जैसी मंदी छाई हुई है। सिर्फ हाजिरी लग रही है।

Hindustan 23-01-2025

स्कूल में होता है अनुशासन का समावेश : वैज्ञानिक

पूसा,निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के सेवानिवृत वैज्ञानिक डॉ. शंभूशरण ठाकुर ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य है। इनके चहुंमुखी विकास में अभिभावक व योग्य शिक्षको की भूमिका अहम है। वे बच्चों में शिक्षा, अनुशासन, संस्कार का समावेश कर देश का भविष्य निर्माण करते हैं। जरूरत है गुरु-शिष्य परंपरा को और सशक्त करने की। वे बुधवार को टीचर्स कॉलनी स्थित कृष्ण कुंज विद्यालय की 10वीं वार्षिकोत्सव को संबोधित कर रहे थे। निदेशक आलोक रंजन ने कहा कि विद्यालय में शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता है। इसमें प्राथमिक शिक्षा बच्चों की नींव होती है। मौके पर शिक्षक रामकुमार व अन्य ने भी विचार व्यक्त किया। इस दौरान स्कूली बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें चयनित बच्चे पुरस्कृत किये गये। स्वागत प्राचार्य कुमारी प्रियंका, संचालन राजीव कुमार वर्मा, धन्यवाद कविता कुमारी ने किया।

Hindustan 23-01-2025

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 101 वीं जयंती आज

आज कर्पूरीग्राम आयेंगे उपराष्ट्रपति

कॉलेज परिसर में तैयारी को लेकर कैंप कर रहे सांसद व अन्य .

कॉलेज परिसर में निर्मित पंडाल .

सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते अधिकारी.

मंच पर तैयारी का जायजा लेते डीएम व अन्य .

तैयारी पूरी

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 101 वीं जयंती की सारी तैयारी पूरी हो चुकी है. जयंती समारोह में शिरकत करने देश के उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान व बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी कर्पूरीग्राम पहुंच रहे हैं. उनके आगमन को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये हैं. चप्पे-चप्पे पर पुलिस बल की तैनाती की गयी है. सभी सड़कों की दोनों ओर बैरिकेटिंग करायी गयी है. जगह-जगह ड्रॉप गेट बनाये गये हैं. कई स्तर से सुरक्षा व्यवस्था की मॉनीटरिंग की जा रही है. गुरुवार को सबों के कारकेट का फाइनल रिहर्सल किया गया. गाड़ियों का काफिला हेलीपैड से स्मृति भवन तक पहुंचा. जहां चार गाड़ियों को स्मृति भवन तक ले जाने का फाइनल टच किया गया. उनके आगमन को लेकर चार हेलीपैड भी बनाये गये हैं. हेलीपैड पर भी आज हेलीकॉप्टर लैंड कराकर फाइनल टच किया गया. कार्यक्रम स्थल पर कई वरीय पदाधिकारी पहुंचकर तैयारी व सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते रहे. जिलाधिकारी रोशन कुशवाहा जिले के वरीय अधिकारियों के साथ कॉलेज परिसर में बने पंडाल का जायजा लिये. मंच भी जाकर देखा. अधिकारियों को कई निर्देश दिये गये. सुरक्षा के मद्देनजर पंडाल में मंच के आगे बड़ा सा डी एरिया बनाया गया है. डी एरिया के बाद वीआइपी के बैठने की व्यवस्था की गयी है. आंगतुक सबसे पहले कर्पूरी स्मृति भवन पहुंचेंगे. जहां सर्वधर्म प्रार्थना होगी. जननायक के तैल चित्र पर माल्यार्पण किया जायेगा.

गोखुल कर्पूरी फूलेश्वरी डिग्री महाविद्यालय स्थित त्रिमूर्ति भवन में माल्यर्पण कार्यक्रम होगा. कॉलेज परिसर में अतिथियों के द्वारा पौधरोपण भी किया जायेगा. कॉलेज परिसर में बनाये गये जननायक की पैतृक झोपड़ी की झांकी भी सभी आंतुगक देखने जायेंगे. इस झोपड़ी को पूरी तरह वैसा ही बनाया गया है, जिस तरह की झोपड़ी में जननायक का जन्म हुआ था और वे पले बढ़े थे.

झोपड़ी में परंपरागत चीजें खटिया, कोठी, चूल्हे, जांता, उखली-मूसल, सिलवट, ढिबरी आदि भी रखी गयी है. झोपड़ी के बाहर फूस का बैठका भी बना हुआ है. कॉलेज परिसर में राज्यसभा सांसद रामनाथ ठाकुर खुद बैठकर तैयारी की मॉनीटरिंग कर रहे हैं. उनके साथ विधान पार्षद डॉ. तरुण कुमार, भाजपा नेता मनोज कुमार गुप्ता, जदयू नेता बनारसी ठाकुर सहित कई लोग तैयारी में लगे हुए हैं.

केन्द्रीय विश्वविद्यालय में आज होगी जननायक की प्रतिमा का अनावरण : पूसा. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर में जननायक भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की मूर्ति का अनावरण व मीडिया सेंटर का उद्घाटन आज कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भारत सरकार भगीरथ चौधरी करेंगे. विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि इसके अतिरिक्त जननायक की मूर्ति का अनावरण भी भगीरथ चौधरी के कर कमलों से किया जाएगा. विश्वविद्यालय में हाल ही में किसान छात्रावास और एक पार्क का नामकरण भी कर्पूरी ठाकुर के नाम पर किया गया है. विश्वविद्यालय का मीडिया सेंटर अत्याधुनिक तरीके से तैयार किया गया है. जिसके अंतर्गत किसानों की सुविधा के लिए पूसा कम्युनिटी रेडियो की भी शुरुआत जल्दी ही की जायेगी. मीडिया सेंटर में ऑडियो वीडियो रिकॉर्डिंग की भी सुविधा है जो कृषि पत्रकारिता के छात्रों के लिए लैब का काम करेगी. साथ ही किसानों को वैज्ञानिक जानकारी यू ट्यूब, फेसबुक तथा अन्य सोशल मीडिया माध्यम से उपलब्ध करवायेगी.

भास्कर 24/1/25 पेज 21

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड ने दी जानकारी

किसान वैज्ञानिक तकनीक से अगले माह करें अगेती भिंडी की खेती, मिलेगी अच्छी आमदनी

इसपर उपज अधिक : भिंडी की खेती के लिए दोमट और बलुई दोमट मिट्टी उत्तम

भास्कर न्यूज | पूसा

भिंडी काफी लोकप्रिय सब्जियों में से एक है। इसकी मांग बाजारों में सालों भर बनी रहती है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी भिंडी का सेवन काफी लाभकारी माना जाता है। भिंडी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन ए, बी और सी जैसे अनेकों गुणकारी तत्व पाए जाते हैं। बिहार के किसान आने वाले फरवरी और मार्च के महीने में आगाती भिंडी की वैज्ञानिक तकनीक से खेती कर बेहतर उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड डॉ. आरके तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि भिंडी उत्पादक किसानों को पहले भिंडी तोड़ने में हाथ नोचने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। हालांकि जबसे पुसा विवि के द्वारा बेहद कम कीमत में भिंडी तोड़ने वाली छोटी मशीन विकसित की गई है तबसे किसानों की यह समस्या भी दूर हो गई हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया

खेतों में लगी भिंडी की फसल।

भिंडी की खेती के लिए दोमट और बलुई दोमट मिट्टी काफी उत्तम मानी जाती है। अच्छी पैदावार के लिए मिट्टी का पीएच मान 6 से 6.8 के बीच होना जरूरी होता हैं। किसान भिंडी लगाने से पहले तीन से चार बार खेतों की अच्छी से जुताई कराकर मिट्टी को भुरभुरा बना दे तथा बाद में पाटा चलाकर खेत को समतल कर दें। उन्होंने बताया की भिंडी लगाने वाले एक हेक्टेयर खेत में 200 से 250 किलो सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 से 150 किलो नाइट्रोजन खाद, 50 से 60 किलो फास्फोरस और पोटेशियम खाद देने की जरूरत होती है।

भिंडी में लगने वाली बीमारी येलो भेन मोजायक वायरस नुकसानदायक

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि भिंडी में ऐसे तो कोई खास बीमारी नहीं लगती है। लेकिन इसमें लगने वाली बीमारी येलो भेन मोजायक वायरस काफी मुख्य और खतरनाक बीमारी है। इस बीमारी में पत्तियों पर पीले पीले धब्बे बन जाते हैं तथा संक्रमण जब रफ्तार पकड़ ले तो पौधे धीरे-धीरे मर जाते हैं। उन्होंने बताया कि चूंकि यह बीमारी एक वायरस से संबंधित है। इसलिए इसका कोई खास दवाई अभी उपलब्ध नहीं है। यह बीमारी भिंडी में न लगे इसके लिए किसान रोपाई के दौरान भिंडी के रोग प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें। भिंडी रोपाई से पूर्व बीज को उपचारित करके ही उसकी रोपाई करें। रोपाई से पूर्व संबंधित खेतों की मिट्टी में जरूरत के अनुसार फ्यूराडन जैसे कीटनाशक भी मिलाएं। इस बीमारी से संक्रमित भिंडी के पेड़ को किसान खेत से उखाड़कर बाहर निकाल दें।

भिंडी की खेती: ये किस्म किसानों के लिए लाभकारी, इससे अधिक उपज मिलेगी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया की पूसा भिंडी 5, काशी लालिमा, अर्का, अनामिका आदि भिंडी की प्रभेद किसानों के लिए बेहतर उत्पादन के दृष्टिकोण से काफी लाभकारी हैं। उन्होंने कहा कि अभी हाल में विकसित हुई भिंडी की नई प्रजाति पूसा भिंडी 5 काफी बेहतर प्रजाति है। इसमें दो तीन या इससे भी अधिक कल्ले निकलते हैं जिससे उत्पादन अधिक मिलता है।

वि. में मीडिया सेंटर का उद्घाटन करेंगे किसान कल्याण राज्य मंत्री

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मीडिया सेंटर का उद्घाटन 24 जनवरी को कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भगीरथ चौधरी करेंगे। कुलपति डा. पी एस पांडेय ने कहा कि इसके अतिरिक्त भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की मूर्ति का अनावरण भी वे करेंगे। विश्वविद्यालय में हाल ही में किसान छात्रावास और एक पार्क का नामकरण भी कर्पूरी ठाकुर के नाम पर किया है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय का मीडिया सेंटर अत्याधुनिक तरीके से तैयार किया गया है। इसके तहत किसानों की सुविधा के लिए पूसा कम्युनिटी रेडियो की भी शुरुआत जल्दी ही की जाएगी। मीडिया सेंटर में आडियो वीडियो

मीडिया सेंटर • जागरण

रिकॉर्डिंग की भी सुविधा है जो कृषि पत्रकारिता के छात्रों के लिए लैब का काम करेगी। साथ ही किसानों को वैज्ञानिक जानकारी यू ट्यूब, फेसबुक तथा अन्य इंटरनेट मीडिया माध्यम से उपलब्ध करवाएगी। मीडिया सेंटर का उपयोग भविष्य में डिजिटल एग्रीकल्चर और डिजिटल लर्निंग के लिए भी किया जा सकेगा। कुलपति ने कहा कि मीडिया सेंटर उपयोगी होगा।

Dainik Jagran 24-01-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। देर सुबह तक कुहासा छा सकता है तथा ठंड के प्रकोप की संभावना रहेगी। इस दौरान अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 12 से 15 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
24 जनवरी	20.2	10.5
25 जनवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
24 जनवरी	21.0	11.0
25 जनवरी	22.0	11.5
पटना		
24 जनवरी	23	12
25 जनवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 24-01-2025

मौसम: आज धूप निकलने की जताई संभावना

पूसा, निज संवाददाता। ठंड का प्रकोप गुरुवार को भी जारी रहा। इस दौरान दिन में हल्की धूप से लोगों ने राहत महसूस की। बावजूद तेज पछुआ हवा कनकनी को लगातार बढ़ाती रही। जिससे लोग ठिठुरते रहे। इस दौरान दिन का तापमान 18.8 डिग्री रहा। जो सामान्य से 2.3 डिग्री कम है। न्यूनतम तापमान भी हल्के सुधार के साथ 12 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस दौरान सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 98 प्रतिशत एवं दोपहर में 76 प्रतिशत रहा। वहीं करीब 7 किमी. प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चलती रही। इस संदर्भ में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पूसा के सैदपुर पुल के निकट हल्के कुहासे के बीच नदी में गाद से बना टीला।

केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्तार ने बताया कि शुक्रवार सुबह तराई व पश्चिम बिहार के क्षेत्र में मध्यम से घना एवं अन्य क्षेत्रों में हल्का से मध्यम कुहासा रह सकता है। अब अगले दिन से धूप निकलने की संभावना है। इस दौरान रात के तापमान में 2 से 3 डिग्री बढ़ोतरी हो सकती है। पछुआ हवा तेज हो सकती है। उन्होंने किसानो से आलू की फसल में झुलसा रोग लगने की संभावना जताते हुए बचाव के लिए वैज्ञानिको के सुझाव से रिडोमिल दवा छिड़काव करने की सलाह दी है। वहीं पशुपालको से दुधारू पशुओं का समुचित रखरखाव व खानपान देने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि दुधारू पशुओं के खानपान में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाना लाभकारी होगा।

Hindustan 24-01-2025

कृषि विवि में कर्पूरी ठाकुर की मूर्ति का अनावरण आज

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के मीडिया सेंटर का शुक्रवार को केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भगीरथ चौधरी उद्घाटन करेंगे। कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने बताया कि मौके पर भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की मूर्ति का अनावरण भी केन्द्रीय मंत्री करेंगे। उन्होंने बताया कि विवि ने हाल ही में किसान छात्रावास और एक पार्क का नामकरण कर्पूरी ठाकुर के नाम पर किया है।

उन्होंने बताया कि विवि का मीडिया सेंटर अति आधुनिक तकनीक से लैश है। जिसके सहयोग से किसानों की सुविधा के लिए पूसा कम्युनिटी रेडियो की शुरुआत जल्द की जायेगी। मीडिया सेंटर में आडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग की भी सुविधा है। जो कृषि पत्रकारिता के छात्रों के लिए लैब का काम करेगी। साथ ही किसानों को वैज्ञानिक जानकारी यू-ट्यूब, फेसबुक व अन्य सोशल मीडिया माध्यम से उपलब्ध कराया जायेगा। मीडिया सेंटर का उपयोग भविष्य में डिजिटल एग्रीकल्चर और डिजिटल लर्निंग के लिए भी किया जा सकेगा। मीडिया सेंटर डिस्टेंस लर्निंग के लिए भी उपयोगी साबित होगा। उन्होंने बताया कि कम्युनिटी रेडियो के कार्यक्रम स्थानीय लोगों से जुड़े होंगे और उनके फीडबैक के आधार पर तय किये जायेंगे।

जदयू कार्यकर्ता समारोह में जाएंगे

सरायरंजन। प्रखंड के हरिलोचनपुर गांव में गुरुवार को जदयू कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता करते हुए जदयू जिला किसान प्रकोष्ठ के प्रधान महासचिव परमानंद मिश्र ने लोगों से अधिक से अधिक संख्या में समय पर कर्पूरी ठाकुर की जयंती समारोह में चलने का आह्वान किया। बैठक में उमेशचन्द्र झा, रितुरंजन झा, शाही मिश्र, अभय कुमार मिश्र, सचिन कुमार मिश्र, संजीव कुमार मिश्र आदि मौजूद थे।

Hindustan 24-01-2025

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में मीडिया सेंटर का उद्घाटन आज

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मीडिया सेंटर का उद्घाटन 24 जनवरी को कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भारत सरकार श्री भगीरथ चौधरी करेंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि इसके अलावा भारत रत्न श्री कर्पूरी ठाकुर की मूर्ति का अनावरण भी श्री चौधरी के कर कमलों से किया जाएगा। विश्वविद्यालय में हाल ही में किसान छात्रावास और एक पार्क का नामकरण भी कर्पूरी ठाकुर के नाम पर किया गया है।

विश्वविद्यालय का मीडिया सेंटर अत्याधुनिक तरीके से तैयार किया गया है जिसके अंतर्गत किसानों की सुविधा के लिए पूसा कम्युनिटी रेडियो की भी शुरुआत जल्दी ही की जायेगी। मीडिया सेंटर में आडियो वीडियो रिकॉर्डिंग की भी सुविधा है जो कृषि पत्रकारिता के छात्रों के लिए लैब का काम करेगी साथ ही किसानों को वैज्ञानिक जानकारी यू ट्यूब, फेसबुक तथा अन्य सोशल मीडिया माध्यम से उपलब्ध करवायेगी।

मीडिया सेंटर का उपयोग भविष्य में डिजिटल एग्रीकल्चर और डिजिटल लर्निंग के लिए भी किया जा सकेगा। मीडिया सेंटर डिस्टेंस लर्निंग के लिए भी उपयोगी साबित होगा। कम्युनिटी रेडियो के कार्यक्रम स्थानीय लोगों से जुड़े होंगे और उनके फीडबैक के आधार पर तय किये जायेंगे।

Rashtriya Sahara 24-01-2025

भास्कर 31/1/25 पेज 16

कृषि • विभिन्न तरह के कृषि यंत्र किसानों की खेतीबाड़ी को बनाते हैं लाभकारी, यंत्रों की जानकारी जरूरी

आधुनिक कृषि उपकरण व नई तकनीक से कम लागत में होगी अधिक आमदनी

भास्कर न्यूज | पूसा

आधुनिक कृषि उपकरण एवं नई नई कृषि तकनीकों से भारतीय किसानों को रूबरू होना बेहद जरूरी है। भारतीय किसान अगर इन तकनीकों से रूबरू नहीं होंगे तो वे दुनिया के अन्य देशों के किसानों से काफी पीछे छूट जाएंगे। तमाम तरह के कृषि उपकरणों की मदद से की जाने वाली खेती में कम समय और कम श्रम लगने के साथ खेती की लागत में भी काफी कमी आती है। ये जानकारी पूसा स्थित बोरोलॉग इंस्टिट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार जाट ने दी है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में कृषि के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी एवं कृषि तकनीकों को लेकर रोज नए-नए अविष्कार हो रहे हैं। भारतीय किसानों को भी इन नई-नई प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों को जानना तथा उसे प्रयोग में लाकर खेती को लाभकारी बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अगर किसानों को इन तकनीकों की जानकारी नहीं होगी तो वे जलवायु परिवर्तन के इस दौर में अपने कृषि में सुधार नहीं ला पाएंगे। नतीजतन उन्हें साल दर साल भारी नुकसान ही उठाना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि कृषि को फायदेमंद और लाभकारी बनाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों और एग्रीकल्चर से जुड़े इंजीनियरों ने हाल के कुछ वर्षों में ऐसे सैकड़ो कृषि यंत्र और उपकरण विकसित किये गए जो किसानों की खेती को काफी सरल और लाभकारी बनाने का काम करते है। उन्होंने कहा कि कंबाइन हार्वेस्टर, हैप्पी सीडर, जीरो टिल, सुपर सीडर, मल्चर, स्ट्रॉबेलर आदि ऐसे कई कृषि उपकरण है जिसके माध्यम से किसान आज खेती को काफी कम समय, कम श्रम और कम लागत में संपन्न कर खेती को लाभकारी बना रहे है। उन्होंने बताया कि वे देश और खासकर बिहार के किसानों को पूरे जनवरी माह के दौरान अलग अलग दिनों में विभिन्न कृषि उपकरण, उसके उपयोग के तरीके एवं उससे होने वाले फायदों के बारे में बताएंगे। इस कड़ी में आज वे किसानों को कंबाइन हार्वेस्टर मशीन के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे।

सलाह : कृषि वैज्ञानिकों की मदद से किसान करें खेती

जीरो टिलेज मशीन।

जीरो टिलेज तकनीक से बुआई किसानों के लिए फायदेमंद, इससे उपज अधिक होगी

बीसा हेड ने बताया कि जीरो टिलेज तकनीक के इस्तेमाल से मिट्टी की गुणवत्ता बेहतर होती है। वहीं इस तकनीक से किसानों का समय और पैसों की बचत दोनो होती है। जीरो टिलेज के फायदों पर गौर करें तो इससे मिट्टी का कटाव कम होता हैं। मिट्टी में पोषक तत्वों का चक्रण बेहतर होता हैं। मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ धारण क्षमता बढ़ती है। मिट्टी जैविक रूप से ज्यादा लचीली और उपजाऊ होती है। मिट्टी में जल घुसपैठ क्षमता बढ़ती हैं। यह तकनीक खरपतवारों को भी नियंत्रित करता है। इसके अलावे भी जीरो टिलेज तकनीक के कई फायदे हैं।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन से समय व मजदूरों की बचत

बीसा के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार जाट ने बताया कि कृषि कंबाइन हार्वेस्टर मशीन एक बहुमुखी मशीन है। इससे एक ही साथ में फसलों की कटाई और खेतों की सफाई दोनों काम को एक साथ में किया जाता है। इस मशीन की मदद से किसान धान, गेहूं, सोयाबीन, सरसों आदि फसलों की कटाई और खेतों की सफाई दोनों कार्यों को कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इस मशीन से फसलों की कटाई करने पर समय और श्रम की बचत होने के साथ खेती की लागत में काफी कमी आती है। यह मशीन कटाई के दौरान स्प्रेडर की मदद से फसल के निचले हिस्से यानी फसलों के पराली को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर खेतों में बिखेर देती है। छोटे छोटे टुकड़े में कटे फसल के अवशेष खेतों की मिट्टी में मिलकर सड़ जाते है और कंपोस्ट का रूप ले लेते है। इतना ही नहीं यह मशीन तेज हवाओं और बारिश से गिरने वाली फसल को भी आसानी से काट लेती है। इस मशीन की मदद से काटे गए फसल का उपयोग बीज के रूप में भी किया जा सकता है।

भास्कर 31/1/25 पेज 14

सरसों की प्रभेद डीआरएमआर-150-35 का कृषि वैज्ञानिकों ने किया निरीक्षण

कृषक सहभागिता कार्यक्रम को लेकर विभिन्न गांवों का किया दौरा

सिटीरिपोर्टर | समस्तीपुर

कृषक सहभागिता कार्यक्रम के अंतर्गत जिले के विभिन्न गांवों में समथु फार्मर्स प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड द्वारा लगाई गई सरसो की उन्नत प्रभेद, अंतर्गत -150 - 35 (भारतपुर, राजस्थान) फसल का निरीक्षण डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पूसा के वरीय कृषि वैज्ञानिकों के समूह ने विभिन्न गांवों का दौरा किया। प्रधान कृषि वैज्ञानिक डॉ राजेश कुमार, डॉ विक्रम भर्ती, डॉ चंद्र शेखर चौधरी ने फसल निरीक्षण के बाद कहा कि इस फसल के उन्नत बीज और अच्छी देख रेख के कारण अत्यधिक उत्पादन होने की संभावना है। इससे होने वाले उत्पादित फसल 68-72 रुपए प्रतिकिलो में बेची जाएगी, जिससे किसानों की आमदनी में कई गुणा बढ़ोतरी होगा। उन्होंने फसल में लगने वाले रोगों का अवलोकन किया। कुछ नमूना (सैंपल) अपने साथ ले गए जिसका लैब में निरीक्षण के उपरांत किसानों को अगले फसल के लिए होने वाली फसल रोग से बचने की सलाह देंगे। आलमपुर कोदरिया, बेलसंडी, भगवानपुर देसुआ, मुरियारो, जितवारपुर का दौरा किया।

खेत में लगी सरसों की फसल को देखते वैज्ञानिक व किसान।

दैनिक जागरण 31/1/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा दो फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम शुष्क व आसमान साफ रहने का अनुमान है। सुबह के समय धुंध छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री वृद्धि होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
31 जनवरी	20.2	10.5
01 फरवरी	21.0	11.0
	दरभंगा	
31 जनवरी	21.0	11.0
01 फरवरी	22.0	11.5
	पटना	
31 जनवरी	23	12
01 फरवरी	23	12

· डिग्री सेल्सियस में